कविता-समय

(पाथर पर दूभि, समवेत स्वरक आगू, सङोर, नागफेनी
कविता-संग्रहक समेकित संकलन)

रमेश

नवारम्भ
मधुबनी/पटना

ऑनलाइन बुक स्टोर **www.navarambh.com** पर पुस्तक उपलब्ध।

ISBN : 978-81-943052-6-2

कविता-समय
(पाथर पर दूभि, समवेत स्वरक आगू, सङोर, नागफेनी
कविता-संग्रहक समेकित संकलन)

© माला झा

प्रथम संस्करण : 2020
मूल्य : 300 रु.

आवरण : साभार

प्रकाशक
नवारम्भ
मधुबनी : श्री भवन, वार्ड न.-2,
निकट राम-जानकी मन्दिर, बिहार- 847211
पटना : 63, एम.आई.जी.
हनुमान नगर, पिन-800020
Email : navarambhprakashan@gmail.com
मो॰- 09304349384

मुद्रक
आर. के. ऑफसेट प्रोसेस
नवीन शाहदरा, दिल्ली

KAVITA-SAMAY
(A Collection of 4 Maithili Poetry collections) By **Ramesh**
First Edition : 2020, Price : Rs 300/-

मिथिला समाज
मैथिली भाषा आ साहित्य/
मिथिलाक सर्वजन हेतु

—रमेश

पाथर पर दूभि

कविता-क्रम

पाथर पर दूभि

7 : मनुक्खक सृष्टि
11 : अन्तर्सम्बन्ध
12 : सूर्यमुखीक पुंकेसर पर परागकणक अविरल संरचना होइए
14 : लोहक मनुक्ख
16 : सदानीरा-तट पर किलोल करैत पंछीक झुण्ड
18 : इति खग्रास-कथा अथ उग्रास-कथा
21 : आकांक्षा
24 : बाबा गीत
26 : प्रश्नोत्तरी
29 : दिशांश लागल उका-पतङ
32 : मिथिलामे बीसम शताब्दी
35 : गाम
36 : बजार
37 : कोइली दाइ

कोसी घाटी सभ्यता

41 : कोसी-गाथा
44 : कोसी-कथा
47 : कोसीक तारांकित प्रश्न
49 : कोसी-लोक
50 : कोसी-सरकार
51 : कोसी-गीत
53 : कोसीक कागत के नैय्या
55 : कोसी-भगइत
58 : कोसी-घाटी सभ्यता
66 : आदिकथा

67 : ओइ पार : अइ पार
68 : चरित्र
69 : मरसीया
72 : कोसीकनहाक आम बात, कोसिकनहाक खास बात

मनुक्खक सृष्टि

सृष्टिकर्त्ता स' छीनि लेल जैत सृजनक दायित्व। पुरुषारथमे विलीन भ' जायत ब्रह्माण्डक सभ आसंग। मनुक्ख बनि जैत मनुक्खक गढ़निहार चाक-पंडित।
अद्भुत विडंबना!

डार्विनक बानर आ भेड़ीक प्रतिकृति आइ न्यूयार्क सुन्दरीक कोरामे खेलाइए। सामूहिक नियोग स' निर्मित सप्तशतीक दुर्गा आइ परखनलीमे निषेचित भ' कलकत्ताक शक्तिभूमि पर अवतरित भ' चुकल छथि।
आब मनुक्खे बनाओत मनुक्खक प्रतिरूप।
जखने रोबोट आ कम्प्यूटरक सहवास हैत प्रयोगशालामे, परखनलीक कएटा दुर्गा कलकत्ताक लेक गार्डेन्समे कर' लगतीह जल-विहार।
अथवा रज आ वीर्य-बैंक स' कीनि क' एक-एक कण, पैंच
बा बन्हकी ल' लेल जैत कोखि। चौबिस पीढ़ीक जीन जे अमीबा-प्रोटोजोआ जकाँ ढङरियायल रहैए, आकार ग्रहण कर' लागत। मालामे लुधिकि क' नर्वे लाख मानवी-प्रतिकृति ठाढ़ भ' क'
टुकुर-टुकुर ताक' लागत गुण-सूत्रक मिलान हेतु, साहित्य दिस।

प्रतिकृतिक प्रकृति-कामायनी मे रूपान्तरण

यमराज स' एकटा प्राण मांगि आनब आ प्रतिकृतिक प्राण-प्रतिष्ठा क' क' तकरा बनैब प्रकृति-कामायनी। कामांग-निर्मित आ संवेदना-संचार लेल रतिक आवाहन करब। कामरूप-कामाख्या स' योनिकुण्ड पैंच लेल जा सकैए। शिवमंदिर स' जलढ़री आनल जैत। किसलयक झंखार स' प्रकृति-कामायनी के पहिरा देबनि हरियर कञ्च पटोर। कचनारक पहुँची, भालसरिक डरकस आ सिङरहारक गजराबला जूड़ा झक-झक

करतनि, त' तीसीक कर्णफूल फबतनि खूबे, प्रकृति-कामायनी के। साक्षात् वनदेवी के आमंत्रित करबनि संयोग-श्रृंगारक सृष्टि लेल। आँखि त' भाइ आमक फाँड़ा सन-सन हेतनि। पुतली बैसेबाक लेल बेलनोती-बेलतोड़ी कर' पड़त त' क' लेब। गालमे कमलपत्रीक उपयोग करबै आ कुचयुगमे थलकमल ठीक रहतै। नख-शिख रंगि क' नीवी-बन्ध विद्यापति अपने हाथें देथिन। मान आ अभिसारक बीजमंत्र वैह सिखा देथिन प्रकृति-कामायनी कें। बेसी अलक-तिलक त' मना केने छथि विद्यापति।

मुदा कालिदास स' की लेल जाय?
...हुनकर नायिकाक मेघ-कुन्तल केशराशि ल' सकै छी।
मेघदूतक उपयोग पुरुष के मिलन-सन्देश पठेबा लेल क' ली-सेहो संभव। बाजामे पपिहाक तानपूरा पृष्ठभूमिमे रहय आ झिंगुरक रसनचौकी जयदेवक अभिसार-पद गाबय। बीच-बीचमे कोइलीक तान बसुली बनय। अभिसार हेतु पूर्णिमाक दिन तकाओल जाय, जाहि स' हृदयमे प्रेमभावक जुआरि...अनवरत आ चिरंतन...उठैत रहय। तखन फेर प्रकृति-कामायनी कें लाज लजबिज्जी स' लेब' पड़तनि।
सर्वांगमे सौंदर्य आ संवेदना आम्रपाली वा मीनाक्षी स' ल' लेतीह। लटका-झटका बरू उर्वशी आ मेनका स' ल' लेती कनेक। आ शेष बाँचल सिङार-पेटार लेल जयदेवक पद वा ज्योतिरीश्वर ठाकुरक नायिका-वर्णनावला कल्लोलक भरोसें निचैन रहती प्रकृति-कामायनी। जीवन आ परिवेश के संगीतमय बनेवाक लेल लोचनक रागतरंगिणी छन्हिएँ आ चेतनाक सभ आयाम फ्रायड आ ॲरविन्दो बुझाइए देने छथिन।

प्रतिकृतिक पुरुष-रूपान्तरण

प्रतिकृतिक प्राकृतिकरणक उपरान्त मनुक्ख बनाओत पुरुषक प्रतिरूप आ तकर प्राण-प्रतिष्ठामे दिन-राति एक क' देत साहित्य, विश्वकर्मा जकाँ।

पुरुष कें बिन्ध्याचल जकाँ पोरगर आ धौलागिरिक उन्नत छाती देबै। श्रीखण्ड चाननक सिल स' चिक्कन जाँघ बना क' ढाकाक मलमल जकाँ रोइयाँ बैसा देबनि। कानक कनैली कनैलेक फूलक ठीक हेतै।
नृत्यक शिक्षा नटराजे टा स' दिएबनि। विद्यापति केर कृष्ण आ तुलसीक राम दुनूक उदात्तता व्यक्तित्वमे औतनि। कामदेवक काया-प्रवेश शंकराचार्य जकाँ करा देबनि। प्रेम शकुन्तलावला आ रासलीला कृष्णेवला ठीक रहतनि। आ शिवलिंग त' पुरुषत्वक प्रतीक-स्वरूप रहबे करतनि। आत्मविश्वास आ धीरोदात्तता नचिकेता स' मांगि आनब। शौर्य आ पराक्रम लेल विक्रमादित्यक उपमान अछिए। मोंछ कर्णवला ल' लेताह। विद्वत्ता वेदव्यासेवला ठीक रहतनि। करुणा भादवक इजोरिया, परित्यक्ता नायिका आदि स' ल' सकै छथि। संवेदना दूभि परहक ओसबुन्द स' ल' क' मानस-मन्दिर के सिक्त क' लेताह। चरित्रक निष्कलुषता कुणालवला देवनि आ वस्त्रमे वासन्ती-किसलयक परिधान पहिरा देबनि। नन्दन कानन के दोपटा बना क' लेपटा देबनि आ मिथिला कें पाग बना लेताह। अंग-अंगमे काश्मीर गहि लेताह। एतेक भेलाक बाद भँवराक सुरमे सुर मिला क' ई पुरुष अपन प्रकृति-कामायनीक प्रति राग-विभोर आ राग-व्यग्रता गुनगुनबैत आफन तोड़' लगताह—
कण्टक माँझ कुसुम परगास, भँवर विकल नहिं पाबय पास...

ई पुरुष रुसो जकाँ प्रकृति-प्रेमी हेताह। हिनका भूख लगतनि मार्क्स जकाँ आ कामेच्छा फ्रायड जकाँ। हिनकर सन्त-स्वभाव बुद्धत्वक सीमा टपत। ई अघोड़ी जकाँ घृणा-विजय करताह आ विदेह जकाँ दुष्टभावक शमन करताह। मानवीय-स्वभावक विकृतिवला लॉक-हॉब्सक सिद्धान्त स' दूरे रखबनि हिनका। अन्यथा प्रतिकृतिक पौरुषीकरणक उद्देश्ये, विज्ञान जकाँ ध्वंसमय भ' जायत।

ई पुरुष समताक स्तर पर दाम्पत्य भोगताह आ प्रकृति-कामायनीक संवेदना स' सराबोर रहताह। कु-प्रवृत्तिक शमन हेतु कृष्णेय, वैदेह, पातंजलि आ अरविन्द योगसूत्र ग्रहण क' सकैत छथि। अपन सम्यक् समाजीकरण हेतु एकटा वर्गविहीन परिवेश स्वयं निर्मित करताह ई

पुरुष। जँ प्रतिकृति-निर्माणक चलनसारि भइये टा गेल, त' प्रतिकृतिक प्रकृति-कामायनी आ पुरुषमे एहेन रूपान्तरण हेतु, प्रतिबद्ध अछि आजुक साहित्य।

•

अन्तर्सम्बन्ध

जखन-जखन संसद-भवन दलाल-स्ट्रीटक करैए चर्चा, शेयर-सूचकांक भ' जाइए-एक-सँ-एकैस। मूल्य-तालिका पर उठि जाइए अरब-सागरक जुआरि। इथोपियाक नरकंकाल गाम-शहरमे बूल' लगैए-अष्टावक्र-अप्टावक्र। आ भनसाघर स' स्नान-घर धरि, प्रेतनी जकाँ, बजार ठुनक' लगैए।

जखन-जखन पछवा हवा आ उच्च तापमान आक्रान्त करैए गाम-नगर कें, कोनो पाश्चात्य-सुन्दरीक गालक भूर बनि जाइए-रौदी मरड़क हाफक जेबी वा मार्चक बजटमे।

जखन-जखन कोनो नवकी कम्पनीक असंख्य शेयर अट्टाहास करैए डायनासोर जकाँ, मायावी पर्दा पर बम फूट' लगैए करिश्मा कपूरक ओढ़नी स' आ माइकेल जैक्शन अपना पोन पर तबला पीट' लगैए डम्फा जकाँ। निर्वस्त्र सूर्य-स्नान स' जुहू-बीच आ गोआ-बीच नेहाल भ' उठैए।

जखन-जखन विधानसभा दण्ड पेलैए मुसरी जकाँ, मुद्रास्फीति फूलि जाइए ढ़ाबुस जकाँ आ मांग-पूर्तिक सरल-रेखा बनि जाइए मूल्य-तालिकाक वक्ररेखा। तखन-तखन जम' लगैए साँप-सीढ़ी क लूडो-लूडो। गहूम कें गीड़ि जाइए साँप आ मूल्य सीढ़ी चढ़ि क' पहुँचि जाइए स्वर्गक बजार।

जखन-जखन उदार होइए डॉलर-पौण्ड, कोनो फुलाइत भूखण्डक नाँ पड़ैए तेसर दुनियाँ आ ओकर माथ पर चमचमाय लगैए विश्व-सुन्दरीक राजमुकुट। ओकर ऐंठल अँतड़ी के कैडबरी चाट' लगैए आ कपोतग्रीवा कें चिलगम चूस' लगैए।
जखन-जखन...जखन-जखन... जखन-जखन...
एक आवश्यक सूचनाः उपर्युक्त
सभ वक्तव्य कोनो टा संयोग नहि थिक।

●

सूर्यमुखीक पुंकेसर पर परागकणक अविरल संरचना होइए

रामकेसौर मे रसक परिपाक हैब बन्न नै होइए, सूर्जक पिरथी पर उतरला स'। आ ने रहुआ-बोआड़क डर स' मारा-पोठीक प्रजनन बन्न होइए जलकरमे। ठेङीक डर स' माल-जाल सिताहल घास पर थुथून रगड़ब नै छोड़ि दैए आ महिंसा-जोंक गोझनौटमे पैसि जयबाक डर स' मनतोड़िया करहड़ उखाड़ब नै छोड़ि दैए, दनहिया पोखरिक भरि डाँड़ पानिमे।

चहड़ा-चिड़ैक लोलक डर स' सूर्यमुखीक पुंकेसरमे परागकणक संरचना नै होइए बन्न। तहिना अपुआङ आ हाड़ाक फोंकैब आ लतरब नहि भ' सकैए बन्न, कचिया हाँसूक आदंक स'। आ ने जोभ जड़िआयव छोड़ि देत खुरपीक रूआब स'। धथुर आ कनैलक फड़मे जँ माहुर भरब बन्न नै भेलए, त' गुल्लड़िक धड़, बकरीक थन वा मधुमाछीक छत्तोमे अमृत-रसक सोह कहाँ कहियो सुखाइत अछि?
मानल जे गुलभंटाक खेल बन्न नै भेलए संसद-मार्गमे, त' करबीरोक पात फटर-फटर बाजब कहाँ छोड़लक-ए गेनाइक हाथ मे? किंवा अशोक राजपथ के लक्ष्य क' बरहन्डीक सटका वा गुलेंती उसाहब कहाँ छोड़लनिहें राजीन्दर कामति? अमतीक काँट पछिलो वेर लागल रहनि बाबू-भैयाक पदनधोतक ढेकामे आ हुनकर साँचीक डर स' चौरकाँटी पड़ा नै गेल रहय इसकुल परहक बूथ स'?
मोथा आ चिचोड़क गर्भाशय मे, एहू बेर जीवन-रस भरि गेलए छपनियाँ चौड़ी मे! आ छहरक कातक मोइनमे बकोध्यानम केर अछैतहुँ चन्नी माछ कें जलविहार करैत आइयो देखलनिहें केदार भाइ आ नारायणजी।

ओना रेडियोधर्मिताक विकीरणक लघु-शंका पसरल अछि नागासाकीमे, तैओ समाचार अछि जे ओतय राति क' छाउरक ढेरीक बच्चादानी मे होइत अछि गर्भाधान आ भिनसर क' टॉरपीडो सन-सन पेंपी आ

अँखुआक प्रसव भेल करैए सभदिन। सुनै छी, हिरोशिमामे मृत्युदर स' कतओक बेशी अछि जन्मदर।
आइयो भिनसरे बाड़ीमे देखल गेलए-जे हरियर कञ्च पात
सूर्जकिरण सँ विधिवत् संभोग केलक अछि, कारण, रचनाचक्र कोनो प्रायोजित नियोग नहि, अपितु एकटा नैसर्गिक प्रक्रिया थिक, जकरा नै छै ककरो डर, सम्पूर्ण ब्रह्माण्डमे।

•

लोहक मनुक्ख

गहूमक हरियरी आ ठोर परहक मुसुकी हेरा जैत, कारी खकस्याह जहरदानाक संताप स'। पुबारि बाधक चरिकठबा मे ठाढ़ धू पर बीट करत चहड़ा-चिड़ै। रामनरैनक टी.भी. स'
निकलल लोहक मनुक्ख जजात कें करत लसौना-लसौना।
मोड़ामे राखल पुरना बासमती, दुमूँही कोठीक अरबा चानन-चूड़, घैलमे मूनल कतरनी चूड़ा आ परसौतीक डँड़बन्हा सुठौरा झोड़ि-झाड़ि क' चलि देत लोहक मनुक्ख, डॉलर झनझनबैत।
सुरड़ि-सुरड़ि क' भकोसि लेत बाकसक पात आ श्याम-तुलसी। कड़कड़ा क' चिबा जैत नीमक छाल आ जाफड़-हरीड़। नागफेंची गुरीच के जड़ी सुंघा क' राखि लेत भिड़ियाक'/कम्प्यूटरक फ्लॉपीमे लोहक मनुक्ख। टांङि लेत गिदड़माड़ा जकाँ कनहा पर, मँछगिद्धी आ हड़हाड़ा, बेङ आ लुक्खी— प्रशोधन लेल। घोड़न आ चाली केर बनाओत अँचार आ प्रोटीन-पोडर। पेटेन्ट क' क' बेचत मेक्सिको आ महिषीमे। मटर-केराब आ मकइक मैग्गी फँक्काक-फँक्का फँकैत, अफ्रीकाक मनुक्ख-सोखा गाछ जकाँ, रहड़ियाक पुष्टदाना आ मोहली-सौंफक पीरा परागकण भकोसैत, पारासूट तानि क' उड़ि जैत अड़ना-पाड़ा।

प्रात भेने रामनरैनक टी.भी. मे गुराड़त जखने उदारतापूर्वक अपन आँखि, कि लेसर किरण-पुञ्ज स' गुजरात-आसामक तेलकूप धधाय लागत धू-धू।
भूमण्डल दिस दोसर आँखि नचौत त' सम्मोहनक रासायनिक मरछाउर छिटा जैत, बिश्वभरिक खञ्जन नयनमे।
आम आ इल्वीक मोजर तूब' लागत। झरकबाहि लागल, एकमस्सू गर्भ जकाँ, टुकड़ी-टुकड़ी, बुन्द-बुन्द...
गाम-नगर बेचैन अछि। संसद हमर निचैन अछि। संसद थिक भङतराह भोलानाथ, जकर गनेश-परिकरमा क' क' लोहक मनुक्ख बनि जैत

सब स' बेशी बुधियार-पूत। बतहा हाथी जकाँ झूमि क' ओ घोषणा करत, ब्रह्माण्डक निस्सीमताक अंतक। प्रकृतिक स्नेहवात्सल्य आ सृजन-धर्मिताक अंतक।

रत्नगर्भाक गर्भपातक करत शंखनाद। इतिहास आ सभ्यताक अंतक करत घोषणा लोहक मनुक्ख, फूको-शैलीमे पाञ्चजन्य फूकि क'।

भ' रहल छै प्रतीक्षा, नोर-आप्लावित पावस-सत्रक। शून्यपीड़ित शून्यकालक। प्रश्न-पीड़ित प्रश्नकालक। ध्यानसिंहक ध्यानाकर्षण प्रस्तावक।

मुदा लोक जनैए आश्वासन आ निवेदनक अर्थ। प्रश्न आ ध्यानाकर्षण, नियति आ भविष्यवाणी, वर्त्तमान आ भविष्य। लोक चिन्हैए, सात समुद्र पारक रिमोटक बुट्टम पर राखल तर्जनी-अनामिकाक चम-चम चमकैत नगीना।

•

सदानीरा-तट पर किलोल करैत पंछीक झुण्ड

आइ चिनगोलाक पर्याय बनल चन्द्रमाक शीतलता डुमरीक फूल भ' गेल अछि। सूर्यक संस्कार आबि गेल अछि कुमुदिनी आ कमलक फूलमे। सिंगरहारक कोखिमे भारहीन स्वभावक हाइड्रोजन स' निर्माण भ' रहल अछि अनगनित सूर्यक। तीरा आ गेना-समाजक तानी-भरनीमे अन्तर्निहित तनावक संलयन भ' रहल अछि, हीलियम जकाँ।

पृथ्वीक-संवेदनाक वायुमंडल मे विचारधाराक
संघर्षक उड़न-तश्तरी यत्र-कुत्र उड़िया रहल अछि। समरसताक
ओजोनमंडलमे चालनि जकाँ झकझकाइत अनगनित भूर,
प्रेमक तापमानक असंतुलनक फेकैत अछि ज्योतिपुञ्ज।

रहस्यमय बरमूडा-त्रिकोण बनल असंवेद्य-समाज कएटा प्रेमकथा कें गीड़ि गेल अछि, जहाज-सदृश। अन्तरिक्षक अनन्त आङन मे विखाह-गैसक करिया-भूर गीड़ि गेल अछि कए-कए
आकाश-गंगाकें, एहि पचास वर्षक विधवा-उत्सर्ग श्राद्धकर्मक
महाभोजमे। अन्तरिक्षक लाख-लाख प्रकाश वर्ष स'
पृथ्वीक एक पल कए गुणा बेशी भारी अछि, तकर प्रमाण थिक
दुखनी मसोमातक पाँचो ज्ञानेन्द्रिय।

जाहि भूखण्डमे एखनहुँ अरुन्धतीक जीवनक नाव लेल दिशासूचक-यंत्रक
काज ध्रुवतारे करैत अछि, ततय न्यायक डंडी-तराजू पर
एखनहुँ सप्तर्षि तौलैत छथि-एक पलड़ा पर भैंसुरक गीता-रबैण
आ दोसर पलड़ा पर मसोमात भावहुक तीनमस्सू-पेटक ओजन।

परिवार नामक परमाणु-प्रयोगशालामे, सुखभोगक यूरेनियम आ महत्वाकांक्षाक थोरियम पर, नोर आ

संवेदनाक कारुणिक-गाथाक प्रहार स', स्वप्निल आ स्नेहिल-सम्बन्धक
परमाणविक-विखण्डन द्रष्टव्य अछि बरमहल।
एहने परमाणु-बमक शान्तिपूर्ण उपयोग लेल युग-युगान्तर
स' सुरक्षाक नाम पर निर्मित भेल अछि घर-घरमे/
जैसलमेरक बालुका-राशिक अट्टालिका। परमाणविक-हरियरीक
स्वप्न देखबैत अम्लवर्षा, अहिल्या कें सुख-संवेदनाक
स्वप्न देखबैत इन्द्रक वीर्यवर्षा जकाँ, एकटा खतरनाक
सम्मोहन थिक—से बात ने तँ उत्तरी-ध्रुवक पेंगुइन-पंछी
बुझैत अछि आ ने दक्षिणी-ध्रुवक पड़बा।
सदानीराक तट पर किलोल करैत पंछीक झुण्ड जाहि
भुवकंफक पूर्वाभास दैत अछि, तकर तीव्रता रिक्टर-पैमाना
पर अनन्त आ प्रश्नवाचक चेन्ह अछि।

ओना त' सुगरकोना आ ईशान-कोण स' उठल
मेघक आसन्न परलयक पूर्वाभास चुट्टीधारी कें भैए जाइ छै।
तखन फेर दिनभरि इन्द्रिय-निग्रहक स्वांग रचैत आ
राति कें वज्रपातक शैली मे वीर्यपात
करैत-फूलक संवेदना स' निर्लिप्त काँट-समाज कें
ओहि आसन्न परलयक पूर्वाभास हो अथवा नहिं?

•

इति खग्रास-कथा : अथ उग्रास-कथा

हरियर कञ्च पटोर पहिरैए माघे-माघे पछबारि बाध।
तीसीक उवाइल-साड़ीमे बबन्ना-चौड़ी छमकी बहुरिया जकाँ
मनोरम छटा छिटकबैए। मसुरी बनैए रहड़िया छिम्मरि
फागुने-फागुन। गस्सल-गस्सल बाँहि आ चहक गाछ सन-सन
जाँघ, उतफाल होइए डीह-बाधमे सभ साल। मुदा सभ साल
करड़ीक थम जकाँ दयनीय बनल फूसक एकचारी पर।
सिकमी-बङलीक सितुआ चोख भ' जाइए-अगहन, फागुन आ बैसक्खामे।

बलानक दुनू छहरक पेटक जमीन पुरहिया-महींसक ओद्र जकाँ
दरकैए सभ साल/बाढ़निबला मोंछ लेल धनिसन।
कोसीक दुनू छहरक पेटमे मोइनि फूटि जाय घरे-घर,
सिकमी-बङली लेखें धनिसन। धेमुरा-बागमतीक
आर-पारक जीवन कोल्हुमे पेरल सिट्ठी भ' जाइए,
मोहु-तेल-पोसल हरौथक लाठी लेखें धनिसन।
राटन परहक कुसियार बनवाक तृष्णामे, झौआ-कास-पटेर
बनैए, क्योट-टोलीक-जुआनी, रामनामा चादरि लेखें धनिसन।

सैह हरौथक लाठी जखन कपिली-गैया के
लोड़िकाही टोल स' हाँकि क' अपना बथान पर अनैए, तखन
बाढ़निवला मोंछमे मटिया-तेल, ढ़ोंढ़ीमे अलकतरा-तेल
आ तड़बामे तारपीनक तेल लाग' लगैए। रामनामा चादरि तर झाँपल
बगुलीमे हाथ जखन माला खट-खट सीताराम करैए,
तखन ठोर प्रायः सूदिक हिसाब करैत रहैए, सिकमी बङली पर।
बगुलीमे टोलक सोहाग मथैत हाथक सामने स' जखन,
हड़खाड़ा आगू बढ़ैए, त' बगुलीबला हाथ आँखि तरेड़ि क'
ओकर कनहा पर स' पालो उतारि क' अपना जिरात दिस रोमि
दैए—चौकी संग।

ओही रामनामा ओढ़ने कूड़ि आँखि कें जखन
लोरिकाही-टोलक टालि 'ठांइ' स' फोड़ि दैए, त' चौकी
पेना आ पालो-हरखाड़ा उत्साह स' रमक' लगैए, घरमुहाँ
बड़द जकाँ।
बाधमे एकटा टोभल बदामक अँकुरा जखन
आसमान फाड़बाक ब्योंतमे उद्यत होइए, कि रामनामा
ओढ़ने ठेहुन आ डाँड़, कनकनी स' टाहि मार' लगैए खाट पर।
सकुरीवालीक आँचर स' बहैत बसातक भय स' सेरके पसेरी
आ धारा के मन बनबैत तराजूक तरछा, हीलम-डोल कर' लगैए।

चारिम आश्रमक बाना धेने आ दोसर आश्रमक हथरस लैत,
बगुलीमे भरो टोलक सोहाग मथैत आङुर, एक दिन
करौआ-बेमारी स' जखन गरड़' लगैए, त' पितोहियाक
माला कुटिल अट्टहास करैए। जाहि कम्मल के ओढ़ि क'
घी पीने छल रामनामा, से एकदिनक बिरड़ोमे आकास
मे उड़िया जाइए आ घी गेरुआ-वस्त्र के फाड़ि क'
खाटक तरमे बह' लगैए—माँछी-भोज्य बनि।

तहिया एकादशीक अइंठल अँतड़ी अपने बूझि जाइए, कम्मल
ओढ़ि क' घी पीबाक रहस्य। एहना स्थितिमे गंगाजलो
घीबे जकाँ सुजनी फाड़ि क' बह' लगैए। आ गौदानवाली
गाइक नाङरिमे जमल छेरकट पर भिनभिनाइत
माँछी, अपन इष्ट-मंत्रक जाप करैए—'नैनं छिदन्ति शास्त्राणि,
नैनं दहति पावकः...

फेर त' मोहु-तेल पोसल हरथुआ-लाठी राकसक भ्रम दैए
शमशानमे। बगुलीमे सोहाग नै, भेराड़ी मथाइए।
दागल बच्छाक खूड़ स' रामनामा लतखुर्दनि होइए साड़ा लग।
ठुट्ठ श्याम-तुलसीक किसलय रामनामाक विधवाक

मधुमेहक बनैए दवाइ। गौदानक गाइ बनलि रामनामाक
बेटी, डिरिऐल फिरैए नैहर स' सासुर', सासुर स' नैहर...,

तहिया गहन स' उग्रास भेल चन्द्रमा खल-खल हँसैए।
कुमारि बेली आ भालसरिक बत्तीसी स' झहर' लगैए
महमही आ बाध फेर-फेर पहिरैए हरियर कञ्च
पटोर।
तीसी फेर पहिरैए पीरा उवाइल साड़ी।
रहड़िया-छिम्मरि सन पुष्ट होइए मसुरी फेर।
आ आलपीन स' गाँथल ओढ़नी, भारतीक नूआ
जकाँ कर' चाहैए मिथिला मे, हावाक संग
अन्तरिक्ष-विहार।

•

आकांक्षा

बिज्झो होइते मुँह बाबि दैए अकास दिस
चीनीक पट्टा। भराड़ भ' जाइए अपस्याँत।
बीड़ाक पाँत होइए सनाथ खढ़िआन मे। आ
पुरइनिक पात बनि जाइए नादि, भोजघारामे।

धोतीक पेट बखारी बनि जाइए। डलनाक करछु
थाकि जाइए। मोंछक जीह सनसनाय लगैए,
रेजी चक्कू जकाँ। दाढ़ीक दाँत रभस' लगैए,
वरागतक जेबी जकाँ। दही मोंछमे लागि क'
भ' जाइए नेहाल। आ चीनीक तौला उझिल'
लगैए ओइलाक-ओइला मिठास। मर्दानगी,
बारिकक बुट्टी-बुट्टी चमकाब' लगैए-मोंछक
शान रखबाक लेल।

मुदा अङनाक जीह स' चूअैत रहैए पनिछक्का।
लहठीक पतौटी नै लगैए खढ़िआनमे आ
चन्द्रमा टिकुली बनि क' नै चमकैए पाँतमे।
कसमसाइत मोनक दफेदार बनि क' पहरामे
कड़े-कमान रहैए-पर्दाक टाट। पर्दाक टाट पर
लतरल पोरोक मोन अटेङल रहैए भोजघाराक
भराड़-घर पर। तुलसीक चौड़ा लेल, पारस
विरलेक संठाइए, भोजघारामे।

धोतीक लोटामे पैसल, अकासक ओस घोंटैत
रहैए-चमेलीक बड़ीक आकांक्षा। दलान जखन
अछिनरे क' क' ढेकरैत अछि त' अकास थरथरा
उठैए। लोटामे शिताइत गुलाबक आकांक्षा

के मोन पड़ै छै, जे जहिया ओ चन्द्रमा रहय,
भोजघारा स' अपना खोपामे खोंसि क' चोरौका
बड़ी राणा माइ लेल अनैत रहय। मुदा सुरुज
भैया थपरबैत रहै ओकरा तहियो।

मुदा मोन पड़ै छै मोंछ के, अङनाक आकांक्षा,
पात पर स' उठबा काल। निंघेंस ठुसा जाइए ,
लोटामे आ चौड़ क' बन्हा जाइए गमछामे।
अङना पहुँचला पर सलेगन भेल निघेंस,
आकांक्षाक ज्ञानेन्द्रिय के विचित्र स्वाद आ गन्ध
स' क' दैत अछि सकपंज।

धोती जखन मातल गजराज जकाँ गोराड़ रोपैए
दुआरि पर, लोटा आ गमछा स' वीभत्स-रस,
पौरुषक अहाङ जकाँ चूबैत अछि-उपकार भावें।
कए सहस्राब्दीक भूख स' पिताँट गउ माता
जकाँ, गुलाब-सुन्नरि आफन तोड़ै छथि,
सौंस बड़ीक स्वाद लेल।

हरियरी लेल अपस्याँत बाछी जकाँ निघेंस के
उघेसैत, बेली-चमेलीक आकांक्षा डिरिऐल
फिरैए-गमछा स' लोटा मे। लोटा स' गमछा मे।
आ बड़ी नुकायल फिरैए, भादवक चन्ना जकाँ।
मेघक अन्तहीन टिक्कड़क झोंझमे।

असगर डलनाक सोहनगर स्वाद लेल, गुलाबक
जीह स' आँखि मे आबि जाइए पानि। नरछि
क' रनिवास ध' लैत अछि अतृप्त आकांक्षा।
घरक भनभनी बसात बनि क' चौकठिक
पर्दा हिलाब' लगैए। दर्शनियाँमे असोथकित

बमरी जकाँ, एकटा कारुणिक आर्त्तनाद उठैए,
बेलौजक अतमा स’।
आ काटल गाछ जकाँ हहा क’ खसैए
अदहा गामक सह-भोजक आकांक्षा।
अतृप्त...अतृप्त...। अतृप्त... अतृप्त..

●

बाबा गीत

एक

तरौनी-पीड़ित। तरौनी-प्रेमी। बुद्ध-मूर्त्ति आ राहुल-सङी।
परम-हंस। ब्राह्मण-श्रमणक चोला-त्यागी। माँझ बयस बैरागी।
मठ-भंजक। स्तूप-प्रहारी। कंटकाकीर्ण वाट केर यात्री।
कंटक-शोधक। नेहातुर। व्याकुल-व्याकुल। बिगलित चिकुर।
चकित मुखमंडल। मिथिला-जातक। वरुण-पुत्र केर कथा बालु पर
चीछल। सोनक कौड़ी फेकि-फेकि क' झिटुका-गोटरस बीछल।

सिंहल-रूस बेदनाइत। नख स' शिखधरि कनकन बात।
गोधूलि-ऊषा ढहनाइत। ठाहर अप्पन ठाम। फेर वैह अहिबातक
पातिल। परिजन-पुरजन गाम। अप्पन गाम, सबहक गाम। सबहक
गाम, अप्पन गाम। कहियो नै अन्तिम प्रणाम। वैह तरु-वनी आ
द्वार-बंगा। धन बाबा, जे इज्जति-गमछा, नाम आ यशकेर
दोहरी अंगा। यायावर, अ-क्लान्त।
फक्कर? नै-नै। सनगर माघक मक्कर!
कबीर? हँ-हँ, अतमा खल-खल अबीर!
'निमूह-धन' केर सपना देखैत। ज्योति-तरंगित आँखि।
काया? नै-नै, विक्रमशिलाक खण्डहर।
घर-परिवारक माया? नै-नै, ज्ञान-पिपासु। ज्ञान-भिक्षु।
नालन्दाक प्रतीक।
त्रिपिटक-रमणा। शोषण-मुक्त समाजक कामना।
सुत्तपिटक केर सूक्ति-प्रचारक। मुक्ति-प्रसंगक मुक्ति-विचारक।
धम्मपिटक केर धर्मचक्रप्रवर्त्तक। अभिधम्मपिटक केर अभिज्ञानी।
'कियं चु धम्मे'क प्रश्नचेन्ह-उद्गाता। शोक अछैत अशोक
जन्मभरि। आपसिनवे, बहुकयाने, दया-दाने सोचये'क गाता।
शून्यवाद-प्रवर्त्तक नागार्जुन स' कतओक आगूक यात्री।

दू

ओ अज-क्रन्दन छल? नै, कालिदास रुदन छल। नै, आत्म-रुदन छल।
मोचरल ढट्ठा, ठुट्ठा धोती, आँखि बरैत, करेज जरैत।
मोहु-फूल तूबैत ठोर स'। सृष्टि-ओर स'। टप-टप-टप-टप।
प्रेम-रस, प्रेम-रस...
आबाल-बृद्ध-वनिता, —बाबा, बाबा!
बाबा निपत्ता—काशी-काबा!
बाहर-बाहर छलनामय बाबा! भीतर स' निर्मलिया बाबा!
चौधरी राजकमलिया बाबा!
परम सत्य स' भेंट, जिनगीक गेंठ। माया ठगिनी गै ठगिनी,
हम जानी। ठक्कन मिसर के अपन लोक मानी।
युग-युग धावित यात्री-बावा! मिथिला केर करपात्री बाबा।
लक्ष्मीनाथी। अघोड़-पंथी। दुःखमोचन-उग्रतारा ग्रंथी।
महिषी-त्यागी। तरु-वनी विरागी। योगिराज-वैदेह।
स्थितिप्रज्ञ। घर-घर व्यापी। गृहस्थ संन्यासी।
शंकर-खंडक। मंडन-मंडक। परंपरा-भंजक। वैचारिक प्रतिबद्ध।
साहित्यिक कटिबद्ध। मनुखत सूत्राबद्ध। चित्रकार जीवन-रसकेर।
(मिथिला-पेन्टिंग सन मनमोहक)। व्याख्याता, इतिहास-समाजक।
प्रकृति सन वैज्ञानिक। ज्ञानी कृष्ण, विराट् कार्मिक। तिल-तिल
नूतन मूसुकी। भभा-भभा क' हँसी-रुपैया। मार्क्सेय निष्णात।
बुद्ध-चरित सन धवल इजोरिया। निरगुनियाँ विख्यात।
अश्वघोष प्रख्यात। महापरिनिर्वाणी यात्री। मोक्षक मोह स' दूर।
कर्मचक्रप्रवर्त्तनी बाबा वैद्यनाथ।
हँ, नवतै तोहर खातिर सभदिन हमर माथ।

•

प्रश्नोत्तरी

प्रश्न : हरियल आ लालशर जकाँ विलुप्त होइत
नैतिकताक तलाशमे निकलल छी बिदेसरक
चरमे। सप्तकोसीक बिचली बलुआही दीयराक
काते-काते। भेटत मुदा अबस्स लालशर आ
हरियल। कने संग चलब इयार भाइ, मूल्य आ
आदर्शक शिकारमे?

उत्तर : नै भाइ! अहाँ भेल आउ! हम ता दूभि
परहक ओसबुन्द पर खेलौड़ करैत सूर्जकिरणक
प्रवृत्ति आ निवृति पर एकटा शोधपत्र
लिखि रहल छी, अमेरिकी जर्नल लेल। की?

प्रश्न : सुनू इयार भाइ सुनू! काल्हिएक गप्प थिक।
जहानाबादी छर्राक आदंक स' हमरा अङनइमे
राइ-बाइ भ' क' सिल्लीक झुण्ड खसल
आ पथार लागि गेल चहड़ाक लहासक।
बुझू त' अङनइ बनि गेल छपनियाँ चौड़ी। तकर
सौजनी आ जयवार भेलाह गिद्ध-समाज,
गिद्ध-समाज। अछिनरे क' क' ठेहुन-छावा
भेल आ एकार्णावा लागि गेल। तकरे जिगेसामे
आइ सिद्धार्थ नामक अतीत स' प्राचीन भेल
एकटा बालक आयल छथि। कने हुनकर
संवेदना स' भेंट कर' आयब, हमर अङनइमे इयार भाइ?

उत्तर : नः। हमरा कलाक सौन्दर्यशास्त्र आ
रूप-विधान पर प्रवचन हेतु जेवाक अछि
कैलिफोर्नियाँ इनभरटिसी आ बौद्ध-दर्शन पर

देबाक अछि लेक्चर हिन्देशियामे। माफ करू भाइ!

प्रश्न : सुनै जाउ भाइ लोकनि। आजुक जे
विचारगोष्ठी आयोजित अछि, तकर विचार-बिन्दु
निम्नवत् अछिः—

एक : बगेड़ीक रोइयाँ जकाँ नोचाइत नेहक संरक्षणमे
'सम्बन्ध' नामक समाजसेवी संस्थाक भूमिका।

दू : मुर्गा आ छागरक गरदनि बनल मानवाधिकारक संरक्षणमे
'मानवाधिकार आयोग' कें भेटल सफलताक प्रतिशतक
समीक्षा।

तीन : हमरा अङनामे पथार लागल सिल्लीक
सेवा-सुश्रूषामे रेड-क्रॉसक भूमिका।
कने भाँज पुरबै इयार भाइ!

उत्तर : केना हेतै भाइ? केना हेतै भाइ?
हम त' एखन अलंकार-शास्त्रक नव-उपमान
आ एगारहम रसक खोजमे सुकेशी नायिकाक
जुट्टी-गुम्फनमे निमग्न छी। तखन फेर दादुर,
मोर, पपीहा, संयोग-वियोग, अलक-तिलक,
नीवी-बन्ध पर निबन्ध लिखबाक छै। एकर
सबहक गौरव-गाथा आ माहात्म्य तँ स्वयंसिद्ध अछि।
जे किने से—माफ करू भाइ।

प्रश्न : हे इयार भाइ, कने सूनि लिय' भाइ!
मुड़ै जकाँ टन-टन टूटैत सम्बन्ध, सिकिया
लक-लक, मार गुल्ली फक-फक-ब्रान्ड काया
कोढ़िला जकाँ फोंकिला बनैत घरक खाम्ही
पनिसोखा द्वारा पानि जकाँ सोखल जाइत

नारी/आ कटहरक ढेङ जकाँ कोकनैत
जुआनीक जनगणना मे, करुणाक कागत/
ममताक मोसि/लाजक लेखिनी आ
राग-रागिनीक रोजगार ल' क' विदा भेल छी,
कने संग चलब इयार भाइ?

उत्तर : ओह! जनगणना-कर्मचारी के नौकरी-कहाँ
होइ छै? झाड़-झंखाड़ के कात करू।
कतरा-झाड़ सँ हुलकैत शोक-सम्बन्ध?
बाप रे बाप! दैव हौ दैव!

यक्ष : नित नूतन निर्मित शमशानमे के संग देत?
शमशान-बैराग्य आ वानप्रस्थमे के संग देत?
संन्यासक जबदाह शान्तिमे के संग देत?
थोभकल आ असहज गार्हस्थ्यमे के संग देत?
कतरा-झाड़ सँ निकलल सम्बन्धक, शवयात्रामे के संग देत?

धर्मराज : बाँचल एकटा मूल्य, लालशर जकाँ
हाकरोस करैत संवेदना
बगेड़ीक रोइयाँ जकाँ नोचाइत नेह
करुणाक कागत/ममताक मोसि/लाजक लेखिनी
राग-रागिनीक रोजगार
घवाह, मुदा बाँचल एकटा सिल्ली।

•

दिशांश लागल उका-पतङ

पहिने अहाँक भाव कें सेरा देत। फेर अहाँक स्वभाव कें बेरा देत। अपन संवेग के उठल्लू बना लेबाक उपदेश देत। मोम जकाँ घमैत संवेदना के बर्फ जकाँ जमा देत। चेतना के जड़ बनाक' गतिमानता के निघटा देत। अमावस्याक एक राति मे एन्टार्कटिका स' एकटा हिममानव चकमकाइत परमाणविक पनिडुब्बी स' आओत आ पर्यटन वा अनुसन्धानक बहन्ने अहाँ कें ल' जा क' हिमनदमे जीवाश्म बना क' गाड़ि देत। तहिया अहाँ हिममानव आ हिमसागर कें चीन्हिए क' की करब, श्री बदरी मिसर?

पहिने अहाँ के पाप-पुण्यक उनटा परिभाषा बुझौत, अपना ढंगे। फेर स्वर्ग-नरकक काल्पनिक झाँकी-दर्शनक व्यवस्था करत, अपना ढंगे। नामक महिमा रटा क' आ कीर्त्तनक झालि बजबा क' अहाँक जीवनक संगीत-संस्कार कें मन्द क' देत। मन्द क' देत अहाँक जीवनक तर्क-संस्कार कें।

देवदूतक बाना ध' क' अष्टयाम-कालमे ओ अहाँक गामक ब्रह्मस्थानमे उतरत आ अहाँक तर्कशक्ति के अन्धभक्तिक जहरसूइ स' सुन्न क' देत।

तखन अहाँक आगूमे एकटा दिशांश लागल उका-पतङ खसत जकरा अहाँ दैवी पुष्पक-विमान बूझब। अहाँ द्वारा देवदूतक सत्ता-स्वीकृत्योपरान्त ओ अहाँक जीवन्त शरीर कें नश्वर आ जगत् कें मिथ्या घोषित क' देत।

तहिया अहाँ कें जँ आत्माक अमरत्वक सुनटा अर्थ लगबो
करत, त' कोन उत्कीर्णा क' लेब पंडित कारी ठाकुर?

ओ कहत-हम अहाँक पोप, पैगम्बर, पंडा, पीड़ छी। हमरा पंथमे दीक्षित होउ। कबीर आ नानक दहोदिशिया छलाह।

ओ अणाचीक खोइयामे हफीम भरि क' अहाँ दिस सप्रेम तरहत्थी बढ़ाओत। अहाँ जखन ओकर पंथक जय-जयकार करैत रहब, अहाँक अँतड़ी कें भुक्खल चाली खोखरैत रहत आ अहाँक मुँह स' कुर्रा-कुर्रा लाल पानि छोटानागपुरक एसटेट-बोरिंग जकाँ खसैत रहत। स्वार्थक हफीम आ अतीन्द्रियताक चीलम जखन सेरड़ क' देत अहाँक संवेदना-प्रणाली कें— तखन अलकापुरीक परीबक रूप-यौवन के अहाँ कोन ज्ञानेन्द्रिय सँ भोगब-विख्यात किरतनियाँ पंडित रामनारायण झा?

पहिने तरेगन-युद्धक माला जपि क' अहाँक उत्तेजना के सय डिग्री सेल्सियस पर पहुँचा देत। अहाँ दुनू सहोदर के पितिऔत बना देत। अहाँ दुनू भैयारी जखने एक-दोसर सँ ओलि सधेबाक ब्योंत मे लागल रहब-ओ अपन मनोनुकूल समझौता लेल एकटा रोबोट कें शान्तिदूत बनाक' पठाओत। आ अपन चोर उपग्रह द्वारा अहाँक रणनीति आ नक्शा चोरा लेत। फेर त' हथियार कम्प्यूटर आ रोबोट ओकर भ' जैत। अहाँक माथ, जीह आ कलम ओकर भ' जैत। तखन ओ अहाँक बेटी कें अपन देसक नागरिक बना क' अन्तरक्षि-यात्राक कल्पनाक उन्माद सँ बोरि देत। अहाँ विकास-दर-वृद्धि, मृत्यु-दर-ह्रास, महगी-विनाश आ मुद्रा-स्फीतिक चढ़ा-उतरीमे अपस्याँत रहब जहिया,
भिनसरे-भिनसरे अहाँक अङनामे अन्तरिक्ष-मानव उतरत तहिया।

अन्तरिक्ष-मानव अहाँक अङनामे ठाढ़ रहत आ ओकरा माथक सिक्के अकासमे 'स्काइ-लैब' टाङल रहत। स्काइ-लैबमे अहाँ पर मूस जकाँ प्रयोग कैल जैत आ जरूरी भेला पर अहाँक आगूमे अहाँक प्रतिरूप गढ़ि क' ठाढ़ क' देल जैत। अहाँ के दिनौनी लागि जायत। अहाँक प्रतिरूप के भरिपाँज क' पकड़ती अहाँक घरैतिन आ असली आँहाँ के चिन्हबा स' साफ नासकार चलि जेतीह। तखन अहाँक समक्ष अन्तरिक्ष-मानवक संग स्काइ-लैबमे चढ़ि क' चन्द्रमा वा मंगल पर पड़ा जेबाक सिवा आन कोनो टा विकल्प नै रहि जैत। ओत' अहाँक संग रोबोटनी द्वारा अहर्निशि बलात्कार कयल जैत आ मोहल्ला पर-मोहल्ला बसौल जैत।

मंगल पर अहाँक शरीर परकीया नायिकाक संग मिसिल बनल रहत आ
एत' अहाँक प्रतिरूप, दलान आ चौबट्टी पर अहाँक कनियाँक इज्जति
उतारैत रहत। अहाँक कनियाँक अतमा जखन चौबटिया पर
चिचियाइत रहत-अहाँक साँस स' चन्द्रमा पर वायुमंडलक
आ अहाँक घाम स' मंगल पर महासागरक निर्माण होइत रहत।
ओत' स्काइ-लैब' कम्प्यूटर, रोबोट, उपग्रह आ अन्तरिक्ष-मानवक समस्त
ब्रह्माण्ड अट्टहास करैत रहत अहाँक अशेष भटकल-यात्रा पर, जेना
विकसित देश परमाणु-कचरा स' आक्रान्त समुद्रक-दुर्दशा पर करैत
अछि अट्टहास। ओकर सबहक अट्टहास के पिरथीवासी वृहस्पति सँ
धूमकेतु टकरेबाक आवाज बुझताह आ अइ महान घटना स' आनन्दित
भ' क' अपन बेधशालामे सफलताक हावा-महल बनौताह।

अहाँक अतमा छिछियाइत रहत पुच्छल-तारा जकाँ— पिरथी स' मंगल
धरि। मंगल स' चन्द्रमा धरि। चन्द्रमा स' पिरथी धरि। खाइत रहब
टप्पा श्री फल्लां मंडल। ठाहर नहि भेटत कत्तहु, श्री फल्लां यादव।
आत्मिक तृप्ति सँ दूर...बहुत...दूर...
बाजू लड़डू पासमान-यात्रा स्वीकार अछि, दिशांश लागल
उका-पतङक अशेष भटकल यात्रा?
बाजू बद्री मिसर-स्वीकार अछि हिममानवक संग परमाणविक पनिडुब्बीमे
हिमलोकक यात्रा? बाजू विख्यात किरतनियाँ पंडित रामनारायण झा—
ज्ञानेन्द्रिय आ कर्मेन्द्रिय कें शिथिल क' क' अहाँ कें
स्वीकार अछि रोबीटनीक संग यांत्रिक सहवास?
बाजू नेहरावाली भौजी-प्रतिकृति आ रोबोटक संग प्रणय-क्रियाकलाप
नीक लागत अहाँ कें, जखनकि अहाँक अंग-संचालन दूरसंवेदी उपग्रह
द्वारा, दूर-नियंत्री प्रणाली सँ कैल जैत?
बाजू, बनगाँवाली भौजी...

•

मिथिलामे बीसम शताब्दी

भरो शताब्दी, सिमटी पजेबाक भावे सोचैत रहि गेल शताब्दी।
टटघरमे मथाहाथ देने, बरेड़ीक भूर स' चन्द्रमाके टकाटक तकैत, शून्य
आँखिए।
भरो शताब्दी, खेसारी-मड़ुआमे बाझल रहल शताब्दी,
सुगरक खोभाड़ीमे सोहारी-भातक सपना सोचैत,
भरो शताब्दी, विज्ञानक बदौलत, मच्छड़ मारैत रहि गेल शताब्दी,
मुदा मच्छड़ नै मारि सकल। फेर मिथिलाक सरधिया उसरागा
जलफाँफी मच्छड़दानी चिर्रीचोंत भ' गेल, शताब्दी द्वारा फोड़ल गेल
परमाणु-बमसँ।

पक्का घरक सपना टुटला सँ खौंझैल शताब्दी, अपन पैरमे
छन्ना लगा क' परोपट्टा भरिक ताड़क गाछ पर चढ़ि-चढ़ि
चिड़ै-चुनमुन्नीक खोंता-चोंचा उकन्नन करैत रहल, भरोशताब्दी।
भरो शताब्दी, अनकर जजात महींस सँ पसरमे चरबैत रहल
शताब्दी आ घिचैत गेल बइमानीक बैलगाड़ी—हेंकों...हेंकों...हेंको...
भरो शताब्दी, तपस्या क' क' भभाशंख-देव सँ वरदान
मंगैत रहल शताब्दी, जे फरीकक दुनू आँखि आन्हर करबाक
लेल, हमर एक आँखि क' देल जाय आन्हर आ फरीकक
दरबज्जा पर दू इनारक लेल हमरा दरबज्जा पर भ' जाय
एक इनार। शताब्दीक अन्तिम वर्षमे इपोरशंख-देवक कृपा सँ
शताब्दी दुनू फरीक, तीनू इनारमे डूबि गेल अथवा जीवन
भरि इनारक बेङ बनि क' रहि गेल।

भरो शताब्दी, शताब्दीक बाट पर, मेनहर-गोखुला छिड़ियबैत
रहि गेल शताब्दी, अनका लेल। आइ कर्जा ल' क' अपने
जुत्ता-चट्टी कीनि रहल अछि, मेनहर-बगूर सँ बँचबाक लेल।

भरो शताब्दी, शताब्दीके शताब्दी बनौनिहार लोक सभके,
जोन राखि क' गाड़ि पढ़ैत रहि गेल शताब्दी। आइ
शताब्दीक अन्तिम पहरमे, शताब्दीक कानमे, ओकर
अपने गाड़ि गनगना रहल छै...आ शताब्दी चुप अछि।
भरो शताब्दी, ईर्खासँ अपन नाङरि कटबैत रहि गेल
शताब्दी आ फेर छ' छ' मासक व्यथा सँ कहरैत
रहल अनवरत। आइ शताब्दीक शरीर धनुष्टंकारक
रोगी बनि क' शिवजीक धनुष जकाँ अथबल भेल अछि।
एहेन भारी शताब्दी, नवजात एकैसम शताब्दीके उठौने ने उठि
रहल अछि।

भरो शताब्दी, सिनूरदाने करैत रहि गेल शताब्दी,
पाहुन परम महान बनि क' आ भुक्खल राक्षस
जकाँ सिसोहैत रहल आँचरके। आइ अपन बुढ़ारीमे,
तथाकथित महान् गौरव-बोधक संग, खेखनियाँ करैत
शिल्पा-बिन्दी लग, अपन नाङरि हिला रहल अछि शताब्दी
भरो शताब्दी, अनके भरोसे जन्म लैत रहल शताब्दी।
आ ओठङि क' करैत रहल ओठघन भोरहरियामे...
चूड़ा-दही-चीनी-अमोट...जाँघ पर घोरैत अमोट... भरो शताब्दी।
रवि करैत रहल समाङ लेल शताब्दी, स्वास्थ्य-उपकेन्द्रक
बरंडा पर पटोटन द' क', भरो शताब्दी। शताब्दी करैत
रहल हरिवासल, एकादशी आ तुलसी-उद्यापन, मिथिलाक
देहरि पर। फेर अंतिम बर्खमे शताब्दीक अंतड़ी फाटि गेलै
आ पानिदुदुर सँ डम्फ भ' क' मरि गेल बीसम शताब्दी।

असलमे, भेलै एना, जे भरो शताब्दी, मुखविलास करैत रहल
शताब्दी आ पेटमे खढ़ देने बिना, सिंघमे तेल औंसैत रहल।
अन्तिम घड़ीमे, भूख सँ आसमर्द करैत शताब्दी,
छान-पगहा तोड़ि पलायमान भऽ गेल।
देखू ने, भरो शताब्दी, घेघ सँ बाँचबाक लेल, बोराक बोरा

आयोडीनवला नोन खेलक शताब्दी। मुदा बादमे गुर्दा खराव
भेला पर, भरो शताब्दी, अनोना केलक शताब्दी। एकदिस
लगही सँ पेट फूलल आ दोसर दिस गाड़ामे घेघ
लटकल। आइ बीसम शताब्दीक घुघना लटकल अछि आ
घओना पसारने अछि ओ, एकैसम शताब्दी लग।

भरो शताब्दी, अरबो टन गोबर क' क' अइ समस्त
भूखण्डके गोबरा देलक शताब्दी। खरबो गैलन गोंत
गोंति क' पतालक पानि धरिके जहरा देलक शताब्दी।
पित्त बोकरलक पोखरि-पोखरि। छेरकट सँ आङन-घर,
कदबा। वायु दनादनि खलिया बंदूक-अनगिन-अनधुन,
अनगिन-अनधुन। सड़ल कदीमा, पाकल बीया,
शताब्दी केलक छीया-छीया।
भरो शताब्दी, मनुक्खके महान 'उत्पाद' घोषित करैत
रहल शताब्दी। आ मनुक्ख ओकर अवश्यंभावी अवसानक।

टिप्पणि : मिथिलामे बीसम शताब्दीक उपर्युक्त खीसा सम्पूर्ण दोसर सहस्राब्दी पर सेहो लागू होइत अछि।

●

गाम

खेत मे अन्न, पेट मे जुन्ना।
मनुक्खपना पर आस्था, कसाइपनाक भोग।
बाध मे राग मल्हार, बस्तीमे समदाउन।
पोखरी मोहार पर करजन्नी,
करजन्नी सन-सन आँखि मे पोखरि।
कलम मे आम, बरखपाछुक सेहन्ता।
कुसियारक राटन धनीक,
हाफक जेबी गरीब।
एक टोनी लेल दँतखिसरी, कोला-कोलाक पुर्जी।
एक बुन्द बूध, मखानक पात आ मुँह।
घूर तर पंच-न्याय, पलंग पर मत्स्य-न्याय।
सम्बन्ध मे आड़ि-धूर, बाध मे दुष्टताक कोदारि।
दिन मे 'हरे-हरे, राति क' घरे-घरे।
मोन मे काट आ ऊपर स' हीयाफाट।
भाबहु पर घात आ
एक सय एगारह नम्मरवला तिनफट्टा चानन।
ठोर पर सूदिक हिसाब आ झक-झक बैष्णवी आनन।

•

बजार

सोन-चानीक उपजा,
लोह सन हृदय।
रुपैयाक मिसिल,
भावनाक राजस्थान।
बजार समितिक वधस्थल,
अपस्याँत अभिमन्यु यादव।
लाल फित्ताक चक्रव्यूह मे किसान,
सात जनमक पियासल सूरा।
धर्म-काँटाक, पाप-पासङ।
मिसरीक व्यवसायी मिसरी दास,
चिरैताक ग्राहक।
जय मातादी, राधे-राधे।
घी मे डालडा, आधे-आधे।
जय श्याम बाबा, जय श्याम बाबा,
पेस्तौल-बुलेट के दूध आ लाबा।

•

कोइली दाइ

दुर्गामाइक महफा उठल।
दीयाबातीक ऊक मिझैल।
उसरि गेल पखेव-पर्व आ गोधन।
दर्जन भरि कनियाँ ल' क'
पूसक मूस बील मे ढूकल।
अहाँ किए असगरे जिदिऐल कूक
कूकै छी हे दैय्या?

चन्द्रभानु कवि कतबो रचता परशंसा मे गीत,
कतबो कानब, कतबो खीजब, कतबो उठत टीस,
परंपरा छै सासुर जाइके (साइबेरिया) हे दैय्या।
एखनहुँ सासुर अनिवार्ये विषय छै
अहाँक नैहर (आर्यावर्त) मे हे दैय्या।
जत' कुमारि जीवन, कुमारि आकांक्षा
असंभवे जकाँ छै एखनहुँ,
हम त' कहब ततहि आबि क' फगुनहटि मे,
करी निर्द्वन्द्व सम्पन्न अपन गर्भाधान-संस्कार–
कुमारिल-कुमारिल। सम्यक् विहारोपरान्त।
सेवाइ अण्डा एतहि हे दाइ।
कल्याणक योग्यता प्राप्त भेने नैहर मे,
उत्सव होइ छै, सोहर आर पमाराक।
आ उत्सवधर्मिताक लेल त' चाहबे करी
कोनो-ने-कोनो बहन्ना, हे दैय्या।
तखन फेर पुहुपमाल चिड़इ उगिलत
गिरमलहार अहाँ ले'।
वसन्त-मातल करिलुठबा मरदाबा
तैयार अछि मोंछ पिजा क'

वसन्त-पञ्चमीए स' हे दैय्या।
कलम-बाग स' ऐल अछि निमंत्रण।
सौरभ बिलहैत हे दैय्या।

कोसी घाटी सभ्यता

कोसी-गाथा

नै भाय! नै भाय!
आँहाँ कने कोसीक बालु के दुलार क' क' देखियउ
साधंस क' क' सप्तकोसीक बालुक समुन्द्र के
सतासी लाख धारा टपियउ कने भाय!
हमरा कन आबियौ भाय कने!
झिलहोरि खेलाइत कुसुमा मालिन ठट्ठा करत
अहाँक ज्ञानक साटीपीकट पर भाय!
किऐक त' बड्ड अन्तर छै,
कुसुमा मालिन आ हेमा मालिन मे भाय!

अपना सट्ठा स' बाँझ परती के हरियर धरती बनबैत
अभरता राजा सलहेस। बालुक बुर्ज पर, टिलहा पर,
भेटता बिरहा गबैत, खीड़ सन मिट्ठ मनुखदेवा,
बाबा कारु खिड़हड़ि
हँ भाय! हँ भाय!
खेवा असुलैत कठडूमर-घाटक मतस्गंधाक चौल
सुनियें ट्टा लेब कने भाय!
—मुनीजी टिरी-रिरी-फट्!
कोसीक बेटी रिषी-मुनी के 'प्रिया' नै बनतै, भट्ट!
भलेही गैंची-लट्ठा-माँछक काँट चिबेबै
मुदा कतायनी माइ के सप्पत कहै छी,
पुनर्बास पर नै जेबै।

हँ-हँ रे, भैया मोरे!
लोलिनदार दनूफक फूल के आनन्द
भरले पेटमे छै। सन-सन करैत मोन के उड़ान

भरले-पुरले खेत मे छै।

मतसूगंधाक संग रंग-रभस के सपना,
पोसले छै, मोने मे, भैया मोरे!
हँ-हँ रे, तोरे सप्पत भैया मोरे!
एकटा कोनो इजोरिया रातिमे कोदारि उठेबै
चमचमही धारबला आ पहाड़ भेल अन्हरिया
समय के, कोसी-बान्ह पर जाक' काटि देबै खण्डी-खण्डी
जान के जपाल बनल छल्लीक छल्ली बालुक बोरिया
आ कोसी माइक छाती पर गेंटल/ताड़मे गछाड़ल
पाथरक पहाड़ के हाँकि देबै बिलेंतमे, भैया मोरे!

तखनि कोसी मैया बन्हन स' फिरी हेतै
आ दसो दिशा धैनुआरि भए जेतै।
मैयाके चितकबरा छागर बिदाइ देबै।
कनैलक फूल आ पान देबै। गूआपन आ मखान देबै।
मनुखदेबा कारू बाबा के दूधपीठ चढ़ेबै।
देवन बाबा के घी नेहेबै।
जानथि बबाजी लछमीनाथ गोसांइ।
हुनके योगबल स' खीर बनबेबै।
अछोप रिषी आ नील सरोसतीक संग,
महिसी-मंडन-धाममे उग्रतारा माइ के भोग लगेबै।
मंडन-डीह पर भारती-मंडन स' शास्त्र बँचबेबै
आ नाकुच-बाबा के नाक ऊँच करबै।
जानथि बाबाजी, कन्दाहाके सुरुज-मन्दिर स'
सुरुज भगमान के उठाय क'
कोसी के एक-एक टा बेचिरागी गाममे
भूक स' इजोत आनबै, भैया मोरे!

हँ रे, हँ रे, भैया मोरे!

चण्डीमाइ के इच्छा स' कुशेस्सर बाबा आ
देवन बाबाके आँखि मे आँखि मिलेबै।
मुदा सिंहेस्सर बाबा के सप्पत कहै छी,
पुनर्बास पर नै जेबै।

हँ भाय! हँ भाय! भैया मोरे!
कोसी माइ के खोलि क' आ
दसो दिक्पाल के बान्हि क'
हरदी मे लोरिक के डीह पर भरिपोख
लोरिकाइन गेबै! मुदा राजकमल के सप्पत कहै छी,
पुनर्वास पर नै जेबै!

•

कोसी-कथा

सोलह दंडक सकराँति बीति जाइ छै
सुपौल स' कुनौली धरिमे
मैराथन-दौड़ जीतयबला खढ़िआ के।
कुनौली स' सुपौल धरिमे
लहसून चूबि जाइ छै
केहेन-केहेन झाँझी कुकूर के।
बनि गेल छै भपटियाही-चौड़ी
संज्ञा स' बिशेषण, जे उठौने
नै उठै छनि, अयोध्य वैयाकरण सभ कें।

कत्तेक भयावह अछि कोसी के आर-पारक
जतराक कल्पना, बेचारा कबइ माँछक लेल?
सातो धारा के नांघ' मे लेब' पड़ै छै
सात जनम रेबा-भाइ के।
कोसीक ठेङी जनैए, तिरमुहानी कमलाक
अर्थ। जनैए बचबा माँछ, गाया-गाँड़ि
बनारसक अर्थ।

वीरपुर स' कुरसेला-घाट धरिक समस्त क्षेत्र
थिक मात्र वाराह-क्षेत्र, महान हिन्दु
सरकारक लेल। महान धर्म-निरपेक्ष सरकारक
लेल। महान पाप-निरपेक्ष सरकारक लेल।
वाराह-क्षेत्र शब्दशः। शब्दशः वाराह-क्षेत्र।
समस्त वाराह-क्षेत्रक समस्त लोक
बना देल गेल अछि सुग्गर, शब्दशः।
शब्दशः सुग्गर...सुग्गर...सुग्गर...
सुग्गर बालु के बकुटने थुथून स'।

जोड़न दैत पिरथी मे अनका लेल।
आकांक्षाक इन्द्रधनुष पोसने अदौ स'
बेराज स' कुरसेला-घाट धरि
सुग्गर... सुग्गर... सुग्गर...
धीपल बालु पर रगड़ैत थुथून अहर्निशि
फूँटि-गुरमीक मरीचिका मे ढ़हनाइत
कोसीक सुग्गर... सुग्गर... सुग्गर...

मुदा फूँटिक यात्रा बलुआ-बजार।
टरक स' गुरमीक यात्रा सिल्लीगोड़ी। आ
सिल्लीक यात्रा जलपाइगोड़ी।
सुगरक सुग्गरे रहि गेल सुग्गर।
बेलल्ला, फूँटि-तारभुजक लेल।
बेलल्ला, गुरमी-परोड़क लेल।
सिल्लीक लेल बेलल्ला।
बेलल्ला... बेलल्ला... बेलल्ला।

भरिसक बे-चारा सुग्गरक अही बेलल्ला
जिनगी के देखैत, ओकरा देल गेल अछि गौरव,
विष्णुक वाराह-अवतारक... पुराण मे भरिसक।

मुदा अठारहो पुराण मे नै भेटैए कत्तहु वर्णन
बलुआहा-घाटक बालु पर छट्ट-पट्ट... करैत टेङरा माँछक।
मत्स्यपुराणो धरि मे नै अछि,
कोसी-क्षेत्रक सौराठी, सौरबचबा...
चालू रहय अनुसंधान, कालान्तर स' कालान्तर धरि।
सरबे चलैत रहबाक चाही
शताब्दीक ओर स' शताब्दीक छोर धरि
जे आरण्यक आ धर्मशास्त्र स'
किए निपत्ता अछि, कोसी-छारनिक बेङ?

गृहसूत्र स' कत' निपत्ता भेल
कोसी चओरक माड़ुर?
किए निपत्ता अछि, धर्मशास्त्र आ अभियंत्रणा-शास्त्र स'
चुल्हाइ मुखियाक कोसी मे दहाइत लहास के
नोचैत चेल्हबा-झुण्डक वर्णन?
तखन फेर मासु नोच'बला चेल्हबा-झुण्ड लेल
कोना भेटै छै प्रायश्चितक अनेक-अनेक
विधान, धर्मशास्त्र मे?
जखनकि चुल्हाइक लहास लेल नै भेटैए
कफ्फन के कोनोटा विधान
कोनोटा धर्मशास्त्र मे?
भरिसक तें निपत्ता अछि, कोसी-क्षेत्र मे
बसाओल गेल वाराह-क्षेत्रक जीवन-सूत्र।
धर्मसूत्र स', गृहसूत्र स'।
आरण्यक आ ब्राह्मण स'।
भरिसक तें निपत्ता अछि चुल्हाइक जीवन-सूत्र
सुग्गर आ कफ्फनक विधान
रंग-बिरंगक धर्मशात्र स'।
भरिसक तेँ गछाड़ल छथि कोसी, अभियंत्रणा-शास्त्र मे।
तेँ कोसी मे मात्र वाराह अछि आ
वाराह-क्षेत्र खाली कोसीए टा मे अछि।

बीरपुर स' कुरसेला-घाट धरि लहसून चुअैत।
सुपौल स' कुनौली धरि सोलह दंडक सकराँति बितैत।
असल मे, हिमालय स' कुरसेला-घाट धरि
कत्तहु नै छथि कोसी।
कोसी खाली अभियंत्रणा-शास्त्रक गछाड़ मे छथि।
गछाड़ मे छथि कोसी, खाली अभियंत्रणा शास्त्रेक।
बीरपुर स' कुरसेला-घाट धरि...

●

कोसीक तारांकित प्रश्न

मिथिला मे नै। नगराजक पैर स' नै।
कोसी मिथिलाक आँखि स' बहै छथि।
मिथिला कोसी मे बहै छथि।
नगराजक पैर स' नै। मिथिला मे नै।
कोसी मिथिलाक जीह स' बजै छथि।
बस्तुतः कोसी मिथिला लेल आ
मिथिला कोसीए लेल कनै छथि।

कोसी के सूँढ़ नै छनि गनेसजी जकाँ।
तें नै सुरुकि सकै छथि अपना गर्भ-गृहक दूध।
तें, कोनो कलेण्डर नै निकलल अछि कोसीक।
तें गुलिंजर नै उड़ल अछि कोसीक,
सूँढ़ स' दूध सुरकबाक।

शिवजीक जटा-जूट मे घूड़ियाइत गंगा जकाँ
कोसी घर छोड़ि घुड़मुड़िया काटि रहल छथि।
बेचारो जेत्ती कतय?
महादेवक जट्टा मे गंगाजल स'
दम घोंटाइत ढ़ील जकाँ
कोसीक दम घोंटा रहल छनि।

लखनउक भूलभुलैया बनल छथि कोसी—
कोपरिया स' भीमनगर धरि
दू टा बूढ़बा अजगर स' सकपंज भेल।
मूसक बियरि स' अजगर सबहक देह
चालनि-चालनि, जंजाल-जंजाल बनल अछि।
अजगर सबहक देहक नापी उठबैत फित्ता स'
शिकारी गहैए बोरा लाखक-लाख, गहे-गहे।

अजगरक देह मे इंची-इंची/कागत पर।
मुदा किच्छु नै जाइए अजगरक पेट मे।
पनिपियाइ पर मरणासन्न पड़ल अछि अजगर।
वस्तुतः इन्जीनियरिंग कॉलेजक भंडारगृह स' निकलल
नागक पेट मे जाइए करोड़क-करोड।
वस्तुतः भीमनगर स' कोपरिया धरिक
नमछुरुक्का अजगरक पेटमे मनुक्खे जाइए।
खगड़िया, सहरसा, सुपौल आ नेपाली मिथिलाक।
महिषी, नौहट्टा आ सलखुआक अदहा शताब्दी
बीति गेल चुपचाप, अजगरेक पेट मे।

आइ लक्क लगौने अछि उजरा बगुला
मूसक बिल लग।
कोपरिया स' भीमनगर धरि बीते-बीत।
मूसक बीयरि लग काकचेष्टा करैत
विधानसभा स' घूरल उजरा बगुला।
करैत निवेदन मूसक बिल स'
फल्लड़-भोकन्नर हेबाक लेल।

तारांकित मूसक बिल—कोसीक नक्शा पर।
तारांकित बगुलाक पाँखि—कोसीक नक्शा पर।
तारांकित गनेसजीक बरमहल नमरैत सूँढ़।
तारांकित कोसी।
महादेवक जटा-जूट तारांकित।
अजगरक अस्सी जोजनक अँतड़ी मे,
एम. पी. कोटा तारांकित।
कोसी-तीरक शहीदक वार्षिक रपट तारांकित।
तारांकित प्रश्न नमरैत, गनेसजीक सूँढ़ जकाँ।
दू टा बुढ़वा अजगरक देह पर—
मूस, नाग, बगुला, बालु, पानि...
तारांकित... तारांकित... तारांकित..

•

कोसी-लोक

दाह-बोह स' घेरायल बालुक ढिमका पर,
फेनक पाउज करैत ठाढ़ मेनियाँ महींस,
पाउजक फेन मे बालु सटल चम-चम,
हरियर घासक सपना मे नोराइत आँखि।
पौस-टूना, बाछी-पाठी...बाँ-बाँ...
में-ऽ-ऽ... में-ऽ-ऽ-ऽ में-ऽ-ऽ-ऽ...
लगे मे ठाढ़ सर्वसोख बड़दक
जमीन्दारी-हाथ स' ऐंठल गीड़हबला नाङरि,
टुकुर-टुकुर तकैत दर्जन भरि आँखि, कोसी मे डूबल।
असमाहि जीवन-धारा मे लुकझुक करैत,
आशक बालुक टिल्हा/लुकझुक करैत सूर्ज।
लुकझुक करैत हिरदे नरैन जादबक हृदयक धड़कन
दुःखी झा गेल छथि दवाइ आन' महिषी।
भेलाहीबालीक आँखि मे दाह-बोह!
हा... फू... फू... फा... बुढ़िया बाढ़ि
भरिसक... आइ पानि घटत... कोसी-पेट मे।
आह! करुण-करुण महाकाव्य, कोसीक जीवन!
आह! खौंझैल-खौंझैल दीर्घ-काव्य, कोसीक जीवन!
आह! जिदियैल आस्था, कोसीक जीवन!
आह! ममतैल आशा, कोसीक जीवन।

•

कोसी-सरकार

घोड़ा टैक्स असूलैए कोसी-पेट मे।
कमीशन फड़िछाबैए घोड़ा दरोगा स'—
कोसी पेट मे।
कोसी पेट मे विधि-व्यवस्था देखैए,
राइफलधारी/अपहरण-विशेषज्ञ घोड़ा निचैन स'।

घोड़ा खम-खम करैए थाना लग।
नाल नै ठोकल छै खूड़ मे।
मलेटरीबला जुत्ता छै, घोड़ाक पैर मे।
एक्के वर्दी थाना आ घोड़ा, दुनू पहिरैए-कोसी-पेट मे।

आइ घोड़ा लेल घी डुबौल लिट्टी बनतै।
गोइठाक कह-कह आगि पर।
काल्हि भोट छै।

घोड़ाक नाक मे लगाम गाँथ'बला सूआ
हेरा गेलैए बकुनियाँ ओ. पी. प्रभारीक हाथें।
तेँ कैफियति देब' गेल छथि
प्रभारी महोदय एस. पी. लग।
तेँ हुनको बखराक लिट्टी आइ खैत, घोड़े।

आ तखन निकलत विधि-व्यवस्था-डुइटी मे
'बिहार सरकार' फल्लां-गिरोहक घोड़ा

वायरलेस स' छूटल हावा गन्हाइत गंडौल मे—
पुइं... पुइं... कुइं... कुइं... पुट्... पुट्... पुट्...

●

कोसी-गीत

आहि ढहुरी भाइ, ई की भए गेलै!
त्रियुगा स' तिलयुगा आ
तिलयुगा स' तिलाबे बनि गेलै!
नदी बनि गेलै नाला आ
कलमवला हाथ मे भाला!
धेमुरा स' जखने धमारा घाट भए गेलै,
दूध मे पानि देखि के हीयाफाट भए गेलै!
आहि धीचोदा!
कोसी बेराज बालु स' भत्थन इनार भए गेलै!
आ बदलाघाट के पुल मे
पसिंजर के लहास के पहाड़ भए गेलै!
दोस रे! हमरा बाबू के बदलाघाट मे भसाय के
बीसम शताब्दी फरार भए गेलै।
आहि ढ़हुरी भाइ, ई की भए गेलै!

कोसी मैया एलै त' अपना याउर के
जमीन गंग-सिकस्त भए गेलै!
आ बड़का याउर के सर्वे मे
गंग-बरार भए गेलै!
आहि ढहुरी भाइ, ई की भए गेलै!

ओकरा याउर के गरमजरुआ
काबिल-लगान भए गेलै!
आ अपना याउर के गरमजरुआ
शमशान भए गेलै!
आहि धीचोदा! बाँकी जे बचलै से

हाकिम-हुकुम के बगान भए गेलै।
आहि ढहुरी भाइ. ई की भए गेलै!
जाना छलै सरकार के काँहाँ
पदनी-साँय काँहाँ चलि गेलै!
होना छलै पुनर्वास,
देखहो, विनाश भए गेलै!
तोरा की बोलिऐ?
शताब्दी-पर-शताब्दी बीतल जाइ छै
उपास नै गेलै।
ढहुरी के, लगनो लागलै एबरी
त' मलमास भए गेलै!
आहि ढहुरी भाइ, ई की भए गेलै!

•

कोसीक कागत के नैय्या

कोसी मे कागत के नाव दहाइए,
घासक बोझ बनि कोसी मे।
जेना मनुक्ख जाँकल रहैए मैक्सी मे,
तेना मनुक्ख नाथल रहैए कोसी मे।
जीवन हिल्लम-डोल...हिल्लम-डोल...
कनियें टा भूर मे बेहाल, बाल्टीन-डोल... बाल्टीन-डोल...

भुक्खल झिलहोरि खेलाइत कागत के नाह,
चप्प द' डुबैए, अखबारक मोटका आखर मे।
आ डेढ़ सय लोक अम्मर होइए डेढ़ मिनट मे,
टाइटेनिक फिलिम जकाँ जहाज, कागत के नाह।
राझनपुर आ बलुआहा-घाट, कोनो डेढ़ मिनट मे
बनि सकैए बेचिरागी गाम। पुनर्वास पदाधिकारीक
तीनमहला उठि सकैए कोसी-कलोनी मे,
कोनो डेढ़ मास मे।
कागत के नाव छी कोसी पेटक गाम—
हटनी, गोरौल, नौला। कागत के नैय्या छी।
कल्याणी देवीक नाङट लहास—छी कागत के नैय्या।
ओकर औंठीवला आङुर कटैए,
घोड़ावला डाकू मलखान सिंह जूनियर।
सड़ल लहासक डाँड़ स' डँड़कस घिचैत काल,
कल्याणी देवीक चमड़ी, मासु आ औंठीवला आङुर—
बनि जाइए कागत के नैय्या।

बड्ड अन्तर अछि, चम्बल-घाटीक लुटेरा आ
कोसी-घाटीक लुटेरा मे। 'चम्बल घाटीक लुटेरा'
एकटा नाटकक नाम छी आ कोसी-घाटीक लुटेरा
एकटा यथार्थक।

कोखि आ अतमाक संवेदना सिसोहि लैत अछि,
कोसी-घाटीक लुटेरा।
कोसी-घाटीक लुटेरा-धोती आ कुर्त्ता छी, सीटल-सीटल।
जिन्स, बैग्गी, टी-शर्ट, नेपाली-जर्सी, खाकी, खादी-सिल्क...
सभ छी लुटेरा, कोसी-घाटीक।
एतय खाँटी देसी आइ. एस. आइ. के जाल अछि।
एतय नकली रुपैया छापयवला मिसिल अछि,
इन्जीनियर के जेबी मे।
विदेशी ठन्डरबोल्ट बीयर अछि एतय,
जकर ठेपी खोलैए, पेस्तौल के पाइप।
कोसी मे पानि नै, बीयर बहैए।
कागत के नाह छहलैए, बीयर पर, कोसी मे, आ/
कोसी बीयर पर छहलै छथि, कागत के नाह बनि।

काँचक चूड़ी, लाहक चूड़ी-कोसी मे बनैए। मुदा
कोसी चूड़ी नै पहिरने अछि। मेहदी नै लागल छै
कोसीक हाथ मे। ककरा लेल बनैए कोसीक चूड़ी?
कोसीक चूड़ी, संसद आ विधान-मंडल लेल बनैए।

जन्मभरि कागत के नैय्या नै बनल रहत कोसी।

कोसीक कागत के नैय्या, गंगा मे उतरि गेल अछि—
भाया-कुरसेला-घाट।
गंगे-गंगा पहुँचि रहल अछि, कोसीक कागत के नैय्या
दिल्ली, भाया-जमुना। उतरि गेल अछि बोट-क्लब मे
कोसीक कागत के नैय्या। आ बढ़ि रहल अछि,
संसद-मार्ग मे सरासरि-सरासरि...
मिसियो भरि थड़थड़ी नै अछि, कोसीक कागत
के नैय्या मे। गाइडेड मिसाइल छी, कोसीक
कागत के नैय्या। लेसर-प्रक्षेपास्त्र छी—
कोसीक कागत के नैय्या।

●

कोसी-भगइत

दराड़ि-दराड़ि दराड़ि... पुरबी कोसी नहरि मे।
दराड़ि-दराड़ि दराड़ि... पछमी कोसी नहरि मे।
बाढ़ि-बाढ़ि-बाढ़ि... तिलयुग्गा बाढ़ि!
बाढ़ि-बाढ़ि-बाढ़ि... धेमुरा के बाढ़ि!
तिलावे-धमारा...तिनजुग्गा बाढ़ि!
चप-चप, चुभुक-चुभुक, बाढ़ि-बाढ़ि-बाढ़ि!
पुरबी कोसी नहरि मे, दराड़ि-दराड़ि-दराड़ि
पछमी कोसी नहरि मे, दराड़ि-दराड़ि-दराड़ि
बीच मे सकठे, बाढ़ि-बाढ़ि-बाढ़ि...

बालुक टाल-बाप रौ बाप!
जीवन काल-बाप रौ बाप!
पानियों लाल-बाप रौ बाप!
कोसी नहरि मे अगबे टाका
बाप रौ बाप, बाप रौ बाप!
चानी पीटल पानि, कोसीक आर-पार
सोना पीटल जेबी, कोसीक आर-पार

माय गै माय-तिस्सीक तेल, जट्टा भेल
माय गै माय-बेटा भेल, मरि-मरि गेल।
पनिजाब स' ऐल, पनिजाबे गेल,
मोहबाक टेल्ह, पड़बाक गेल्ह के
पिलही भेल, पनिदूद्धूर भेल
सबकिछ गेल, पानि मे गेल। सब किछु गेल।

देसी सरकार, विदेसी बेवहार
रन्ना पीठ पर, रन्नू सरदार
लास मे रस्सा, कोसी-सरकार
बचल-खुचल दाना फल्लां-गिरोह

फल्लां गिरोह भाय चिल्लां-गिरोह
पहलमान-पहलमान, गिरोहे-गिरोह!
बिहार सरकार-राइफलबला घोड़ा
सरकारे-सरकार, सरकारे-सरकार।
जोर लगाक' हइसा! सरकार के घीचू-हइसा!
परशासन घीचू-हइसा! सिंहासन घीचू-हइसा!
बाढ़ि आ रौदी-हइसा! नाव के घीचू-हइसा!
छन्नर-मन्नर-हइसा!
चन्द्रायण आइ. बी, हइसा! वीरपुर आइ. बी.-हइसा!
दिवारी-थान मे दूध आ लाबा, बीयर-बार मे हइसा!
कारू बाबा, खीर खा, खीर खा, सरकिट-हाउस मे हइसा!
टेङरा-इचना लए जो बुधना, हरिजन-कलोनी हइसा!
रोहुआ-बचबा दए जो टेनमा, कोसी परजेक्ट मे हइसा!
एसकूटी सैहेब-हइसा! सकठे कोसी पइसा!
चानी पीटल-पइसा! छहर-सोलिंग पइसा!
बान्ह के पिच्चिंग पइसा! पीपा-पुल पइसा!
सुल्लिस-गेट पइसा!
पइसा-पइसा-पइसा! हइसा-हइसा-हइसा!
पइसा हजम, खेला खतम! खेला-खतम, पइसा हजम!
बोल जमूरे अगिला साल? मालामाल-मालामाल!
बाढ़ि-बाढ़ि-बाढ़ि... दराड़ि-दराड़ि-दराड़ि...
पुरबी कोसी नहरि... पछमी कोसी नहरि...
पुरबी कोसी परमण्डल, पछमी कोसी परमण्डल...
बेचिरागी गाम मे राकस... भुक्-भुक्-भुक्-भुक्...
घेघही-आङन मे पंजाबी-कौआ, काउँ-काउँ-काउँ-काउँ
पाँच गाम मे एकटा चक्की, पुक्-पुक्-पुक्-पुक्
पुक्-पुक्-पुक्-पुक्...
चाउर-चाउर-चाउर, मातबर-कोठी चाउर!
छाउर-छाउर-छाउर, पंजाबी भैया कोठी छाउर!
सा-रा-रा-रा-रा-रा-रा-रा, सा-रा-रा-रा
समधिनियाँ सारा-रा-रा... समधिनियाँ मास्टर बनलै!
समधिन इसकुल मे स्वेटर बूनय,

चटिया सब समधिन कें जुट्टी गूहय, समधिनियाँ सारा-रा-रा-रा,
समधिनियाँ सा रा रा रा... समधिनियाँ वाह-वाह!

समधिनियाँ ओल-झोल! समधिनियाँ ओल-झोल!
समधि एसमगलर—बैरेज-मास्टर
समधि एसमगलर—बैरेज-मास्टर
समधि के डाँड़ मे रस्सा बन्हैल
समधिन के पेट मे नूड़ी ठुसैल... जोगी जी सा रा रा रा ...
जोगी जी वाह-वाह! जोगी जी वाह-वाह!
कोसी मे... कोसी मे आजु मचे होरी... कोसी मे...
कियो पंचायत समिति, कियो बनय मुखिया
कियो बनय वार्ड-मेम्बर, सभ बनय सुखिया
कियो बनय परमुख राइफल के...हो-हो...
कियो बनय अधियक्ष राइफल के... हो-हो...
कियो बनय मुखिया राइफल स' —कोसी मे...
कोसी मे आजु मचे होरी... कोसी मे...
रंग-गुलाल उड़े पेस्तौल स'
रंग-गुलाल उड़े पेस्तौल स'
एसकूटी के डेरा पर-हो-हो... एसकूटी के डेरा पर... हो-हो...
टेन्डर भरि क' डेरा पर...
हो-हो—एम. बी. फाइनल डेरा पर... कोसी मे...
कोसी-वन डी. एम. दधि लूटे... देवन-वन...
देवन-वन डी. एम. घी सोंटे... देवन-वन
कोसी मे आजु दनूफक फूल... कोसी मे...
कोसी मे कोदी—साम के खीर...कोसी मे...
कोसी मे बड़का-बड़का वीर... कोसी मे...
कोसी मे फरकिया-जीवन हो... कोसी मे...
कोसी मे फरकिया-मरणो हो... कोसी मे...
कोसी मे भगतिया सुक्खल हो... कोसी मे..
कोसी मे बेदरा भुक्खल हो... कोसी मे...
कोसी मे बाढ़ि-दराड़िए हो... कोसी मे...

•

कोसी-घाटी सभ्यता

मुदा भगइतक कोनो असरि नै कोसी माइ पर।
मुदा मनाउनक कोनो असरि नै कोसी माइ पर।
कोनोटा असरि नै कोसी माइ पर, मनाउनक आ भगइतक।

पुतरी सभ झिझड़ीक गीत कानथि नाह पर, मंझधार मे।
लहरिक हहारोह मे मिझराइत हुनका सबहक हाहाकार।
चप् द' डुबैत हुनकर हाहाकार, लहरिक हाहारोह मे।
मुदा नै छी कोसीक लहरि, जगरनाथपुरीक समुन्द्रक लहरि।
एतय सौतिनियाँ लहरि स' आनन्द नै, करुणा उपजैए।
एतय लहरि मे बिला जाइए, झिझड़ीक करुणा।

जीवन के ध्वंस करैत लहरि!
लहरि पर झिलहोरि खेलाइत जीवन!
पानिक भोकाँड़ स' बचाक जीवनक नाह के
छटक्की स' बहार निकालैत, छीतन मुखियाक लग्गा।
थरभस लागल नाव के गीतक सहारा दैत छीतन मुखिया—
'से मैया गे... बड़-बड़ बिपत्तिया गे मैया
राज-कोसी मे लागै छै...
कोसी नगरिया मे आ...

मुदा मनाउनक कोनो असरि नै।
कोनोटा असरि ने मनाउनक। कोसी माइ पर।
प्रेम आ कोसी माइ स'?
कोनो टा असरि नै।
युद्ध आ कोसी माइ स'?
कोनो टा असरि नै।
मुदा ककरो पर कोनो टा असरि हो वा नै हो,

प्रेम आ युद्ध, युद्ध आ प्रेम—चलतै संगहि-संग।
प्रेम आ युद्धक बीच स' उत्साह आ जीवन
चोरबैत निरमल्लीवाली। हुनकर जैधी-सोमनी आ रेखिया।
झिझड़ी खेलाइत नाह मे।
कोसीक छाती पर साल-दर-साल।
निरमल्लीवाली, सोमनी, रेखिया...
मुदा मनाउनक नै कोनो टा असरि।

बीतल जाइत झिझड़ी-पर-झिझड़ी।
गिड़ने जाइत युग-पर-युग।
कल्प-पर-कल्प गिड़ने जाइत।
मैया हे कोसीए जी!
मैया हे कोसीए जी!
एक जनवरी-पर-एक जनवरी।
वनभोज-पर-वनभोज। बालुक
अनन्त...अनन्त...अनन्त...समुन्द्र के
छाती पर। दिधौंचक शिकार पर हरियलक
खलओदाड़। मन्वन्तर-पर-मन्वन्तर।
शताब्दी-पर-शताब्दी। सोमनी-पर-सोमनी।
रेखिया-पर-रेखिया। निरमल्लीवाली-पर-निरमल्लीवाली।
हुलासवाली-पर-हुलासवाली।
कोसीक बालु परहक पिकनिक पर निछाउर।
निछाउर, बढ़म बाबाक पीड़ी पर। मुदा
मनाउनक कोनो असरि नै, पिकनिक-दल पर।
कोनो टा असरि नै मनाउनक, शताब्दी-शताब्दी
धरि। सिट्ठी बनल नाङट काया अरड़ा लागल,
कोसीक कछेड़ मे। फूलल-सूजल अंग सभ पर
झमैया खसैत गिद्ध, चिल्होड़ि, कार-कौआ...
टें-टें-टें... ...टें-टें-टें... ...टें-टें-टें...

विलुप्त सोमनी विलुप्त रेखिया—लहरिक हहारोह मे।

पिकनिक-पर-पिकनिक, कल्प-पर-कल्प!
विलुप्त हरियल, विलुप्त दिधौंच, कल्प विलुप्त!
मन्वन्तर विलुप्त! कार-कौआ-टें-टें-टें...
बालु पर बजैत—डिस्को, 2000
बाबा सहगल हौ, बाबा सहगल!
उषा उथूप गै, उषा उथूप!
कोसी मैया, हे कोसी मैया!
माइ हे आर कत्ते दिन? माइ हे एना कत्ते दिन?
माँ गो आर कोतो दूर? आमार सोनार मिथिला,
माँ गो आर कोतो दूर?
झिझड़ी-पर-झिझड़ी, शताब्दी विलुप्त!
एक जनवरी-पर-एक जनवरी, शताब्दी विलुप्त!
हाक्रोश-पर-हाक्रोश, निर्मल्लीवाली विलुप्त!
हुलासवाली विलुप्त!
आधुनिक बढ़म बाबाक पीड़ी पर विलुप्त!
उत्तर-आधुनिक तांत्रिक बाबाक
चिलमक धुआँ मे विलुप्त!

युद्ध स' प्रेम। युद्ध स' उत्साह!
लहरि स' युद्ध करबा मे जीवन!
जीवन स' युद्ध करबा मे लहरि!
लहरि-पर-लहरि, कोसी मैयाक छाती पर।
जीवन-पर-जीवन, कोसी मैयाक पेट मे।
मुदा मनाउनक कोनो असरि नै, कोसी माइ पर।

वारि मथै घृत होहि बरु!
कोसी-पेटक सतासी ग्रामपंचायतक घिउ।
चाँदनी-चौक पर नीलाम।
सिकता ते बरु तेल!
नागर-बन्धुक अट्टालिका मे सिकता पतनुकान।
आ पीयर-पीयर सरिसोक करु-करु तेल?

कारी-कारी राइक झंसिगर-झंसिगर तेल?
रोहुक कुट्टा मे निपत्ता, काडा-कॉलनी मे निपत्ता।
छिः छिः छिः... छिः छिः छिः
यहि सिद्धान्त अपेल? यहि सिद्धान्त अपेल?
विषहरि-विषहरि, ई की केलौं?
सभटा माहुर धारे मे देलौं?
लवहरि-कुशहरि कत' नुकेलौं?
शीतला मैया कहाँ पड़ेलौं?
कोनो टा असरि नै मनाउनक?
वेद स' बुद्ध धरि, किनको पर नै?
शास्त्र निपत्ता? शस्त्र नितुआन?
वाह भाइ वाह! हँ भाइ वाह!
वाह! वाह! वाह!

डरहारक डाँड़क हाड़े सड़कल।
बिगहाक-बिगहा धरती दड़कल।
टभकी-गाँजक मरड़ा सड़कल।
मरदाबा सबहक सीड़-सीड़
आ पोड़-पोड़ सड़कल।
सामर्थ्य...सामर्थ्य...सड़कल...सड़कल...
सड़कल...सड़कल...सामर्थ्य...सामर्थ्य...
सातम बियानक महींसक
भथियानक मरड़ा जकाँ,
सड़कल...सड़कल...दड़कल...दड़कल...
दड़कल सोमनी, रेखिया दड़कल...
निरमल्लीवाली दड़कल, हुलासवाली दड़कल...
दड़कल-दड़कल ओद्र...सृजन स' वंचित...

बिगहाक-बिगहा कोदो-साम चिबाउ।
महादेव-मठ मे मडुआक खीर बनाउ।
बजरंगबली ले' चिचोड़क चिक्कस के

पहथबा रोट पकाउ।
मलइक सपना मे जलइ जाउ। काश-पटेरक
अकाबोन नंघैत। राड़ी-सावेक बियाबान धंगैत।
घोड़ावलाक नाम बिहार सरकार।
समानान्तर सत्ताक सरोकार-सरोकार।
बालु थिक कोसी-पुतरीक कंसार।
कंसार मे बालु भुजै छथि कोसी-पुतरी।
अपन उजड़ल संसार मे
बालु भुजै छथि कोसी-पुतरी।
अपन उजड़ल मांग मे भुसना-सिनूर नै,
बालु रगड़ै छथि कोसी-पुतरी।
सुनै जाउ, सुनै जाउ नीक लोक सभ!
कोसीक कंसार मे पूत आ पुतरीक
जीवन भूजल जाइ छै, बालुक संग।
सुनै जाउ हे सभ्य लोकनि!
भाङे भूजल जाइ छै, कोसीक घर-घर मे।
हकलक्खी नोर कनै छै कोसी-पेट मे
भुक्-भुक् क' पनिजाबक प्रतीक्षा करैत डिबिया।
सुनै जाउ हे नीक लोक सभ!
हरिबोङाबद्द सभ पीपा-पुल बनौतै हे!
गाटर-अगरधत्त के कोसी-छाती पर हेलौतै हे!
जहरकनैल मे रङ-विरङक
चकमकहा फूल फुलेतै हे!
पचीस बर्ख मे लाख-करोड़क
सड़क आ रोड़ा, बालुक बोरा,
कोसी माइ आ इन्जीयर भाइ,
अछिनरे क' क' खेतै हे!
पिठार सन चकलाक-चकला दही खेतै।
घिउ नेहेतै। दारू बहेतै।
मटकूरी खेतै, कहतारा खेतै।
मासु खेतै, चाम खेतै।

नाच खेतै, गान खेतै।
साम खेतै, इमान खेतै।
दूभि खेतै, धान खेतै।
पान आ मखान खेतै।
गाथा खेतै, गीत खेतै।
मिट्ठा खेतै, तीत खेतै।
मित्तिन खेतै, मीत खेतै।
विद्या खेतै, सपना खेतै।
तखने भरिसक आधुनिक हेतै
उत्तर-आधुनिक हेतै तखने भरिसक।
भरिसक हरिजन-कलोनी स'
सभटा निन्द आ सपना सिसोहि-सिसोहि क'
चन्द्रमा पर बसौल गेल कलोनी मे
रॉकेट पर लादि क' ल' जेतै।
किएक त' ओकरो पर
मनाउनक कोनो असरि नै छै।
मुदा मनाउनक जखन कोनो टा
असरि नै छै ओकरा पर
त' ओकर सभटा महत्वाकांक्षा
क' देल जेतै भरकुस्सा।
किऐक त' गैंता ल' क'
चढ़ता हिमालय फूकन सदाय
आ दड़का देताह हिमखण्डक गर्भ।
कोसी मैया उग्र हेती त' निरमल्ली मे,
देवन-वन मे, चन्द्रायण मे...
नाचत कन्हैया, ता-ता-थै-या...
नाचत कन्हैया, ता-ता-थै-या...
सप्तकोसीक सातो धारा,
बिषहरिक सप्तजिह्बा जकाँ लपलपाइत।
सातो फेंच पर, नाचत कन्हैया, ता-ता-थै-या...

सटक नारायण, पटक नारायण!
जे क्यो लाबय, चूड़ा-गूड़-चना,
सटक नारायण, पटक नारायण!
जे क्यो लाबय सलाइ आ पन्नी
सटक नारायण, पटक नारायण,
पुबरिया छहर, पछबरिया बान्ह
नकार-सिरखार खतम!
बनोतरी इतिहास आ बनोतरी भूगोल खतम।
बाँचल रहत मात्र कोसी घाटी सभ्यता।
खाँटी सभ्यता बाँचल रहत कोसी-घाटीक।
अपना ऊहि स' बाँचत कोनो गाम। बाँचल रहताह
हेलबाक इलिम जननिहार मोती मुखिया,
राधा मुखियाइनि। प्रकृति आ पुरुष बँचतथि,
अपना इलिम स'। लग्गाधारी आ डोंगी नावबला इलिम स'
सभ्यता बाँचल रहतै, अवशेष रूप मे,
कोसी-घाटी मे, हे सभ्य लोकनि!
कोसी-घाटी मे गौरांग इन्जीयर-सभ्यताक
अवश्यंभावी लोपक घोषणा हेतै काल्हि खन।
कोसी-भगइतक मुँह स'
महिषी मे, हे सभ्यलोकनि!

काल्हिए कोसीक विदागरी मे गओतै गीत
कोसी-पुतरी सभ— 'कोसी मैयाक छारनि-छुरनि।
छापर-छैयाँ पनियाँ।
ताही मे नेहेलै बुच्ची बाबू बभना!
धोतीओ ने खिच्चै छै, जनउओ ने तोड़ै छै,
ताही पापे छारनि-पह मे
पानियो नै रहै छै, हौ इन्नर लोक!'
फेर माता पार्वती के
कहियो नै मैना नानी पुछथिन—
गौरी हे, एते जल नांघि क' अहाँ

कोना क' एलौं हे?
गौरीदाइ कहियो नै कहथिन—
अम्मा हे, हेलिते-डूबैते
हम त' भने क' एलौं हे!
फेर त' निरमल्लीवाली के
एतेक जल नांघि क' एबाक कोन काज?
तहिया अहाँ कान पाथि क' टंसगर गीत
सूनब सोहन जादव स'
महिषीक पीठ पर गोधूलि-बेला मे—
चलै छै गे मलिनियाँ बेटी, धरती धमकाबै छै गे...
से मैया गे...
तहिया अहाँ एको बेर नै सूनब—
निन्द बैरिन भेल, सखि हे...
किऐक त' आब मनाउनक
कोनो टा असरि नै होइ छै।
किनको पर नै। ककरो पर नै।
पटना-दिल्ली-काठमाण्डू धरि पर्यन्त, ककरो पर नै।
तें... तें... तें... चढ़ता हिमालय गैंता ल' क'
फूकन सदाय, काल्हिए... तें... तें... तें...
नीज काल्हिए... तें... तें... तें...

•

आदि-कथा

पानि आ माँछ छिड़िया जाइ, इलाका के बहियार मे
कोसी के साम्यवादी बाढि
सकठे नाह पसरि जाइ छलै—जीवनक संचार लेल,
बाढ़ि अबै छलै लोकक मोन मे/भावनाक,
संवेदना लग्गा लए कए खैबै छलै,
पड़ोसिन कें बिना खेवा के,
जीवन मे रसभंग नै कए पबै छलै कोसी
आ सौमनस्यता छलै जगजियार कोसिकनहा मे
मगर डकूबा इन्जीनियर आ
चोरनियाँ सरकार बान्हि देलकै
जीवन के तटबन्धक जुन्ना मे/ऐंठि कए सकठे,
कोसी-लोकक जीवन कें गति-हत कए देलकै
पोथी-पंडित/नेता मिलि कए,
कोसी-देसक मोन आ हृदय भए गेलै दू फाड़
कोसी के आर-पार, कमला बलान के मार
आ धेमुरा-तिलयुगा के पहाड़, कोसी के आर-पार!

अपना कन इन्जीनियर भए गेलै अङरेज आ नेता
भए गेलै तुरुक। हीनी कोट सिया लेलकै, हूनी कुरता,
हम्में ओइ पर रहि गेलिऐ, तूहें अइ पार!
तोंहें केन्ने जेबहो, हम्में केकरे बोलबै?

•

ओइ पार, अइ पार

तोरा कन जेल, हमरा कन फाँसी।
तूहें कहियो-काल जेल स' निकलबो करबही,
हम्में कोसी-बान्ह टुटलै त' फाँसी-रे-फाँसी!
तोरा पूस मास के दिन मे तरेगन लखा जाइ छै
मोरा बारहो महीना मे तेरहम महिनमा
कतिका मास लखा दै छै, भैय्या मोरे!

मोरा बान्ह टूटै के आदंक, फा मे देलकै सरकार
तोरा हमरा नामें ईर्खा, फा मे देलकै सरकार
तोंहे रिलीफ के ओस चाटहो,
बिला गेलौ मेहनति के संस्कार,
हमरा बैंक-लोन नै देलको, जिनगी भेलै पहाड़।
हौ बाबा कारू खिड़हड़ि, हौ बाबा सोखा!
हौ बाबा लछमी गोसाँय!
लए जाहो कोसी, लए जाहो बान्ह के
हमरा ने जिनगी, पड़ै छै पोसाय।

•

चरित्र

पुरैनियाँ स' चलि कए एलहो हे कोसी मइया
सहरसा के कपार पर बथेलहो।
निरमल्ली-देरभंगा लेहैब केलहो कोसी मइया
सुपौल के जिनगी बुरेलहो।

बिगहा के बिगहा पचेलहो हे कोसी मइया
बालु के टिलहा घुरेलहो।
केतना के अन-धन-सोनमा देलहो
केतना कंगाल बनेलहो।

घोड़ावला के राइफल धरेलहो हे कोसी मइया
रन्नू सरदार के खेलहो।
कुसुमा मालिन के चूड़ी फोड़ेलहो
सलहेस के घोड़ा दहेलहो।

केतना नाह बुड़ेलहो हे कोसी मइया
केतना खोपड़ी डुबेलहो
लोरिको के डीह डुबेलहो हे कोसी मइया
भुक-भुक् ढिबरी मिझेलहो।

केहन चण्डालिनी भेलहो हे कोसी मइया
बोलहो, ई की केलहो?
बोलहो, ई की केलहो हे कोसी मइया
केहेन चण्डालिनी तू भेलहो?

•

मरसीया

तीन दिन भए गेलै नाह पर।
भावहु-बेटी-बेदरा के लाजें
नद्दी ने फीड़ल जाइ छै।
डीह-डाबर डूबि गेलै
घर-माल भासि गेलै
सरकारी खड़ाँत के एक लप चूड़ा।
गूँड़ ने गीड़ल जाइ छै।

धैन पनिजाब जे मुरगा-बकरी
अपने मेथुला कसाइ छै
केतना दिन पर एलै जमैया
पिलही-बेटी झमाइ छैं

टक-टक ताकै पंजबिया-बेटा
पुतहुआ के किछु ने फुराइ छै
केकरे घर के लक्ष्मी पुतुहआ
नङटे भासल जाइ छै।

कोसी के सेबि कए किछुओ ने भेलै
बुढ़िया किच्छु ने खाइ छै
सुन्न-मशान भकोभन फरकिया
गामक गाम बिलाइ छै।

धँसना धंसि कए खेत बिलाइ छै
जुआनी भूत खेलाइ छै
सकठे भाइ 'कोसियाइटिस' फड़लै
मनुखक मासु बिकाइ छै।

●

कोसीकनहाक आम बात : कोसिकनहाक खास बात

कोसी मे उतरै छथि सूर्ज त'
आठ मास कोसिकनहा राजस्थान बनि जाइए।
आ कोसी मे उतरै छथि हिमालय, त' चारि मास
सम्पूर्ण कोसिकनहा बनि जाइए हिन्द महासागर।
कोसिकनहा छी बालुक हिमालय।
मटमैल पीरा पानिक हिन्द महासागर छी कोसिकनहा,
जतय आदमी नामक जीव के
बालु भकोसैए आ पानि ढकोसैए।
असल मे बाढ़ि कोनो घटना नै छी।
मनुक्ख नामक जीव के लहास बनेबाक
इन्तजाम वा औजार छी बाढ़ि।
होइ छै एना, जे हिमालय स' कोसी मे उतरल ग्लेशियर
तटबन्धक रिंग-बान्हक दराड़ि स' निकलि-निकलि
मूस-साँप-चुट्टीक थोंका,
कोसी तटबन्ध प्रमण्डलक आइ.बी. मे पड़ा जाइए।
तखन फेर सूर्ज कुरता धोती पहिरि क'
सर्किट हाउस मे उतरै छथि त'
सम्पूण सर्किट हाउस मे शिमलाक
हरियरी आबि जाइए। आ शेष
कोसिकनहा मे ओहिनाक ओहिना
राजस्थाने राजस्थान रहि जाइए।

तें कोसी मे सूर्जक उतरब आम बात छी।
हिमालयक उतरब आम बात छी कोसी मे।
कोसिकनहाक राजस्थान बनब आम बात छी।
आम बात छी तटबन्धक दराड़ि मे
ग्लेशियरक गहा जैब। रिंग-बान्हक दराड़ि मे

आदमी नामक जीवक डम्फ भेल
लहासक गहा जैब आम बात छी।

मुदा खास बात छी, सर्किट हाउसक
शिमला बनब। आइ. बी. मे उज्जर
दप-दप सूर्जक उतरब, खास बात छी।
खास बात छी अनन्त।
अनन्त...अनन्त आम बात,
मात्र एकटा खास बात छी।
मात्र एकटा खास बात छी—
अनन्त...अनन्त...आम बात
—कोसिकनहा मे।

•

-

समवेत स्वरक आगू

कविता-क्रम

76 : जिजीविषा
76 : जीयब-मरब
77 : दूटंगा
77 : संस्कार
78 : लिखब-मेटायब
78 : मरकओर
79 : अ/नियति
79 : सौन्दर्य-बोध
80 : इतिहास
80 : संघर्ष-पथ
81 : जखने बिखाह हवा बहतै
82 : नानीक कविता : एक
83 : नानीक कविता : दू
84 : सूर्जक सन्धान मे
86 : एहेन केना होइत छै? : एक
87 : एहेन केना होइत छै? : दू
88 : एहेन केना होइत छै? : तीन
89 : त्रासदी
89 : राजधानी कत' अछि?
90 : घूर मुद्दइ थिक
92 : पिरथीक परिकरमा
95 : हमरा कोनो टा परबाहि नहि अछि
96 : हे लजबिज्जी दाइ
96 : मोगलक हींग
97 : जाफर आ नोन
97 : सरकारक परिभाषा
98 : गुरीच
98 : मोसव्बर
99 : महापूर महींस

100 : तीत-राग
100 : मनकामना-मायक घ्राण-तंत्र
101 : अवारवला पोठीक पेट अंडासँ लदबद अछि
101 : अन्तरिक्ष जकाँ अनन्त अछि मनुक्खक परंपरा
102 : सभ्यताक विकास
102 : बर्फक लहरि
103 : चिन्ता आ आशा
104 : फहराइत पतक्खा
105 : से बात नहि छैक आब
107 : जखन बाढ़ि अबैत छै
110 : चिरंतन सत्य
110 : अन्तरिक्ष जकाँ अनन्त अछि मनुक्खक परम्परा
111 : कीड़ी
113 : साँझ भरली
114 : एहेन दिन कहियो नहि आबय
115 : स्वीकार : रचना+आलोचना
116 : राजा आ प्रजा
118 : की-की नहि भ' जाइत छै
119 : आज्ञाडाला पर विषधरक पोआ लोटाइए पिंकीदाइ
121 : महिखा
122 : समकालीन-कथा
123 : ई अदराक मेघ नहि मानत
124 : चतुर्भुजस्थान नहि, मुजफ्फरपुर
125 : खैर, कोनो बात नहि
125 : अपन-अपन अभियान
126 : न्यूट्रॉन-बम निर्जीव नहि बना सकत हमर लेखिनी केँ
128 : आदिम राग
128 : आत्म-वंचना
129 : जहिया

जिजीविषा

हिचकीकेँ विलीन करैत समदाउनिक भास केँ, नाद-स्वरसँ रेघा-रेघाक' के द' जाइत अछि आरोह-अवरोहक ऊर्जस्विता?
आलाप बनैत विलापक भास/मुहेंठ सँ उड़ैत उदासीक अन्तरा/घी जकाँ जरैत अवसाद-मोनक दिवारी मे/के घुसुका जाइत अछि चेतनाक टेमी?
टुटैत उका-पतंगक त्रासदी, हुमरैत दुर्घटना-मेघक टोप-टहंकार-अभिज्ञान/अचेतन-अवचेतन चेतनाक जिज्जिड़ केँ, कोन बसात झिकझोड़ि क' खटखटा जाइत अछि?

जीवनक राति मे द्रौपदीक चीर जकाँ बढ़ैत आँखिक सूत/ज्ञानक अकाबोन मे बाट थाहैत अस्तित्वक चीत्कार! रातुक जबदाह जड़ता केँ तोड़ैत बाबूक खड़ामक खटखटी, ई कोन पहरादार खखसि क' जगा जाइत अछि, चोर सँ?

•

1990 ई.

जीयब-मरब

ओहुना आदंक मे जीयब आदंकक जीत थिकैक। तेँ मरैत-मरैत जीबैत रहब सँ नीक थिक, जिबिते-जिबिते मरि जायब। मुदा जीयब तं हम जीयब, हम किए मरब? मरत तं शताब्दी मरत, हम किए मरब?

•

1991 ई.

दूटंगा

ई रुपैया थिक/दौड़ैत अछि। ई फाइल थिक/सड़ैत अछि। टाङ दुनू मे सँ ककरो नहि छैक। ई दूटंगे थिक जे ककरो दौड़बैत अछि, ककरो सड़बैत अछि।

•

1991 ई.

संस्कार

संस्कार कु-संस्कृतिक अवशेष थिक। विकृति केँ संस्कृति मानब एकटा स्थापित कु-संस्कार थिक। कहियो छओ ताग आ तीन प्रवर शिक्षाक परम्परा छल हेतैक। आइ तँ... संस्कार भारतीयता नहिं, पच्छिमपंथ कि दच्छिनपंथ...?...?...?

•

1991 ई.

लिखब-मेटायब

हम लिखैत छी, अहाँ मेटाबैत रहू। अहाँक मेटौना घसा जायत, हमर लिखब बन्न नहि हैत। ओ हमर जीवन थिक। अहाँक मेटायब आइ ने काल्हि होयबे करत बन्न। ओ अहाँक नीक संस्कार नहि,दुष्टता थिक।

•

1991 ई.

मरकओर

केहेन-केहेन लगाम केँ घोड़ा काटि दैत अछि। केहेन-केहेन सिमेन्ट केँ काटि क' मूस बिल बना लैत अछि। केहेन-केहेन सिक्कड़ केँ इतिहास तोड़ि देलक अछि। हमरा सभक जीह पर निरन्तर गड़ि रहल अछि, बिर्खीक काँट आ हम सभ गलिया-गलिया क' गिड़ने जा रहल छी— मरकओर।

•

1992 ई.

अ/नियति

सिकरेट जकाँ अन्तिम साँस धरि अनवरत जरैत रहब/धुआँइत रहब-ककरो नियति भ' सकै छै। मुदा ओही सिकरेटक अन्तिम टुकड़ी जकाँ लतखुर्दनि होइत रहब-ककरो नियति नहि भ' सकैछ। डेरबुकपना आ निष्क्रियता फराक बात थिक।

•

1992 ई.

सौन्दर्य-बोध

पहाड़ आ झीलक सौन्दर्य पर मुग्ध होयब, सौन्दर्य-बोधक प्रति हमरा लोकनिक अज्ञानता थिक। भूखक पलेती सँ क्षुब्ध होयब तैओ एकटा बात भेल। मुदा खाट आ चौकी पर पटोटन द' क' ज्वाला केँ सेरयबाक कोशिस एकटा विजय-बोधक निर्मम हत्या थिक। तेँ सौन्दर्य-बोध संघर्षक अथ मे/भूखक ज्वाला के घाम पोछिक' शान्त करबा मे अन्तर्निहित छैक।

•

1992 ई.

इतिहास

बर्फ मे गलबाक इतिहास मनुक्खक छै। आगि मे झड़कबाक इतिहास मनुक्खक छै। भरल कटोरा माहुर एक छाक मे पीबाक इतिहास मनुक्खक छै। रेशमी तागक फाँस मुसुकीक संग गरदनि मे पहिरि लेबाक इतिहास मनुक्खक छै। मुदा हारि मानबाक कोनो टा इतिहास मनुक्खक नहि छै।

•

1992 ई.

संघर्ष-पथ

चुट्टी केँ पीचि दिऔक, मुँह बाबि क' हबक्का मारत। मँछगिद्धी केँ थकूचि दिऔक, नाङरि पटकि-पटकि विरोध देखायत। छागर घेंट कटयबा लेल कहियो कान नहि पटपटबैत अछि, परीक्षा नहि दैत अछि गोसाउनिक पीड़ी लग ठाढ़ भ' क'। संघर्ष पथ पर बीस पीढ़ीक मेटि जायब—एक अनवरत आ सार्थक जीवन थिक।

•

1992 ई.

जखने बिखाह हवा बहतै

जखने बिखाह हवा बहतै/अभिराम झा केँ लकबा मारि देतनि। लोक अटकर लगौतनि-विषधरक नाङरि हिलौला वा फुफकार छोड़ला सँ बहल हवा छलइ। अभिराम झा लटपटा-लटपटा क' डिस्को-डान्सर जकाँ खस' लगताह। जखने बिखाह हवा बहतै/ग्लेशियर टूट' लगतै/नेपाल सँ कतेदन क्यूसेक पानि छुटतै। अभिराम झाक धान, बड़द आ अपने 'आश्चर्यक' बाढ़ि मे दहा जेताह। जयनगर बराजक इन्जीनियर बाजत—हम त' चेता देने रही। लोक टीपत—आब त' किरिया-करम...

जखने बिखाह हवा बहतै/पूरा लाटूर-उसमानाबाद बिना प्रसव-पीड़ाक खूने बिआय लागत। निलम्मा-कृष्णम्माक गर्भ दरक' लगतनि आ चारि बजे भोरक पिरथीक दराड़ि छातीक बीचोबीच भ' जेतनि। गर्भपातक बाद पाथर भ' जेतै दरिभंगा-मुङेर आ कलक्टर वैज्ञानिक जकाँ बजतै—हम त' चेता देने रही जे एकटा सभ्यता बिलाइवला अछि। आदम-युग सँ प्रस्तर-युग मे जाइवला अछि।

जखने बिखाह हवा बहतै/कोनो प्रदेश केँ कीड़ा चाटि जायत। दूधवला धान केँ कातिक मे झड़कबाहि लागि जायत। कोजगराक मखान मे फोंका नहि, किर्रीए-किर्री भेट' लागत। बहिनदाइक चङेरा सँ साम-चको ढनमना-ढनमना खस' लगतनि। बटगवनीक भास टूट' लगतनि आ सगर बारी, आङन, दलान मे चुगिला बौआय लागत। बहिनदाइ सभ कनतीह—भैया यौ भैया! आ भैया सासुर मे मर्दानगी देखौलाक उपरान्त शान सँ फोंफ कटैत रहताह।

जखने बिखाह हवा बहतै/बाबा पराती मे अपन ल-चारी रेघाय लगताह। मन्डिलक घंटी बजौतीह चारि बजे भोर मे सिंगियावाली मसोमात—निर्मालाक बेदी कहिया गड़तनि हे भोलानाथ? आ भोला निचैन सँ दुग्ध-स्नान करैत रहताह।

•

1993 ई.

नानीक कविता : एक

जे पनपथिया मे गेनहारी खोँटैत छथि आ पिरही पर अरिकोंछक लोड़हा सटैत छथि/जे स्वयंवर सुना क' आ समदाओन रेघा क' पाथरोक करेज दड़कबैत छथि/जे टकुड़ी सँ मलसी मे जनउक सूत काटि, छोटकी अणाची मे भरैत छथि/एकचुल्हिया पर खदकैत घौकाक झोड़ मे रही मथ'वाली-से नानी हमरा बड्ड पसिन्न पड़ैत छथि।

जे बाट परहक गोबर केँ लात लगा रिजफ्फ क' धनउसना टीन मे भुस्सा झोंकैत छथि/जे अरिपन आ तिलकोरक पिठार धरि बन' लेल तैयारे रहैत छथि/जे सतनरैन-पूजाक आरतीक टेमी बनैत छथि/नातिनक महफा उठैत तामा मे सोहाग मथ'वाली-से नानी हमरा बड्ड पसिन्न पड़ैत छथि।

से नानी सप्ता-विप्ताक कथा कहैत, रोहीदास केँ माछक पेट सँ बहार करबाक लेल नह सँ नहसूर चीर' लगैत छथि/गाइक थड़िक निमेरा करैत सलहेस केँ जनार खुआब' लगैत छथि/मोसरामनीक कथा कहैत दगनियाँ-पाबनिक टीस विरोध' लगैत छथि/लेरायल-पोटायल नातिन केँ छाती मे सुटकाब' वाली—ओ नानी हमरा बड्ड पसिन्न पड़ैत छथि।

कतओक मन्वन्तर सँ नीम-भाँटा आ हुड़हुड़क छौंक ले हमर जीह पनिआयल अछि नानी। खड़ना आ पड़नाक कठिया-लाड़निक अर्थ के बुझाओत हमरा? डोराडरि मे लहसूनक जावा गाँथिक' दसमी मे रछिया देब'वाली आ बाकसक पात-भाँटिक मूड़ी पीसि क' खुरचन मे पियाब'वाली हमर नानी! अहाँ दरदमेदाक रस पीबि क' कत' लटुआयल छी? अहाँ गोठुल्ला मे किए बैसल छी—की भेलए नानी?

•

1994 ई.

नानीक कविता : दू

पोरोक लत्ती लतरबैत छथि नानी, चार आ टाट पर। हुनका विश्वास छनि—लत्ती लतरायब पालि बढ़ायब थिक। एक सँ पलटायब थिक एकैस। अज्ञानता मे कौचर्य करैत पौत्रक अन्धविश्वास आ अपना विश्वास मे बूझल छनि अन्तर हुनका। एक पुश्त लगबैत छै, कए पुश्त भोगैत छै, तकरा धर्म-पाँती मानैत छथि नानी।

खुरपी ल' क' जड़िक माटि केँ भुड़भुड़ाह बनब' लगैत छथि नानी। हुनकर टेढ़-बकुली डाँड़क ऊर्जस्विता अनरनेवाक गाछ बैसब' मे तल्लीन भ' जाइए। ओ भाँटा आ कोबीक जड़िमे पानि द' रहलि छथि—जेना गाया-गंगा मे पितर केँ तृप्त क' रहल होथि।

लत्तीक मादे सौचैत नानी खोपड़ी मे एकान्त-वास क' रहल छथि। नै-नै, ओ बेख-बुनियादि लेल सिमरिया-मास क' रहल छथि। ओ तीन पीढ़ी केँ लतरा रहल छथि मचान पर—खीड़ाक लत्तीक सहारेँ। विष्णुपद जेबाक इच्छा नहि छनि शेष। पूतक हाथेँ फल्गुक बालु पर नहि चाहियनि पिण्डदान। एकादशी-यज्ञ आ मुक्ति-कामना शेष भ' गेल छनि। लतरए चाहैत छथि बरु कोनटोक टाट पर। परोड़, फूँटि आ गुरमी बनि रोपाय चाहैत छथि, कमलाक बालु पर। अल्हुआ-लत्तीक टोनी बनि दर मे खसबाक उत्कट तृष्णाक नाम नानी थिक। नहि चाहियनि हुनका अल्प वा पूर्णविराम। पुनः पुनः खीड़ाक बतिया बन' चाहतीह। अमरलत्ती जकाँ लतर' आ लतराब' चाहतीह जन्म-जन्मान्तर धरि। अपन यौवनक दोहारा गेना दैत रहैत छनि सपना मे हुनका झलझली। एकटा लतरैत आकांक्षा पचौने नानी—ने तँ संज्ञा थिकीह, ने सम्बन्ध। ओ सर्वनाम, विशेषण आ क्रिया थिकीह।

अदौकालीन अवधारणा—एकटा निरंतरताक अभिज्ञान थिकीह नानी। हुनके सँ आरम्भ होइछ जीवनक प्रतीकवाद। व्यक्ति सँ भिन्न —एकटा समष्टि थिकीह नानी। हुनकर हाथ, पयर आ धनुष्टंकारक रोगी सन ऐंचल, मुदा हवाक संग नचैत काया—एहि प्रतीकक वस्तुगत सत्य थिक।

•

1994 ई.

सूर्जक सन्धान मे

हमसभ निशिभाग रातिक घुप्प अन्हार मे आँखि फाड़ि-फाड़ि देखैत-देखैत प्रायः बौआय लगैत छी सम्मोहन मे—अपना गामक निसोडंड रस्ता पर। ई कुहेस-कालिमा एकपेड़िया केँ तोपने किए अछि? कहियोक विक्षुब्ध कविताक बिम्ब बनल, हमसभ सुतलो मे दाँत कट-कटबैत/आजुक विक्षिप्त कविता बनबाक लेल अभिशप्त जिनगीक आँखि सँ उलूक जकाँ कालिमा चिरैत-चिरैत, अकाश मे उड़' लगैत छी। प्रक्षेपास्त्रक गति सँ, झपट्टा मारैत बादुर जकाँ। अलग-अलग कालखंड मे, डाक-बम जकाँ अपस्याँत, अनगनित मनुक्ख पूब क्षितिज दिस, सूर्जक निन्न तोड़बाक लेल पराध्वनिक गति केँ फुसियबैत, निरंतर अपना पाँखि पर नंघने जा रहल सागरमाथा।

जकरा बादुरी पाँखि बुझयलैक कम जकाँ, से राना माइक हथउट्ठा सूप बान्हि लेने अछि अपना-अपना हाथ मे—तकरा सूर्ज केना नहि चिन्हताह? ओ तँ हुनकर राना माइक भोग लगाओल ठकुआवला सूप थिकनि। तेँ सूर्जक सन्धान मे जाइत असंख्य सूपक पाँखि-युक्त विक्षिप्त मनुक्ख वस्तुतः विक्षिप्त मनुक्ख नहि थिक। विक्षिप्त अछि, धरतीक कोनो अव्यवस्थाक कारणेँ। अव्यवस्था जे जायज बाज'वला जीह केँ विक्षिप्त कहि ओकर धार केँ भोथेबाक प्रयास करैत अछि।

तेँ आजुक विक्षिप्त काल्हुक पूर्ण सामान्य हेताह। से अछि अवश्यंभावी ठीक ओहिना, जेना परसूक सामान्य काल्हुक विक्षुब्ध बनि गेलाह। ठीक ओहिना, जेना काल्हुक विक्षुब्ध आजुक विक्षिप्त बन गेलाह। तहिना आजुक विक्षिप्त, जे एखनो पह फाड़बाक सन्धान मे, पूब क्षितिज दिस लपकि रहल छथि, नवोन्मेषित व्यवस्थित संसार मे स्वयमेव पूर्ण सामान्य व्यक्तिक मोहर लगबा लेताह अपना-अपना पीठ पर—सेहो ततबे अछि अवश्यंम्भावी।

रातुक अन्हरमारि मे प्रायः किछु बादुर बिजलीक तार मे सटिक' तिरोहित भ' गेल करैत अछि। मुदा तैओ बादुर सभ राति क' उड़नाइ कहाँ छोड़ि दैत अछि? अन्हार मे आँखि गुराड़ि-गुराड़ि ताकब हमरा लोकनिक मूल -भाव

आ संघर्ष-चेतना थिक। अपना-अपना बिछाओन पर बिसनाइत पूब क्षितिजक यात्रा लेल आ एवंप्रकारेँ जागल सूर्जक सन्धान लेल प्रकृतिक नियमाधीन एक-एक उपादान जकाँ, मनुक्ख अपन मूलभाव केँ चौबीसो घंटा हवा देबाक लेल मूलभावक नियमाधीन अछि।

कोनो आश्चर्य नहि, भिनसर मे तार सँ लटकल कोनो बादुर जकाँ, हमरा लोकनि ब्रह्मस्थानक पीपड़क ठाढ़ि सँ लटकल होइ। आँखि हो उनटल आ सिट्ठी बनि गेल हो देह। मुदा मुइलो पर ठाढ़ि छोड़ि नीचाँ तँ नहि खसि पड़ब! तार तोड़बाक विश्वास मे, हवा मे झूलैत बादुरक लहास जकाँ, हमर सबहक लटकल आ झूलैत लहास प्रमाण रहत एहि बातक, जे कहियो-ने-कहियो हम ओइ ठाढ़ि केँ लइये क' खसब नीचाँ।

आ तकर बादो की हमरालोकनि उड़ब छोड़ि देब थोड़बे? जेँ कि अन्हार अपन दुश्चरित्रताक निसाँ मे मातल अछि टंच भ'क', —लोको अपन उड़नाइ त्यागि नहि सकैछ। आ जे एहनो विक्षिप्त स्थिति मे उड़नाइ छोड़ि बन्न कोठली मे चैन सँ ठरड़ पाड़त—तकरा मनुक्ख केना कहब भाइ?

•

1994 ई.

एहेन केना होइत छै?

एक

एहेन केना होइ छै जे कोनो गाम गोठुल्ला बनि जाइ छै, झाड़-झंखाड़ सँ। आ गोठुल्ला केँ लाज होम' लगै छै गामक उघड़ा-भाँड़ स्थिति पर? एहेन केना होइ छै जे गामक घैल केँ आधार देनिहार घैलची/बीड़ा सड़ि जाइ छै आ लोक पियासे बेदनाइत रहि जाइए?

एहेन केना होइ छै जे पाक उघड़ि जाइ छै समाजक/एक-एक तन्नुक-सड़लाहा असघनीक, एकहारा डोरी जकाँ?

एहेन केना होइ छै जे छुतहा रोग खूटक एकता आ टोलक सौम्यता केँ राइ-बाइ क' दैत छै—टूटल गुड़चल्लाक उड्ड-भडंग बन्हन जकाँ?

एहेन केना होइ छै जे गहूमक दाना खेसाड़ीक ओलिया आ ज'क गोलड़ी मे मिझड़ा क' अपन अस्तित्व पर खतरा उपस्थित क' लैत अछि—शुद्ध अतमाक नीक लोक जकाँ?

ऐहन केना होइ छै जे...?

•

1994 ई.

एहेन केना होइत छै?

दू

एहेन केना होइत छै जे सगर बाधक कोखि दड़कि जाइत छै, उत्तरी-ध्रुवक बर्फक चकला जकाँ? गीदड़ आ कुकूर कान' लगै छै एक्कहि संग? चीलहोड़िक झपट्टा आ गिद्धक मसुनोची भेल करै छै एक्कहि संग?
कए-कए रोपनी केँ कमलाक चाटब आ हथियाक बिसुखब—भेल करै छै एक्कहि संग?एहेन केना होइत छै जे दड़िभंगा रेड्डी सँ रंग-बिरंगक कीड़ामारक प्रचार होइतहिं रहि जाइत छै आ गृहस्थक जजात आ कोठी केँ कीड़ा चाटि जाइत छै, एक्कहि संग?

•

1994 ई.

एहेन केना होइत छै?

तीन

एक्कहि संग करेन्ट लागि जाइ छै, कोठा परहक बिजलीक तार मे—बादुर आ फल्लां बाबूक हरबाह केँ? हुनकर जोनक बासडीह आ शमशान-घाटक/रसीद कटि जाइत छनि हुनके नामे, एक्कहि संग? सीलिंग केसक डिगरी आ गरमजरुआ आमक दखलदेहानी भेटि जाइत छनि हुनका एक्कहि संग? से एहेन केना होइत छै जे हुनकर जिरात बाँचि जाइत छनि लाल-झंडा सँ आ एमेलेक टिकटो भेटि जाइत छनि हुनके, एक्कहि संग?
किछुए बर्ख पहिने बिदेस्सर बाबा केँ कमंडलक-कमंडल जल आ निताइ मंडलक घराड़ी पर हर, चढ़ौने रहथि एक्कहि संग? मुदा आइ ओ कमंडल-विरोधी आ मंडल-समर्थक बनि गेल छथि, एक्कहि संग? किछुए दिन पूर्व धरि ओ बाघ छलाह आ कएटा बकरीक सम्पन्न कयलनि गर्भाधन-संस्कार। मुदा आइ बकरीक देहक सोनित आ मासु सुखा गेल छैक। आ भोट सँ एक मास पूर्वहि सँ, ओ कएटा बाघ आ बकरी केँ पियबैत छथि पानि, एक्कहि संग? से एहेन केना होइत छै जे...

•

1994 ई.

त्रासदी

राति क' अबोध प्राची बैलून केँ पंजिया क' सुतैए। भिनसरे हावा निकलल रहै छै। फुलाइत किशोरी कौड़ी खेलाइत अछि। हाथ रहै छै, फोंका-मुट्ठी बारह। भाग्य-भगवानक रमझौआ मे बहुत रास विद्रोह-ताप आ संरचनाक उत्साह सेरा जाइत अछि। अनेक कविक निजी जीवन मे कविता के सार्थकता हेरा जाइत अछि। आ कथ्यक अन्तर्विरोध मे कविताक शीर्षक घेरा जाइत अछि।

•

1994 ई.

राजधानी कत' अछि?

जत' मलेरिया-विभाग सक्रिय हो आ मच्छड़दानी बिका रहल हो/जत' रोगी सँ मलेरिया-वार्ड भरल हो आ 'मच्छड़-मुक्त-सप्ताह' पर चलि रहल हो विचार-गोष्ठी/जत' नगर-निगम मे बँटैत हो बोनस आ मच्छड़ निचैन सँ डी.डी.टी. चटैत हो, मधु जकाँ। ततहि अहाँ बूझब जे राजधानी आबि गेलहुँ।

•

1994 ई.

घूर मुद्दइ थिक

घूर केँ राजसिंहासन बुझैए पैर आ तकर सुख सुआदबाक लेल तिरपेच्छन करैत रहैए। गरमी सेदबाक लेल अपस्यांत हाथ आगि केँ अपना-अपना आगू मे खोड़बाक लेल, बिना कोनो टिकाउ खोड़नाक व्यवस्था केने बनरभौकी खेलाइए। सन्ठी आ कोढ़िलाक तन्नुक खोड़ना प्रायः टूटि जाइत छै, आ हाथक आगि-सुख पर पानि पड़ि जाइत छै। मोन बहटारबाक लेल तखन कोनो मौसमी सरकारक बेमोसिम पतनक समाचार केँ कठखोधी जकाँ खोध' लगैछ मुँह आ अपन लोल थकुचाब' लगैछ। नाक केँ सड़लाहा काठक भ्रम-गंध आ जीह केँ सड़लाहा काठक भ्रम-स्वाद सम्मोहित केने छैक। एकटा आत्मघाती आत्मश्लाघा मे मगन, एहने भोतिआयल आ घूरक मोह सँ मातल पैर, घूरक परिवेश मे नूड़ि तनैत रहैए।

घूर किछु नहि, खाली व्यामोह थिक। देह केँ कए कल्प सँ जाड़ लगैत रहलैए। कोनो पीठ केँ घूर कहियो गरमा नहि सकलै। सुखक संपूर्णताक अंशदाताओ नहि भ' सकलै। मोहक नागफाँस मे गछाड़ि क' घूर हाथक रोजगार विथुत कयने छैक आ हाथ घूरे केँ नीक रोजगार बूझि रहल अछि। ओकरा अहदी बना क' घूर ओकर मूर्खता पर हँसल करैए। घूर बुझैए जे ओकर सेवक सिताहल अछि। हाथ बुझैए-ओ घूरेक सहारेँ गरमाएल अछि। अपन अन्तर्ऊष्माक अभिज्ञान सँ अनजान हाथ/साधनहीन-अकान हाथ-आगि कोना धधकाओत? सिताहल खढ़, सिताहल मोन, सलाइ मसुआयल-उपक्रमक अभाव, काठी टूटबाक डर-बारुद झड़बाक डर, सकदम भेल-यातना भोगैत देह, अपन देहत्व बिसरि सेरा रहल अछि जीवन केँ।

घूर केँ यथार्थ बूझि, घूर लग, घूर-बहूर करैत अछि पैर। घूर अपन यर्थाथ बुझैत देहक फोंकिलापन पर हर्खित होइत रहैए। दुष्ट घूर देहक गत्र-गत्र मे नोचनी बढ़ौने जा रहलैए। माथ नोचनीक कारण अपन कपार केँ बुझैए आ घूरक जहरताप केँ भोर-साँझ चमड़ी आ सोनित मे पचबैए। माथ नोचनी सन मीठ माहुर आ महामारी केँ, मात्र साधारण संक्रामक बेमारी बुझैए।

विडंबना—मोन नोचनी सँ मुक्ति चाहैए।

विडंबना—देह घूर केँ सेब' चाहैए।

विडंबना—माथ केँ अपन बुधियारीक दाबी छैक।

विडंबना—माथक अज्ञता पर घूरक रछस्सा ठठा रहलए।

घूर टॉल्सटायक एकटा कथाक शैतान थिक। माथ ओही कथाक बुड़िबक किसान थिक। मुदैय्या शैतान नितरा क' मोनक पतनशील प्रवृति केँ हवा देल करैए। अपन नकटी खोधैत, घूर तर बैसल माथ-डेन पकड़ि क' बलजोड़ी उठौनिहार अपन हित केँ मुद्दइ बुझैए।

माथ केँ बूझ' पड़तैक जे आब घूर तोपि मटियामेट करबाक आ हर-पालोक ब्योंत करबाक बेगरता आबि तुलायल छैक। माथ केँ कह' पड़तैक टॉल्सटाय सँ जे ओ लिखथि फेर सँ एकटा सुनटा कथा आ देखाबथि शैतानक अन्तिम पराभव। देखाब' ईहो पड़तनि जे कोनो वोदका कोनो माथ केँ भ्रष्ट नहि क' सकैछ। केहनो लोभ मोन केँ पतित नहि बना सकैछ। अपन पुरान कथाक विकृत यर्थाथ केँ हुनका खारिज करए पड़तनि आ नव कथाक संभावनाक-करए पड़तनि खोज...

से घूरक खलनायकी केँ कहिया बूझत-नाक, मुँह, जीह, हाथ, पैर देह आ माथ?

•

1990 ई.

पिरथीक परिक्रमा

एक

किछु भागलपुरी आँखि, जे लाल टकुआ सँ कयल गेल छल निपट, आँखि फाड़ि-फाड़ि ताक' लागल। लोक अकचकायल तँ आँखि सभ बाजल—आँखि सँ अँखुआ जन्म लैत छै। कोनो अँखिफोड़ा कीड़ा जखन डंक मारि ककरो डिम्हा फोड़ि दैत अछि—ओ डिम्हा अपन सम्पूर्ण ज्योति अपन कामिनीक गर्भस्थ डिम्हा केँ परावर्तित क' दैत अछि आ जीवन-भरि अपना रुपसीक ओही गर्भस्थ डिम्हा सँ ज्योतित रहै छै। जीवन-संघर्षक वर्णपट पर ज्योति-परावर्त्तनक ई क्रम आदिकाल सँ अनादिकाल धरि चलिते रहै छै।

दू

किछु दम जे भोपाल आ चेरणोबिल के परमाणु विकीरण मे टूटल छल, तकर नाड़ी आ नाक गतिमान भ' गेलैक। विकृत वर्त्तमान केँ भेलैक जे सद्यः 'भूत' ओकरा खेहारि रहल छैक। यैह ले, वैह ले, फुर्र भागल। टुटलाहा दम सभ हकमैत रहल। मुदा विकृत वर्त्तमान केँ धरा-इन्द्रलोक मे जयन्त केँ खेहारैत तीर जकाँ खेहारैत रहल। ई खेहारा-खेहारी आदिकाल सँ वर्त्तमान धरि आबि रहल अछि आ अनादिकाल धरि चलिते रहत।

तीन

एतबा होइते छलैक कि भू-संघर्षक टघार सभ पह बनि-बनि बह' लागल। मटमैल पानि नहि, छोटानागपुरक माटि जकाँ रंगीन पानि... लोक आश्चर्य केलकःई आली रंगक बाढ़ि! हिमालय सँ तँ उजरा मटमैल पानि अबैत छल...?

बाढ़ि मुसुकिआइत बाजल—हम कत्तहु सँ आबी, बात एक्के छैक। असल बात छै, रंग-रुप बदलि-बदलि आयब।

चारि

लोक आँखि चियारि-चियारि देखलक—आली रंगक विशाल जल-राशिक छाती पर दहाइत रंग-बिरंगक मोहर लागल स्टेनगन केँ, रेत एकटा बडक़ा भोकाँड़ बना चप द' गाड़ि देलक। अरबों उठि गेल लाल सागर केर गर्भ मे आ जलराशिक छाती पर असंख्य गुलाबवर्णी कमल फुला गेलैक। सूर्ज ओकर पंखुड़ी सभ केँ बनब' लागल आर भकरार। लोक तराटक-तराटक, ई की भेल, ई की भेल? लोक आब आली रंगक जलराशि नहि देखैत छल। लोक खाली आली कमल, कमलदह देखैत छल।

पाँच

बहुत रास हाथ उड़ि क' आयल। ठाढ़ लोकक पाँखुड़ पर दू-दू टा हाथ जुटि गेल। सभ चरिहथबा भ' गेल। बहुत रास पयर उड़ि क' आयल। ठाढ़ लोकक डाँड़ में-दू-टा पयर जुटि गेल। सभ चरिगोड़बा भ' गेल। लोक छगुन्ता मे—ई की भेल, ई की भेल?

कोनो हाथ नागासाकी-गाजा सँ आयल छल। कोनो पयर थ्येन अन मन, ल्हासा सँ आयल छल। कएटा निर्दोष हाथ-गोड़ केँ बम आ उर्दी पठौने छल। कोनो हाथ चतुर्थीक लहठी पहिरने छल। कोनो हाथ कनियाँ-पुतरा केँ पकड़ने छल। कोनो पयर ऑफिस सँ आयल छल। कोनो पयर कदबा सनायल छल।

सभ हाथ-पयर एकाकार भ' गेल। चरिहथबा/चरिगोड़बा लोक सभ बाढ़िक छाती पर फुलायल गुलाबवर्णी कमल सभ केँ कल जोड़लक आ पिरथीक परिकरमा करए चलि देलक। ओ सभ जेम्हरहि द' जाइत छल, हैमलिनक बच्चा जकाँ, झुण्ड अपनहि पछोड़ ध' लैत छल। विकृतिक प्रहरी सभ अस्त्र फेकि, अपन-अपन लंक ल' पताललोक भाग' लगैत छल।

ओ पयर सभ, ओ हाथ सभ, ओ लोक सभ/सगरो पिरथीक परिकरमा मे, आइयो अछि लागल।

•

1991 ई.

हमरा कोनो टा परबाहि नहि अछि

जाधरि बड़द केँ भेटैत रहतै अपुआङ आ हाड़ा/टाट पर लतरैत रहतै पोरो, जाधरि मज्जर मे रस, धान मे दूध भरैत रहतै आ टूनाक गरदनि मे टुनटुनाइत रहतैक घंटी— हमरा कोनो बातक कोनो टा परबाहि नहि अछि।

कमलाक पानि ने तँ थोभाइत अछि आ ने ओड़ाइत अछि कहियो। तुलसीक गाछ कहियो निछच्छ ठुट्ठ नहि होइत अछि पतझाड़ मे। बड़हाड़ावाली भौजीक आँचड़ तरक दीप केँ, कहियो मिझा नहि पबैत अछि बसात। तेँ हमरा कोनो बातक कोनो टा परबाहि नहि अछि।

पैकार कीन' आयल छल हमरा बिड़इक माछ, मुदा गाम स्वयं जल-गरम लेल कटिबद्ध छल हमर। डीहक गाछीक मोहु कीन' आयल छल घोड़हिया। गाम मोहुक तेल बेमाय मे औंसबाक लेल कटिबद्ध छल हमर। हमरा गामक एक -एक टा ढिमका माथ उठा क' चिकरल— कोनो पैकार पयर जुनि राखय एहि गामक सिमान मे। अपना गामक डोम-कुम्हारक हाथेँ बिकौला पर गर्व अछि हमरा। जाधरि पूरा इलाका डोम-कुम्हारक हाथेँ बिकाइत रहत— हमरा कोनो बातक कोनो टा परबाहि नहि अछि।

चोर एखनहुँ डेराइए पहलमान बाबाक दुहत्थी सँ। घूर आ कुकूर एखनहुँ जगैत अछि, राति-राति भरि हमरा गाम मे। अमरहिया-राति मे बगबार एखनहुँ बसुली पर गबैए जीवन-राग। पसर मे महींस चरबैत जागे खबासक परातीक टाँस एखनहुँ भारी पड़ैए— हरिओम शरणक भजन पर। कोनो टा दुरभिसंधिक विरुद्ध, खढ़ियाक कान चौबीसो घंटा ठाढ़े रहैए। हमरा गाम केँ मृत घोषित केनिहार बजारक महाजन मधुमेहिया भ' गेल अछि। सुनैत जा हौ कलेन्डर छपनिहार बेपारी सभ! इच्छा हो तँ, सभ तिथि केँ अमावश्या बना दहक एक-एक क'।

मुदा जाधरि एकोटा भगजोगनी, अन्हरिया राति मे चमकैत रहतै —हमरा कोनो बातक कोनो टा परबाहि नहि अछि।

•

1995 ई.

हे लजबिज्जी दाइ

अहाँ अपन काँट बचा क' राखू। निर्ल्लज्ज पयर बेर-बेर अहाँक शीलभंग क' अहाँक संवेदनशीलता केँ नाश कर' चाहत। अहाँक लजाएल हाथ तकरा काँट नहि भेंसि सकैए। लजाएल देह अपने काँट-काँट भ' जाइत अछि। तेँ उतारि लिय' लाजक गहना आ भेंसि दीय' काँट शीलभंगी पयर केँ।

•

1995 ई.

मोगलक हींग

मोगल के हींग मे बड्ड दाप होइ छै—से भ्रम अहाँ जुनि पोसी यै मामी। बड़ैया-पोरोक झोड़ कहि देत—मोगलिया हींगक पावर यै मामी।

•

1995 ई.

जाफर आ नोन

जाफर जाफर आ नोन नोन छिऐक। बच्चा-बच्चा आ माता माता छिऐक। आब जानय माय-बाप, जे बेटा केँ करु तेल मे जाफर घंसिक' चटेबाक छै वा बेटी केँ नोन चटेबाक छै? सोइरीक गंध तँ दूनूक एक्के रंग होइ छै।

•

1995 ई.

सरकारक परिभाषा

तुलसीक पात केँ भूआ चाटि जायत। नीमक गाछ सँ छागर जकाँ खलड़ी ओदाड़ल जायत। गहूमक बीया आ यूरिया खाद केँ नाइट्रोजन-चक्रवला 'पेटेन्ट' बैक्टीरिया भकोसि लेत। बिजलोका आ सूर्यकिरण केँ नक्षत्र-युद्ध-प्रणाली सोखि लेत। पर्णहरित केँ पच्छिमा घोड़हिया सभ 'डंकल-डंकल' रटैत-रटैत, डंक-ल' क' भेंसत आ परागकण केँ गर्भाशय सँ सिसोहि 'गाट-गाट' क' गटकि जायत। खोपड़ी-एकचारी मे साँझक-साँझ 'इथोपिया' बितैत रहत आ नव-अर्थनीतिक प्रारुप बनैत रहत, शताब्दी-इस्प्रेस मे।

•

1995 ई.

गुरीच

गुरीच सुरुचि बढ़ेबाक एकटा मङनियाँ दवाइ थिक। एकर मावा पेट केँ हेमाल क' दैत छै आ सोनितक जहरमिठास केँ दूर क' घा-घोसक निमाइन क' दैत छै। एहि अभिज्ञानक अछैतो, हम सभ गुरीचक काल्पनिक तिक्तताक कल्पना सँ डेरा क' खाली पेटेँ छाक नहिं भर' चाहैत छी। हम सभ ज्ञानपापी छी। द्वन्द्व केँ जीबैत बुद्धिजीवी जकाँ।

•

1995 ई.

मोसब्बर

मोसब्बर के गुन हमर बाबू आ बाबा सुनने हेथिन। हम खाली नामे टा सूनल अछि। तेँ मोसब्बर यथार्थ रहितो, हमर कल्पनाक अतल गहिराइ मे जीवाश्म जकाँ दबायल अछि। पहिने कहाँदन मनुक्ख हींग... छल, मोसब्बर ...छल। भविष्यक जीवाश्म-युग मे, मोसब्बरे सँ मनुक्खक अस्तित्व चीन्हल जायत—तकर प्रसन्नता आ चिन्ता अछि हमरा।

•

1995 ई.

महापूर महींस

आठ दाँत नहि, महापूर भ' गेल अछि। ओहायत केना, ठेंठ-बहिला भ' गेल अछि। कहाँदन गुजराती सिंघ छलै, मेनियाँ पारी भेलै। पातर चमड़ी छलै। सुनै छी, डेली एकटा क' नमरी छलै।

एतनी टट्टा खूड़ छलै। भरि पाँज थन छलै। एक गंडा सिंगापुरी केरा, थन मे लटकल छलै। मुदा कहियो डोल नहि भरलै। सबकिछु भ्रम छलै। सेहो भ्रम इतिहास भेलै। विकृति आ बेमारीक विकास भेलै। जीह सर्वसोख भेलै। खूड़ मे खंझा भेलै। एक के बाद एक, बेमारी सहरगंजा भेलै।

नाङरि मे चिड़चिड़ी लागल। थन सुखा क' बुट्टम बनि गेल। सगर देह परजीवी चिहुँटल। डाँस कटैत, जोनि मे कौआ लोल मारैत। पोसनिहार केँ कसाइक प्रतीक्षा। देखनिहार केँ असाइक नकघोंकची आ अपना -आप केँ डकहाक प्रतीक्षा।

डिड़िआइत, सड़ल-गलल तांत्रिक जकाँ। रिड़ियाइत-बातरसी वृद्ध पहलमान जकाँ। मुक्ति-कामना, कालीघाटक वृद्धा वेश्या जकाँ। आँखि पथरायल, मिथिलाक थाकल-हारल कर्मकाण्डी जकाँ।

क्रान्ति-प्रतीक्षा? —भारतीय बुद्धिजीवी जकाँ। एहि महापूर महींसक गोंत आ छेरकट सँ, आब नकमनि भ' गेल भाइ।

●

1995 ई.

तीत—राग

मधु-ऋतु आयल तँ फूल फुला गेल। श्रावणीक यामिनी मे फूल मौला गेल। पान आ टेमी केँ टीस रहि गेल। दुरगमनियाँ जीप मे कचबच कचबचिया। 'माला-डी' कीनू, तँ फीस रहि गेल। 'यामिनी' मे 'मधु' नहि, कामिनी केँ काया नहि। 'यामहा' मे तेल कहाँ, 'इस्स' रहि गेल!

•

1995 ई.

मनकामना-मायक घ्राण-तंत्र

दद्दा जखन पौसक कान मे सँ अठौड़ी छोड़ा क' घूर मे द' दैत छलखिन, तँ फट् सँ उठि क' चिड़ाइन महकैत छलै। माय कहै छलखिन—ऊँ.. .हूँ...हूँ... की महकलै?

दद्दाक आनल गड़इ केँ जखन घूर मे पकबैत छलइ मनकामना-दाइ, माय कहैत छलखिन—अयँ गे, इछाइन महकै छै, कि मसुआइन?

भैया अपन अपरसवला तरहत्थीक छलड़ी खोंटि-खोटि क' जखन घूरा मे दैत छलखिन, माय कहैत छलखिन—बाउ हौ, की जरै छै?

मुदा अतर-सुन्नरिक सीनाक मासु जहिया बरका-बरका क' खसौलनि बौआ पलंगवला घर मे, माय केँ ने तँ चिड़ाइन महकलनि आ ने मसुआइन। एना मनकामना मायक घ्राण-तंत्र मरि किए गेलनि?

•

1995 ई.

अवारवला पोठीक पेट अण्डा सँ लदबद अछि

टेङराक पेट अण्डा सँ पीयर कपीस अछि। अवारवला पोठीक पेट अण्डा सँ लटकल अछि लदबद। डोकाक पेनी गुजगुज अछि, सिम्मरक तुम्मल तुर जकाँ। आ चेल्हबा-चन्नी चलमल-चलमल, छलमल-छलमल केने अछि वातावरण केँ। लद्बद टाभ नेबो, डमरस लताम आ झबरल अनरनेबा जकाँ, सम्पूर्ण परिवेश 'गभिनायल' किए अछि भाइ? बुझाइए—संक्रमण-काल आब ढरान पर आबि गेल अछि, उपयोगिता-ह्रास-नियम जकाँ।

•

1995 ई.

अन्तरिक्ष जकाँ अनन्त अछि मनुक्खक परंपरा

शंका : एड्सक परंपरा थिक हड़प्पाक मुर्दाकरण-चक्र। तकर सांघातिक-संक्रमण सँ गलि रहल अछि गोट-गोट क' मिथिलाक तरेगन, चन्द्रमाक भिंडा आ सप्तर्षिक भग्नावशेष। आकाश-गंगाक विध्वंसक गर्भस्थ-लक्षण...रौदी, बाढ़ि, भुवकंफ, अगिलग्गी, जन-युद्ध...

ध्रुवतारा कतेक ध्रुव रहत? डंडी-तराजू कोमहर झूकत? अरुन्धती कतय जयतीह? संहार मे उसाहल 'स्काइ-लैब' वा 'स्टार वार' केँ रोकनिहार वा दिशा मोड़निहार के हैत?

समाधान : अनन्त अन्तरिक्षक जीवाश्म मे संस्कृति-प्रजनन-क्षमता होइ छै। दिशांश लागल धूमकेतु आ स्काइलैबक दिशा मोड़निहर वैज्ञानिकक जन्म होइते रहै छै—हड़प्पाक साड़ा परहक अनेरुआ तुलसी-गाछक संग। फेर वैदिक जलढ़री मे स्थापित सैन्धव योनि आ लिंगक पूजन करैछ प्रकृति आ पुरुष। आ नङटे नचैत सिन्धु-बालिका विधि-व्यवस्था सँ निचैन भ' क' दैछ निशा-निमंत्रण। अनन्त होइ छै मनुक्खक परंपरा—धनीक अन्तरिक्ष आ चट्टान मे सुरक्षित जीवाश्म जकाँ/मृत्युहीन।

•

1995 ई.

सभ्यताक विकास

रोम मे दास केँ टमटम मे जोतल जाइत छल। नीरो सयटा दासिनक 'लाज' पर चलि क' राज-सिंहासन धरि पहुँचैत छल। वैदिक दास जाँत पिसैत छल, हर बहैत छल। बीसम सदीक कलकतिया रिक्शा मे जोतल मनुक्ख, धोधि-पोनक जरब सँ, एक-एक हाथक जीह नमरबैत छल। लाज केँ पत्ती सँ चीड़ि, नोन छिटने छल बर्बरता, उनैस सय एकहत्तरि ईसवीक बंगलादेश मे। आइ ओही 'लज्जा' क जीह छपटबाक लेल, लाखो रेतल ईरानी आ अरबी कैंचीक मुँह चुटुर-पुटुर करैए। दारा शिकोहक माथ एखनहुँ, धर्माचार्यक फतवेक नोंक मे गाँथल अछि। वाह भाइ! गौरव करु जे—सभ्यताक विकास द्रुतगतिएँ भ' रहल अछि।

•

1995 ई.

बर्फक लहरि

वाल्टेयरक कलम दमिश्कक पत्ती जकाँ, फ्रांसीसी निरंकुशता केँ खप-खप कटैत छल। बेंजामिन मोलोइशेक गरदनि, अन्ततः फँसरीक डोरी केँ काटिए देलक। सलमान रुश्दी आ तसलीमा नसरीन आइयो संघर्षक शिलालेख लिखिते छथि। मुदा राघवाचार्य आ आरसी बाबूक रौद्र-रस, आइयो बर्फ बनल अछि मिथिला लेल। आ संघर्ष-चेतना, सुषुप्त-ज्वालामुखी जकाँ, गोसाउनिक पीड़ी मे निष्क्रिय, गाड़ल अछि।

•

1995 ई.

चिन्ता आ आशा

चिन्ता अछि— मनुक्खत फतूर किए भेल जा रहल अछि? प्रयास केँ पवन्नी किए लागि रहल अछि? नोनचट आ डाँस टिरफिस किए देखा रहल अछि? बीछ आ तेलिया-साँप ढिपलिस किए मारि रहल अछि? आँखि टिरबीक परदा सँ झँपा किए रहल अछि?

चिन्ता अछि— मोने-मोन गूड़-चाउर फँकैत-फँकैत, लोक केँ पानिदुद्दूर किऐक भेल जा रहल अछि?

आशा अछि— मरीच चिबा-चिबा समाजक बढ़लाहा पिल्ही रुपन ओस्ताज काटि सकताह जल्दीए। माछ सँ खाप गुज-गुज करत। लोकक चौ आ चू मजगूत हैत आ प्रयासक क्रम मे पवन्नी छूटत जल्दीए। फेर भारतीक नूआ आकास मे सुखायत आ दुतियाक चान/भारतीक कंगन पूर्णिमाक चान बनत जल्दीए। डकहाक-पेट मे जायत परिवेशक प्रदूषण, आ उताने-खुड़े निखत्तर मे जायत, भ्रमजालक स्थिति जल्दीए।

आशा अछि— बलजोरी कंठी बन्हनिहार स्थल परहक महंथक संग, साकठ बिल्टू झाक शास्त्रार्थ हैत जल्दीए।

आशा अछि— बलजोरी अनकर कंठी तोड़निहार मँछगिज्जा झाक संग निरामिष कमल मोहन जीक शास्त्रार्थ हैत जल्दीए।

•

1995 ई.

फहराइत पतक्खा

बाँचल अछि कल्पनाशीलता एखन लोकमानस मे। जीवन आ जगत स्थान पाबि रहल अछि— हृदय, माथ आ साहित्य मे। परालोक आ इन्द्रजालक चमत्कार सँ बिजलौका छिटका क' ज्ञानपापी सभ छीन' चाहैछ ज्ञान-पिपासा। मुदा बाबाक गलथोथी सँ हारि नहि मानलक अछि चेतन नाति। 'बाबा वाक्यम् प्रमाणम्'— दिनिआयल फिरैए। डिरियाल घुरैए अतीतक गौरव-बोध! थेथरोलॉजी आ अन्दाजीफिकेशन कान पकड़ि क' उठ-बैस क' रहल अछि।

राजक्षेत्र बढ़ि रहल अछि— कार्य-कारण-सम्बन्धक। अपन-अपन शहथ रहुआ-बुआर केँ भेंस' लेल उसाहने रहैए, चाहक दोकानक अखबार। प्रोफेसरक जेबी सँ निगमन आ अङना मे आगमन भ' गेलए तर्कशास्त्रक। कोनटा टाटक पाछू सँ छूटल शब्दवाण, ठेक्कर भैंसुर केँ घुरा रहल अछि दलान दिस।

परंपराक लोह केँ बीझ आ माटि, करीप-करीप खा चुकल अछि। लाजक नाता घोघ सँ टूटि आ आँखिक मुद्रा सँ जुटि गेलए। आब कोनो गुलाब-सुन्नरिक वस्त्र लाजक लेल नहि खराप होइ छनि। टिक्की नोचेबाक डरेँ महघोड़िया टी.टी.क डेरायब शुरु भ' गेल अछि, कुजरनीक झुँड सँ।
पटपटा रहल अछि ठोर, भनभना रहल अछि मुँह। टूटि रहल अछि परिवेशक जड़ता। हेहरु भेल जाइए कट्टरता। टंट-घंटक शरीर हहड़ि रहल अछि। नंड-भंड भेल जाइए पंजीबद्धता। मतिभ्रम आ व्यामोह छंटल जाइए आ एड्स पसरि रहल अछि कुकर्मीक बीच मे। उठल हाथक संख्या आ उत्साह बढ़ि रहल अछि। टूटि रहल अछि काँख देखार हेबाक ततमत्ती आ करोट बदलि रहल अछि समाज। बुझाइछ, जेना संघर्षशीलताक पतक्खा उड़िया रहल अछि।

•

1995 ई.

से बात नहि छैक आब

तहिया गाम जखन परदेश विदा होइत छल, चूड़ी केवाड़ीक दोग मे अपस्याँत भ' जाइत छल आ दुआरि पर ठाढ़ धोतीक संवेदना आँखि मे झिलमिला क' सुखा जाइत छल।

मुदा आब से बात नहि छैक।

आब कनसोहि लैत कानक पावर घटलैए। कनडेरिया तकैत आँखि आब सोझ भेल अछि। आब दियादानी सँ केवाड़ी बन्न होइत अछि दिनादिष्टी। संवेदना केँ अपन पनिबट ताकि बसोधारा बहबाक अवसर दैत अछि बिलैया-जिज्जिड़।

आ बहुत रास स्मृति द' क'/पाथेय ल' क' गाम विदा होइत अछि परदेश। आङन आ दुरुखा पर कसायल नाथ-गरदामी आब ढिल्ल भ' गेल अछि। तेँ गेडुआक खोल आ पलंगतोशक हीया, आब जुड़ाइत छै, गामक परदेश जयबा काल।

पहिने कहाँदन दलान, डेढ़ बजे राति मे चोर जकाँ, पयर बारि आ खड़ाम हाथ मे ल' आङन अबैत छल। केवाड़ी पर थाप पड़िते पलंगक रोइयाँ भुलुकि जाइत छलैक, झुनझुन्नी सँ झूठ भ' जाइत छलैक पासि-पौआ आ डर सँ पिपड़क पात बनि जाइत छलैक आँचर।

आब मुदा से बात नहि छैक। आब दिनहुँ केँ अपैत नहि रहैत अछि पंलग।

ताइ दिन मे कहाँदन, पोखरिक दाउर कोनो पद्मिनीक भागवत-श्रवण आ रवैणक पारायण चर्च करैत छल। मुदा आब कोनो ओढ़नी पर कोनो मोंछक वक्रदृष्टि पड़बाक चर्च करैत अछि दाउर, दतमनिक थूकक संग। साबिककक काल मे कोनो आत्मा, मधुयामिनीक स्पर्श लेल ताजीवन विगलित-विगलित रहैत छल। आ देवदासी जकाँ क्षत-विक्षत कौमार्य खिड़साक दूध जकाँ, बिना फिटकिरीएक फाटि जाइत छल। मृत बच्चाक मायक स्तन सँ बहैत अनेरुआ दूध जकाँ, अवसाद आत्मा केँ केने रहैत छल बोदरि-बोदरि। आ आब तँ लुचलुचहा गट्टा मोचड़ा जाइत अछि 'मनःस्थितिक द्रौपदी' सँ आ कोकनल

परंपराक परवाहि केने बिना, निर्णय लैत अछि 'सीतापुरक सुनैना' अपना जीवनक।

पहिने पलंग सालो भरि मिसिल बनल रहैत छल आ सभ साल पुरान ट्यूब जकाँ ब्रस्ट होइत छल। पंलग गूँहाँ बान्ह पर जाइत छल भोर-साँझ आ ठेङी लगबबैत छल कुठाम मे। गत्र-गत्र पर चाटी चलबा दैत छलै, पटुआ आ खड़हीक विषधर। लाज बेनंगन रहैत छल आङी बिना आ मोसरामनीक पेटी मे तेल-साबुन झाम गुड़ैत छल।

मुदा आब से बात नहि छैक।

आब कंचनो-कायाक रस-गंध सँ, जुड़ाइत अछि पलंगतोश आ संवेदना घनीभूत होइत अछि केसवला छाती पर। गन्धचाननक सुवास बिलहैत अछि कोबर-घरक जङला। जूड़ा जूड़ाइत अछि गजरा सँ आ सिनेमा-हॉल मे तितली उड़ैत रहैए। आब पयर जाँतब ऐच्छिक विषय थिकैक आ दस नम्मरक संक्षेपण पढ़ल छैक लहठी केँ। दलानक खौंझक विषय नहि थिक, दुन्नू बेकतीक रंगीन फोटो।

तेँ आब से बात नहि छैक।

•

1995 ई.

जखन बाढ़ि अबैत छै....

आँखि चोन्हरा जाइ छै आ अज्ञानता अपना पोन पर तबला पीट' लगैए—जखन बाढ़ि अबै छै। कपार केँ महत्व बेशीए भेट' लगै छै आ घर तांत्रिक अनुष्ठान मे हेराय लगै छै। संस्कार बेलीक भ' जाइत अछि—सूतल बहलमान केँ ढोइत कठहीगाड़ी जकाँ। खलनायकी गृहिणी-गृहपति सँ ल' क' अलसेसियन कुकूर आ पोसुआ पहाड़ी-मूस धरि मे व्यापि जाइ छै। डॉन आ बॉस हुमर' लगै छै घर-घर मे आ रंगीन टी.भी. फाड़ि-फाड़ि क' सिंहवला राक्षस सभ बड़बड़ाय लगै छै— ओनीडा... ओनीडा...! कोनो बेलज्जी विश्वसुन्दरी-क्रीतदासी, माया पसार' लगैए नैपकिन-पैडक— बाढ़ि अबिते देरी।

बेटीक छाती मे सुटक' लगै छै, रोइयाँवला कुकूर आ सोफा मे धँस' लगै छै चर्बीवला धोधि-पोन। जेनरेटर झकझकाय आ हीरोहण्डा गजबजाय लगै छै आ शहरक एक-एक घर क्लब बनि जाइ छै। बाढ़ि मे अनेक पीढ़ी डूबि क' पानि पीबैए, तँ एकादसीक बापो ने बूझि पबैए। ड्राइंगरूम बी.ए. क विद्यार्थीक मधुशाला बनि जाइए आ डिस्कोक नव-नव संस्करण आ ब्लू-फिलिमक नव-नव संस्मरण बी.ए. प्रतिष्ठा जकाँ सस्त बनि जाइत अछि—बाढ़ि अयला पर।

बाढ़ि भी.सी.पी, सफारी-सूट, झिलमिल-पर्दा, गुलदस्ता आ सेन्टक बाढ़ि अनैत अछि घर मे। सनमाइका आ शीशा खूबे उपज' लगैए घर मे। घरक सभ सदस्यक 'प्राइभेट लाइफ' बनि जाइ छै घर मे। कनियाँ-पुतरा, भगवान, पहाड़ी-मूस आदि लेल फराक-फराक कोठलीक इन्तजाम होम' लगै छै। एहना मे बनोतरी तनावक बोन-झाड़ मे सम्बन्ध राति क' हेराय लगै छै आ शरीरक नश्वरताक अभिज्ञानक कारणेँ तकर अधिकतम उपयोग होम' लगै छै। बाढ़ि 'संतुष्ट सुग्गर' केँ असंतुष्ट सुकरात' सँ बेशी नीक प्रमाणित करबा मे पोखरि-इनार एकार्णवा क' दैत अछि। ओ उपभोगक प्रशंसा मे भभाशंख बनि जाइए।

बाढ़ि केँ आकार होइत छै। ओ अमूर्त्त नहि थिक। हाथ, पयर चाङुर नाङरि, दाँत, लिंग, हाथ-हाथ भरिक जीह आ सदच्छन धधकैत

रहयवला उत्तेजना होइ छै ओकरा। ओ हिरो-होण्डा जकाँ उड़ैत अबैए आ मोजैकवला बाथरूमक झड़ना मे नङटे नहाइए। तेँ ओकरा कपड़ा गाड़बाक कोनो चिन्ता नहि रहैत छै। ओकर ड्राइंग-रुम, बेडरूम आ डाइनिंग-टेबुल नाङट फोटो सँ छाड़ल रहै छै। बाढ़ि वस्तुतः सम्पूर्ण-परिवार केँ अपना-अपना कोटर मे कुकूर, बिलाइ आ मूसक संग नङटे रहबाक आदति लगा दैत छै। अहाँ एकबेर बाढ़ि मे चुभुकि लीय'—संवेदनाक स्रोत सोंठि बनि जायत।

साओनक आन्हर जकाँ हरियरे-हरियर सुझाय लागत अहाँ केँ। अहाँ जैवार नोतब, प्रतिष्ठा कीनब आ हाकिम-हुकुमक गाड़ी सँ अहाँक बङली पर साँझ क' पेरिस उतरत। कए पीढ़ी केँ अपना मोने बना लेब सुरक्षित जमा।

घर बनि जायत नासिक आ अपने रङ-बिरङक छापाखाना। कनियाँक धोधि मनीबैग जकाँ फूलि जायत आ एकटा तेजगर मिसिलक रूप मे परिचय बनि जायत अहाँक।

अहाँ केँ बूझल अछि—मटिया-तेल आ गैस-लेस' वला हाथ ककर रहै छै?

बाढ़िक रहै छै।

ओ अदृश्य रहै छै— कारण पुलिसक उर्दीक जेबी मे घोंसिआयल रहै छै। खद्दर कुर्ताक जेबी मे वैह हाथ घोंसिआयल रहै छै। डॉनक पेस्तौल ओही हाथ मे कसायल रहै छै।

अहाँ केँ बूझल अछि- सलवारक डोरी तोड़' वला हाथ ककर रहै छै?

बाढ़िक रहै छै।

बाढ़ि बहुरुपिया जकाँ बाना ध' ध' आ भेष बदलि-बदलि अबैए। गृहिणी लोकनि चुमकी सँ आलमारी, पर्स आ बेलाउज मे, बाढ़ि केँ कोशल जकाँ नुका क' रखैत छथि। वैह बाढ़ि हुनका कोंचा सँ आगि उठबैत अछि आ नैहरवला पलंग सँ खसा सिमेन्ट पर बड़का दैत अछि मोम जकाँ। पहिने मासुक मोटरी बना क' नकार-सिरखार पर्यन्त मेटा दैत अछि आ फेर पोस्ट-मार्टमक नाम पर मोटरीक गत्र-गत्र चिड़बा दैत अछि। तखन फेर एकटा अफ्रीकी राजा जकाँ फ्रीज मे ठंडा क' वा चिता पर पका क' सासु आ वरक थाड़ी मे नरमासु परसैत अछि बाढ़ि। बाढ़ि किछु दिनक अन्तराल पर वर सभ केँ अनेक चतुर्थीक मौका दैत अछि।

बाढ़ि हरदम अपन वाहन सबहक संग अबैए।

बालु ओकर स्वभाव थिक आ महामारी सनेश।
जकरा लोक संस्कृति-संगम बुझैत अछि– से विकृति-संक्रमण थिक।
बाढ़ि एकटा समाज आ सभ्यता केँ चटलक आ पोछलक अछि।
बाढ़ि रामधनी थिक–ओकरा शिकारक कोन कमी?

•

1995 ई.

चिरंतन सत्य

हड़खाड़ा मे फाड़ नहि, कल्टी लागल अछि। बड़दक जीह-हरवाहक कंठ सुक्खल अछि। खेत मे हुरचुंग-करीन नहि, दमकल लागल अछि। चर मे अपरेटर अपस्याँत अछि। बड़द सँ दौन नहि, थेसर चलैए। फागुन मे गुलटेन(-मा) सोहारीक सपना सोचैए। बजार मे वाशिंग मशीन अछि। धोबिघट्टा पर नीरस धोबिक गदहा सूर्य-नमस्कार करैए। प्रमुखक कुट्टीकट्टा मे हाथ गमा झूलन झख मारैए। आ झूलनक एकहड्डा गाय, कसैयाक खाँड़ देखि, सतियाँही के कान' लगैए।

की परिवर्त्तन, कथीक विकास?

अपन हाथ सिरी जगरनाथ—आइयो अछि चिरंतन सत्य।

•

1995 ई.

नवका पानि

मुखिया-पूत टभकी मङबौलनि अछि। कार्यकारिणीक सदस्य सभ गाँजक तुजारति मे छथि। ग्रामसेवक टाइप छाप' लेल जुलहाल भेल छथि। प्रमुख महोदय जालक संग तुरंत जुमबा लेल, वरुण-पुत्र केँ कहा पठौलनि अछि। भरिसक पोखरि-झाँखरि, डबरा-बिरइ, चर-चाँचर, सबठाँ नवका पानि अयलैक अछि— पटना-डिल्लीक गंगा-यमुना सँ।

•

1995 ई.

कीड़ी

हमर फरीक आङन मे देबाल घीचि क' शीशा रोपि देलनि अछि। मुदा हुनक नातिक किलकबाक आवाजक यात्रा केँ शीशाक नोकदार टुकड़ी रोकि नहि पबैछ। शीशाक नोक आ धार देखनिहार केँ, ओकर समतल सतहक कोमलताक अखियास हैब असम्भव छैक।

हमर कलामी फरीक कहाँदन बाध मे अपियारी देने छलाह। मुदा पानि रिसैत-रिसैत अपियारी उम-डाम भ' गेलैक आ सभटा फँसलाहा माछ कूदि-फानि क' बहार भ' गेलैक। चेल्हबा आ बुआरी-लपचीक संघर्ष-क्षमता केँ मोजर पयबा लेल हमर कलामी फरीक दिस तकबाक जरुरति नहि छैक।

'अहाङ' केर ताड़ी सँ डक्क भेल पताइत
हिंस्त्र-भावनाक मसुआइ सँ डम्फ, पेट हँसोथैत
मलेरिया डिपाटक रिटायर बड़ा बाबू सन ढेकरैत
रसटरी आपिसक हाकिम जकाँ टंच जेबी मे
कंठी-माला गसियाक' माला-खट-खट-सीताराम'
केनिहार हमर सर्वभक्षी फरीक
ककरो केसक गवाहीक दही-चूड़ा सरपेट'
मधुबनी-कोट जा रहल छथि
वा कोनो मसोमातक घराड़ी लिखाब' जा रहल छथि?
हुनकर सपरतीभ तँ देखू!

आकास फाड़बाक महत्वाकांक्षा सँ उत्साहित, सिरपंचमीक थुम्हा मे खोंसल दूभि सँ, पक्कड़ क' लेने छथि हमर फरीक। ओ जोभ आ मोथा केँ एँड़ी तर ऐंठ'वला वस्तु मानैत छथि। मुदा राड़ीक पेंपी मे, हुनका तड़बा केँ बेधबाक क्षमता लेसरो किरण सँ बेशी होइत छैक—से नहि बूझल छनि हुनका।

हमर सर्वभक्षी कलामी फरीक अरदाड़ा केँ रन्हुआ आ भदैवा आम सँ ओगाड़ि सकैत छथि। मुदा आड़िक भित्ता पर परसल डोकाक पाइसक सौन्दर्य-बोध, केना किनताह ओ? ओ कनहा नक्षत्र मे उड़ैत खरहोड़िक फुलकीक नयनाभिराम दृश्यक कोमलता, कोन अवगति सँ भोगताह? फड़क

कोखि फाड़ि क' उड़ैत सिम्मरक फूलक इन्द्रलोक केँ, भोगबाक सामर्थ हुनका कहाँ? जीवन आ जगत्क मनोहारी सुख सँ वंचित, हमर फरीकक सौन्दर्य-बोध केँ चटनिहार, ई कोन कीड़ी थिक?

•

1995 ई.

साँझ भरली

साँझ भरली, गामक चौक पर रंग-बिरंगक गुटखा दाँत केँ चिबबैत अछि। चौकक जीहक स्वाद-कलिका केँ सेरड़ करैत अछि काला-पीला आ तुलसी। खोपड़ी केँ पिबैत अछि स्काइ-वाटरक फेन आ एकचारीए-एकचारी हुल-हुल केने घुरैए कुकूर—साँझ भरली।

किछु कालक लेल चौक पर इंची-इंची रइसी सोहरि जाइए—बाढ़िक चुट्टी जकाँ। जेबी मे नाच' लगैए 'बुलकीवाली' आ भाँग-चिलमक झोंक मे 'अलख निरंजन' ढेकरए लगैत अछि, बीस बर्खक करिया दाढ़ी। फेर पीढीक विचलन मे, 'छोटकी' मेला मे हेरा जाइत अछि आ बीटर सकुरी-कट 'बुद्धि-वर्द्धक चूर्णक' स्वाद मे, झखैत कनियाँक बेलाउजक चिन्ता सेरा जाइत अछि।

साँझ भरली, चौक पर गहुमनक डर सँ सिंगरहार नहि गमकैए। पोआक जहरथैली पान-पराग आ शिखर-गुटखा सँ छिलकैत रहैए। देसी पोलीथीन सँ रेतल जीह सँ पनिछक्का चुअैत रहै छै—बसात मे उड़िआइत भालसरिक महमही सँ।

साँझ क', गामक चौक, वैदिक-युगक सोमरस पर लेक्चर झाड़ैए। कुर्त्ताक जेबी सँ चुबैए मृत-संजीवनी सुरा। सिकरेट सँ दागल किशोर ठोर केँ, साँझ होइतहिं लेर चूब' लगैत छै रनरनी देखि। जिन्स पेन्टक सक्रियता सँ फिल्मी धुन कृतकृत्य भ' जाइत अछि आ देह अछैत विदेह भ' जाइत अछि पैजामा-कुर्ता। साँझ क', रमन-चमन, तीन पीढ़ीक सतरह कप चाहक जोगाड़ करैए चौक पर।

अन्त मे, चौक पानक गलोट्ठाक गुमान मे टंच भेल, झूमैत, आङन विदा होइए। आङन मे, चौक मर्दानगीक गर्मी हाथ, लात, मुँह आ डाँड़ सँ निकालैत अछि। दर्जनक-दर्जन चूड़ी भुरकुस्सा होइए आ बँचल-खुचल हेहरु भ' क' ओछा जाइए—असर्ध बोकार पर लारु-बातू भेल।
आ पलंग पर कोकनल ढेङ फलैट भेल रहैए—साँझ भरली।

•

1995 ई.

एहेन दिन कहियो नहि आबय

एहेन दिन कहियो नहि आबय—जहिया अहाँक पिपनी नहि करय लिबिर-लिबिर। आँखि डूबि जाय गंगासागरक मन्दिर जकाँ आ हमरा चिन्हबा सँ साफ नासकार चलि जाइ अहाँ।

एहेन दिन कहियो नहि आबय—जहिया अहाँक कर्णढोल भ' जाय स्पन्दनहीन आ हमर आवाज बगदल समुद्रक हल्ला बनि क' रहि जाय अहँक कान मे।

हम डेराइ छी ओइ दिन सँ—जहिया अहँक स्वाद-कलिका शिथिल भ' जाय। शीतनिष्क्रियता व्यापि जाय रोम-रोम मे आ हमर साहचर्य सेरा जाय उद्दीपनहीनता मे।

एहेन दिन कहियो नहि आबय—जहिया अहँक स्वरयंत्र मे कंपन नहि हो हमर नाम सँ आ प्रेमगीत सुनबाक हमर आकांक्षा नेरा जाय।
हम डेराइ छी ओइ दिन सँ— जहिया संवेदनहीनताक सुकराती जहरप्याली अहाँ सँ नहि पीयल जाय आ संवेदनाक होश मे अहाँ सँ नहि जीयल जाय। तहिया हम की करब मित्तिन?

एहेन दिन कहियो नहि आबय— जहिया हम बनि जाइ सनातनी तिमूरलंग आ अहाँ चुप नहि रहि जाइ दिल्ली बनि क'। तहिया हम की करब मित्तिन?

•

1995 ई.

स्वीकार : रचना+आलोचना

नियतिक धूरी पर नहि अड़कलि छथि पिरथी। अपन ऊर्जस्विता सँ छथि ओ गतिमान। जहिया परिकरमाक सोभाव त्यागि देतीह धरित्री,चाक पर/सुराहीक/पड़बा सन-सन गरदनि आकार लेब बन्न भ' जैत। शंकराचार्यक बैराग्य-सनेश केँ कहियो नहि सकारैत अछि भारतीक ओद्र-चेतना आ/कोखि-संवेदना ताजिनगी लड़ैत अछि। तेँ पिरथीक राति क' जिड़ायब/दिन क' घमायब आ/मोसिम बदलि क' कोइली केँ लोभा आनब-धरित्रीक सार्वजनीन गति थिक।

भारती आमंत्रित करैत छथि कोकिल केँ। कोखिक सौन्दर्य-बोधक अभिज्ञान सँ, जँ शंकराचार्य जगन्सत्य आ ब्रम्हा-मिथ्या केँ एक क्षणक शतांशो लेल सकारैत छथि, तँ धरित्रीक रोम-रोम भ' उठैत छनि पुलकित। आ बैराग्य, संन्यास धारण कए, विभ्रम जकाँ विलीन भ' जाइत अछि ब्रह्माण्ड मे।

प्रशान्त महासागर मे चन्द्रमा खप्प द' बैसि जायत—जहिया अयोध्या आ जेरुसेलम, धरित्रीक कोखि केँ बलत्कृता बनेबाक चेष्टा करए लागत। आकाश-गंगाक असंख्य तरेगन टूटि-टूटि क' बन' लागत उकापतङ आ तोप' लागत धरती केँ, अछिया जकाँ—जहिया मक्का-मदीना आ रोम अजान मे जेहाद चिकरए लागत, सकुरी आ लोहट मे।

तेँ स्वानुशासनक वृत्तचक्रक परिधि मे, अपना अक्ष पर परिकरमा करैत रहतीह धरित्री आ हम सृष्टिक रचना-प्रक्रिया केँ, ओकर सम्पूर्णता मे करैत रहब स्वीकार—अंकुरा सँ अंकुरी धरि।

हम रचना केँ ओकर आलोचनाक संग—भारती आ धरित्रीक कोखि जकाँ— करैत रहब स्वीकार।

•

1995 ई.

राजा आ प्रजा

राज-मैदानक अश्वमेध-यज्ञ मे, लौका जकाँ लौकैत अछि राजमुकुट। चानीक जुत्ता ब्रेख्त के जनरलक बूट जकाँ मचमचाइत अछि। बनोत्तरी जनछवि आ शब्दवाण छिटकबैत अछि अगबे भारभीस। मयूर-सिंहासन झरोखा-दर्शन दैत अछि, बेचिरागी गाम केँ। आ उड़न-खटोला चिबबैत अछि अगबे खलनायकी मुसुकी।

कर्मकाण्ड-विरोधी-फरमानक अर्थ भ' जाइत छै, तांत्रिक अनुष्ठानक ओरिआओन। कोष-कंगालीक श्वेतपत्रक अर्थ भ' जाइत छै, चानीक सूप मे सोनाक ठकुआ।

राज-उद्यानक पोसा बाघ, बेशी भूक'वला कुकूरक हड्डी कड़कड़ा क' दिनभरि असुआयल पड़ल रहैत अछि आ राति क' करैत अछि दुरुस्त-मयूर-सिंहासन मे भेंसायल कील-काँटा केँ।

समस्त प्रजा तिला-संक्रान्तिक खिच्चड़ि लेल टग हनैत अछि, राज मन्दिरक आगू मे आ पंचशाला-नरमेधक भैरवी-पूजन मे स्थापित होइत अछि रक्त-स्नानक परंपरा।

मयूर सिंहासन लेल सम्पूर्ण प्रजा 'यहूदी' आ सम्पूर्ण राज 'जर्मनी' थिक। स्वस्तिका-चेन्हवला मोहर, प्रजा-सुन्दरीक मतपत्र-रुपी स्तन पर, गोदैत अछि गोदना हिटलरी-हिटलरी, विभिन्न कालखण्डक अन्तराल पर।

गादीक ओस्ताजी प्रशिक्षित सूगा सँ विरुदावली
गबाब' मे छैक। गादीक ओस्ताजी राजकीय
इतिहासकार सँ इतिहास लिखाब' मे छैक।
क्रीत कलाकार : प्रायोजित नुक्कड़-नाटक
कवि, कालखण्ड : नाटक आ पात्र
बिक्रू अछि।
राजकीय संस्कृति : राजकीय सभ्यता
देसक गादी नहि : गादीक देस
गादीक विरोधक कल्पनाः तीन सय दूक केस

मयूर-सिंहासन पर : चओर डोलैत, माणिक जरैत
मूनल आँखि, सेरायल मुट्ठी लेल : अपनो देस भदेस।

•

1995 ई.

की-की नहि भ' जाइत छै?

मात्र एकबेर चाभी मे कनैठी देला सँ, की की नहि भ' जाइत छै? खेलौनावला हेलीकप्टर मे न्यूयार्क उड़ए लगैत छै आ विपटा-अभिनन्दन सँ सतासी अरबक सुरसा-परियोजना धरि मे, सीकीक मौनी आ मोथीक पटिया बिला जाइत छै।

मात्र एक चाभी ऐंठला सँ, सिन्धुघाटीक नृत्य-मुद्रावाली सम्पूर्ण नाङट लड़िकी भुक् द' प्रकट भ' जाइ छै, सोनपुर मेलाक गुलाब-थेट्ठरक मंच पर आ बनि जाइत छै कैबरे-डान्सर, हरिहरनाथक दरबार मे।

मात्र एक कुँजी घुमौला सँ सगर देसक जुआन जाँघ आ काँखि मे एन्न फ्रेंच सफाचट्ट पोता जाइत छै आ पूजा भट्टक रंगल-ढौरल यौनांगक फोटो, अध्ययन-कक्षक किशोर मनः स्थितिक शीघ्रपतन करा दैत अछि।

मात्र एक चाभी ऐंठला सँ, सन-सिटी मे बुलैत अर्धनग्न 'सुस्मित'-परी 'वन्डर-विग्स' पर उड़ि क' भुक् द' प्रकट होइत अछि मल्टी-चैनल पर आ माय-बापक नजरि वाम-दहिन छिटक' लगैत अछि। फेर कोनो 'ऐश्वर्य-सुन्दरी' कोनो रंगीन पत्रिकाक टांकल पन्नाक खूजल रहस्य बनि 'लोलिटा' आ 'ललिता' क स्वप्निल नयना मे झिलमिलाय लगैत छै।

मात्र एक चाभी ऐंठला सँ, चन्ना लग सहटि क' आब' लगैत छै। उदार भ' क' रस कुसियार आ केरा के भार लाब' लगैत छै। खाली बौआक मुँह मे 'घुटुक'-टा लेल रहि जाइत छै बाँकी—एकैसम शताब्दीक प्रतीक्षा।

मात्र एकबेर कुञ्जी घुमौला सँ घोड़ा पर चढ़ल एकटा जादूगर अबैत छै जादूक छड़ी घुमबैत/अलाउद्दीनक डिबिया देखबैत/आ वसन्त अनबाक अग्रिम श्रेय लैत—कल्पित स्वर्णयुगक पाँचम बर्खी धरि लेल भ' जाइत छै अलोपित।

मात्र एक बेर कुँजी घुमौला सँ...
की-की नहि भ' जाइत छै...?

•

1995 ई.

आज्ञाडाला पर विषधरक पोआ लोटाइए पिंकीदाइ

जाहि देस मे भरिशुद्ध आज्ञाडाला पर विषधरक पोआ लोटाइए, तत' दिन क' नोरक गंगोत्री सुखाइत अछि आ राति भरि कामनाक ग्लेशियर गलैत अछि। तेहेन देस मे अहाँ अभिशप्त प्रिया किए बनि जाइ छी 'चानोदाइ'?

जखन मोसिम सभ साल बर्फक शिवलिंग बनबैत अछि, अहाँ अपन अम्बार लागल कामना-हिमालयक निर्माण आ एवरेस्ट-विजय किऐक नहि करैत छी बचेन्द्री पाल जकाँ?

मानलहुँ, अपन एहि देसक प्रति हबोढ़कार स्नेह रखैत छी अहाँ। मुदा मेरचाइबारीक तितलीक पाँखि, अहाँ किऐक नहि पैंच लैत छी? आज्ञाडाला परहक विषधरक पोआ केँ भगेबा लेल अपन घोघ किए नहि उठबै छी 'सोनदाइ'? घोघ काढ़ि क' थपड़ी पिटने विषधरक पोआ भागत?
राति क' आकांक्षाक ग्लेशियर गला क' कतेक दिन धरि गंगोत्री बहबैत रहब आ पाँवरोटीक चिक्कस बनि लतखुर्दनि होइत रहब पानदाइ?

दसो दिक्पाल वर्गविहीन जीवन दर्शन आ मूल्य लेल हाक द' रहल अछि कहिया सँ ने? अहाँ लटक ओझरौट आ सोझरौटक बीचक किलीफ जुनि-बनि जाउ गुलाबदाइ। अहाँक मलपूआ सनक गाल आ आमक फाँड़ा सनक ठोर, जे रस ल' ल' अदौ सँ चोभैत अयलाह अछि, तनिका अहाँक ठोर परहक फुफरी आ गालक भफदड़ि सँ वितृष्णा किए भ' जाइत छनि?
जहिया सँ अहाँक तिलिया-फुलिया शुरु भेल एहि धरती पर, अहाँक डाँड़ मिसिल बनल अछि आ डँड़कस मिसिलक फित्ता। अहाँकेँ डाँड़ नहि दुखाइए पानदाइ? रसक प्रतिदान मे रसास्वादन आ रसक अवशोषण जखन दू बात थिक—अपन संवेदना-स्त्रोतक सुरक्षा जूडो-कराटे सँ किऐक ने करैत छी बुच्चीदाइ?

अहाँ आलाप लेलहुँ आ 'विलाप' कयलहुँ। अहाँ पारो, चानोदाइ, सोनदाइ, चतुर्थी रातिक कठुआयलि बुच्चीदाइ, कोब्रागर्ल, कॉलगर्ल, भनसा घरक हरदिआयल हाथवाली सोझमतिया 'वस्तु', अपना वर केँ अपने हाथेँ 'ललका पाग' पहिराब'वाली कनियाँ, मसूरी-देहरादूनक प्रिया आ नहि जानि ककर-ककर सूप महँक भट्टा बनि गुड़कैत रहलहुँ? तीला संक्रान्तिक कमजोर

चासनीक चुड़लाइ जकाँ-भहरैत रहलहुँ।

अहाँक अस्तित्वक अभिज्ञान आ अतीती गौरव-गाथा कत' रहि जाइए, जखन इन्द्रजाल फेकल जाइए अहाँ दिस आ वशीकरण-मंत्र पढ़ि-पढ़ि लंग खुआयल जाइए अहाँक अंग-अंग केँ? अहाँ तुरंते सुर्खुरु किए होम' लगैत छी—होमक समिधा बनबाक लेल?

अहाँ खूब होउ भकरार थलकमल जकाँ। सभ फूलक बनू उपमान आ जुड़िशीतलक चारि बजे भोर मे सासु-मायक हाथेँ अबस्स जुड़ाउ चानि। मुदा फूलदाइ!

प्रतियोगिताक एहि युग मे, चुमाओनक डाला अपना माथ दिस घिचबा लेल आ अपन महुअकक थाड़ी केँ ऊपर रखबाक लेल, हरदम हाथ समधानले राखू। सोहागवती बनब अहाँक इच्छा-अनिच्छाक बात थिक। मुदा 'दीर्घायु' हैब अहूँक जन्मसिद्धे अधिकार थिक।

तेँ आज्ञाडाला पर लोटाइत विषधरक पोआ केँ, वरक गाल सेद'वला रही सँ भगाइए क', अपन स्वीकृति दिय' पिंकीदाइ-रोजीदाइ!

●

1995 ई.

महिखा

हाथी-कुड़वाड़ पर चढ़ि क' हरियाणाक हरियर सपना उतरैए, छठिक घाट पर आ भुसबा मे मुङबाक स्वादक सपना आब' लगैत अछि। मधुबनीक फुलझड़ी सँ छर्रा छिटक' लगैत अछि, पोखरिक चारू मोहार मे आ आकाशताराक विद्रोह फट् द' फटैए, गामक आकास मे।

मुदा पड़ना दिनक विडम्बना! पनिजाब-मेल सँ, सपना विदा होइए पनिजाबक बलड बैंक आ आकांक्षा केँ कतिकी-चिन्ताक पीरी पकड़ि लैत छनि।

लुधियानाक जमीन आ टेक्टरक जरब सतभैयाँक आकांक्षा भोगैए। जाहि सतभैयाँक समाङक डरेँ भदवा केँ पड़ाइनि लगैत छलैक, तकर देहक एक बगेड़ी मासु घटि जाइ छै बटाला मे, आ खालसा-लाइन होटलक थाड़ी मे एकटा तन्दूरी बढ़ि जाइ छै।

मेंहथ आ लोहनाक पसेना भाखड़ा-नांगल मे उतफाल भ' क' बिजली जनमबैत अछि आ रावी-व्यासक छाड़नि बनि, हरियर कञ्च बनबैत अछि हरियाणा केँ। जुत्ता सियाइ छोड़ि, चण्डीगढ़क चण्डीपाठ केनिहार सपना, साल बितैत-बितैत निर्माल बनि, दुर्गामाइक महफाक पाछू धेने घरमुहाँ भ' जाइत अछि।

छठिक घाट पर चौल केनिहार अगतिया छुडछुड़ी घुरती पनिजाब-मेल सँ कुसियारक सिट्ठी बनि, गंगाक उत्तर फेका जाइत अछि। सतभैयाँक पाण्डुरोग कतिकी पूर्णिमाक इजोरिया केँ, हकलक्खी नोर कनबैत अछि आ फागुनक रसनचौकी अगबे समदाउन हकरैत अछि, नवटोलिया मे।

•

1995 ई.

समकालीन—कथा

सड़क-व्यवस्था नाली बनल अछि। नगर-निर्माण-योजना सरकारी नौकरी भ' गेल अछि। विधि-व्यवस्था राजनीति भ' गेल अछि। सय इतिहासक मूड़ा अगमकुआँ मे दहाइत अछि आ भूगोलक छाती कलिंग-कलिंग भ' गेल अछि। कने देखि जाउ अपन इन्डिका केँ—मेगास्थनीज।

स्वर्णयुगक राति केँ पुटपटिया पाइपगन सँ चिर्री-चोंत क' दैत अछि स्नातकोत्तर डकैत। चाणक्य-नीति चन्द्रगुप्तक संवेदनाक सुखायल चन्द्रकूपक सोह धरि नहि फोड़ि पबैत अछि। अपन पोटरी बकूटने रहू फाह्यान। वानर लक लगौने अछि। कुमारामात्य छूरा पिया देत आ गणिकाध्यक्ष पानि उतरबा देत।

मथुरा-शैलीक बुद्ध, अयोध्याक शैली औंटैत छथि, बाबरी ओरिका सँ। पलिताह भन्ता, भद्रा केँ मता क' स्तूप मे मचबैत अछि महाविहार। अपन गांधार-शैलीक बुद्धक, गांधारी-शैलीक अँखिपट्टी, कने देखि जाउ-इत्सिंग।

वैशालीक नगरवधूक एक-एकटा घुँघरू पुरूत्थानक बखानैत अछि करुण-गाथा। सभासद, सामंत आ नगरसेठ, तो-मो-तो-मो आ चों-चों-चों-चों करैत छथि— नगर -कोतवाल लग। अपन महाराजाधिराज केँ, पमरियाक तेसर जकाँ 'हाँजी-हाँजी' करैत देखि जाउ— ह्वेनत्सांग।

जत' हराशंख आ कन्टाह कठमुल्ला, बुर्का ओढ़ैत अछि आ पेटकनहा देवचंठ भगता, गैंरथैय्या-नाच नचैत अछि—तत' अहाँ तहकीक-ए- हिन्दक प्रवचन करब—अल-बेरूनी?

जाम्ना कोराँट नहि भ' जाइत अछि कट्टरता केँ आ कोराँटी नहि भ' जाइए अहाँक एँड़ी मे—ताम्ना पाकड़िक गाछ पर नड़ी मे गंथायल सोन-चिड़ैया केँ, आर्यावर्त मे तकने फिरू—वास्को-डि-गामा।

•

1995 ई.

ई अदराक मेघ नहि मानत...

जंघिया नहि लजाइत अछि खेलक मैदान मे। अपना लेल जीवन भरि नाङट रहैए काया। विवेक आवरण दैत अछि लाज केँ।

के कहत—जंघियावाली पी.टी.उषा केँ लाज नहि छैक?

के कहत—सोनागाछी मे एकोटा कपड़ाक दोकान अछि?

सम्पूर्ण सोनागाछी आ कालीघाट ककरा इशारा करैत अछि—नाङट गहिकी केँ वा रामकृष्ण परमहंस केँ?

अंग आ आवरण सँ नहि होइत छै लाजक तादात्म्य। एम.डी.बलसम्मा कि बूला चौधरी कहियो रण्डी नहि भ' सकैए, गंजी-जंघियाक कारणेँ।

जँ किन्साइत सहरसा आ दरिभंगा बीजिंग आ स्योल होइत, तँ 'ए छीया' नहि होइत मिथिलाक, एशियाड मे। बिकनी पहिरि क' अबस्स उतरितथि तित्तिर-मनतोड़दाइ स्वीमिंग पूल मे/ग्रास कोर्ट पर।

एगारह हाथक घोघटाही मे कछमछाइत लाजक सुरक्षाक ग्रैन्टी कहाँ छै—महिला-कॉलेजक गेट/चाणक्य-पिक्चर-पैलेस/अपलेशन-थेट्टर/ राहड़िक खेत/वा बिदेसरक मेला मे?

हे झंझारपुर!

कहिया धरि सायाक गदहछन्नी मे छानल रहतैक, महिनाथपुरक पी. टी.उषा?

हे मधुबनी!

अहाँक माटि तँ बियान करिते अछि तैराक बूला चौधरीक।

हे जयनगर!

तीरक सन्धान केने तीरंदाज पूर्णिमा महतोक आविर्भाव भ' चुकल अछि अहाँक कोखि मे।

तें, आब... चतुर्थीक प्रतीक्षा त्यागैत वियहुती नूआ जकाँ...

....ई अदराक मेघ नहि मानत....

1995 ई.

नोट : शीर्षक, कवि आरसी प्र. सिंह सँ साभार

●

चतुर्भुजस्थान नहि, मुजफ्फरपुर...

चतुर्भुजस्थान छोड़ि, बाँकी सगर मुजफ्फरपुर नाङट होइत अछि, चौबीस घंटा मे छियानबे बेर—सर्किट हाउसक बहसल हाथेँ। चतुर्भुजस्थानक कोनो रंडी, खादीक वस्त्र नहि अछि पहिरैत। ओ सब निर्वस्त्र नहि सुतैए एमेले-फ्लैट जकाँ आ निर्वस्त्र नहि नहाइए आफिसर्स-फ्लैट जकाँ, झड़ना मे।

वास्तव मे, तथ्य ई थिक जे मुजफ्फरपुरक गेना-तीरा केँ बन' पड़ैत छै चतुर्भुजस्थान, एगारह बजे राति मे। सूतल, जागल वा दुखीतो मे, कानि क', हँसि क' बन' पड़ैत छै चतुर्भुजस्थान, जलगाँवक गेना-तीरा जकाँ। आ सगर मुजफ्फरपुर नितुआन भेल, मुइल पड़ल रहैत अछि मरचर जकाँ। मात्र चतुर्भुजस्थानक भुकभुकाइत डिबिया, गोटेक औंघरायल घुँघरू वा कोनो सर्द, कोनो कछमछायल बिछाओनक चादरि, जिबैत रहैत अछि शहर मे। बस्स!

आब एक्कहुटा सेंटक शीशी नहि भेटत चतुर्भुजस्थान मे। बाँकी पूरा शहर मे सोहरल भेटत मौसी, दलाल, सेंटक शीशी, यत्र-कुत्र। ठिके दारक मनी-बैग वा खादीक टोपी हथोड़ि लिय'। पिचड़ा भेल गिरगिट आ सनकिरबाक स्पर्श-भान कराओत मुजफ्फरपुरक।

चतुर्भुजस्थानक खाली पेटक बाइ देखार होइ छै— बाइजीक खाली पेट मे। जखन-जखन भूख बारैत छै पलेती आ पेट मे उठैत छै बाइ—ढोंढ़ीक अस्तित्व मेटा जाइत छै बीच सँ।

मुदा तेँ चतुर्भुजस्थान कहियो मुजफ्फरपुर जकाँ नाङट नहि होइत अछि। ई मुजफ्फरपुर थिक, जे चौबिस घंटा मे छियानबे बेर नाङट होइत अछि—खाकी आ खादी लग। भुकभुकिया बत्ती आ चानीक जुत्ता लग। ठिकेदारक राजदूत आ इन्जीनियरक कलम लग। रंगदारक मोंछ आ एमेलेक बडी-गार्ड लग।

तेँ चतुर्भुजस्थान नहि, मुजफ्फरपुर...

•

1995 ई.

खैर कोनो बात नहि

पुलिस पूछत, जे हम निर्दोष किए छी?
जज आ ओकील पूछत, जे हम निर्दोष किए छी?
मुदा हे हमर आत्मा!
हमर सब सँ पैघ दोष यैह थिक जे—
हम निर्दोष किए छी?

•

1995 ई.

अपन-अपन अभियान

ओ सब आत्माक अमरत्व आ पवित्रताक प्रति छथि निचैन। नचिकेता केँ यमराजी-उपदेशक एकहक शब्द छनि कंठस्थ। तैँ समय-गुन काज करैत छथि ऊँच-नीच मे। सम्प्रति हमरा बुझेबा-सुझेबाक हुनकर अभियान छनि चलैत आ हमर-नहि बुझबाक।

कए बेर देह अक्षैत विदेह बनल छथि ओ सब। पंच-मकार साधना मे वाम हाथ स्तन पर आ दहिन हाथक स्त्रुव सँ हवन केने छथि कए-कए बेर।

मुदा जेँ कि स्तन केँ हम वस्तु नहि संवेदना मानैत छी, सम्प्रति हमरा बुझेबाक हुनकर अभियान छनि चलैत आ हमर—नहि बुझबाक। हम बुद्धिजीवी बनबाक लूड़ि सँ छी दूर आ 'अखण्ड ज्योति' प्राप्त भ' गेल छनि हुनका। 'कल्याण' क योग्यता सँ ओ 'युग निर्माण योजना' छथि चला रहल।

संभोग मे समाधि लगेबाक कला मे निष्णात ओ अपने मोने 'अहं ब्रह्मास्मि' क जयघोष मे छथि मातल। हमरा नहि अछि मोक्षक आकांक्षा आ ब्रम्ह प्राप्तिक लिलसा। जेँ कि रजनीक ईश नहि, दिवारात्रिक कार्यकर्त्ता छी हम—सम्प्रति हुनकर सम्प्रदाय-सम्बन्धनक फायदाक प्रचार-अभियान बनल छनि उका-पतङ।
आ हमर नहि बुझबाक अभियान—ध्रुवतारा।

•

1995 ई.

न्यूट्रॉन-बम निर्जीव नहि बना सकत हमर लेखनी केँ

जहिया न्यूट्रॉन-बम सँ सगर दुनियाँक सजीव बनि जायत निर्जीव/हमरा विश्वास अछि मालोविके/ई निर्जीवीकरण एकटा तात्कालिकता हैत आ तहिया फेर निर्जीव गाछ-पात सँ छूटत कनोजरि हरियर-हरियर।

जहिया धरतीक बड़का-बड़का शान्ति-समझौता, राजनीतिक खलनायकी आ लेसर-बनरभभकीक समक्ष दम तोड़ि देत/हमरा विश्वास अछि मालोविके! किशोरवय मे हमरा-अहँक बीच भेल प्रेम-सन्धि एकटा नव शान्ति समझौताक न्यों बनि सकत अवश्य।

सध' दिऔक रसटरी—ऑफिसक टिकसवला कागत। जमीनक दस्तावेज ल'क' हम की करब मालोविके? हमर-अहँक बीच भेल प्रेम-बन्धनक ओ सतपेजी स्तावेज, जे अहाँ चुमकी सँ अपना बेलाउज मे खोंसि लेने रही, कामसूत्र आ कोकशास्त्रक पन्ना मे नुका क' रखने छी कि ने? अढ़ाइ आखर आ अस्सी आसनक बोध एक संग प्राप्त करबा लेल/हमरा विश्वास अछि मालोविके/कामसूत्रक सजीव फोटो सभकेँ न्यूट्रॉन-बम नहि बना सकत निर्जीव।

हमरा विश्वास अछि मालोविके/जँ अपना सबकेँ स्वर्ग मे रहबाक अभिशाप भेटि जाय, अपने सब चोरा क' कल्पवृक्ष सँ फेरो एकटा सेब तोड़िये टा लेब बहन्ना लेल। एकबेर फेर शापित भ' आदम, इव कि लिलिथ बनि, शस्य-श्यामला धरतीक हरियरी भोग' आयब एत' मालोविके? उपन्यास मे नुका क' सतपेजी ढड्ढर पढ़बाक लेल? की? हरेक हिरोशिमाक आठ अगस्तक बाद? हरेक नागासाकीक न' अगस्तक बाद?

हमरा विश्वास अछि मालोविके! अपने सब जे प्रेमक महत्ता पर निबन्ध लिखब शुरु कयने रही, से अपना सबहक अनन्त जीवन मे कहियो नहि हैत पूर्ण—अढ़ाइ आखरक ई साबर-मंत्र! विद्यापति-कालिदासक ई मोहिनी-मंत्र, अहाँ जनैत छी?—कत-कत पदावली आ मेघदूतक सृष्टि कराओत हमरा-अहाँ सँ?

जहिया दुनियाँक सभटा मोसि खतम भ' जायत, हम सात समुद्र केँ मोसि बनायब कबीर जकाँ। जहिया दुनियाँक सभटा कलम खतम भ' जायत, हम

समस्त गाछ-बिरिछ केँ कलम बनायब कबीर जकाँ। जहिया दुनियाँक सभटा कागत खतम भ' जायत, हम सम्पूर्ण धरती केँ कागत बनायब कबीर जकाँ। जहिया हमर कविक अशेष ऊर्जा थाक' लागत, हम कबीरक कवित्तक ऊर्जा सँ/काक-भुशुन्डीक व्याख्या सँ/ शेषनागक सातो जिह्वा सँ/वेदव्यास जकाँ बखानब— अपना सबहक प्रेमक प्रतिष्ठा मे लाखक-लाख श्लोक।

मालोविके, हमरा विश्वास अछि! न्यूट्रॉन-बम हमरा लेखिनी केँ निर्जीव नहि बना सकत।

ई लेखिनी नहि, प्रेमिल-जीवनक उद्दाम लालसा थिक मालोविके!

•

1995 ई.

आदिम राग

क्यो झूलन के झूला झुला दे। कने कलम के मज्जर सुंघा दे। क्यो मडुआइनि हमरा लगा दे—जेना प्रेमवोन मे अरबैठ पीठ पर, हमरा मडुआइनि लगौलनि सुजाता। हमर महाबुद्ध बनबा सँ पूर्वहि।

क्यो मडुआ-ढेरी हमरा बना दे। सतघरिया के सात घर देखा दे। क्यो कौड़ी-करजन्नी खेला दे। कने ओहिना हड़दा बजा दे। जेना बड़की पोखरिक अगम जल मे, हमरा हड़दा बजौलक सुधीरा।

क्यो पिप्पड़ि-मधु हमरा खुआ दे, कने सोंठि-रस हमरा पिया दे। क्यो मङरैलक स्वाद सँ सिहा दे। झड़बैर-गुलजामुन चिखा दे। कोनो ठुर्री लतामक आ तारकून-बेल, बोनसुपारी-पानापत्ती खुआ दे। क्यो छाबाक चौरकाँटी छोड़ा दे मनमीत— जेना गोट-गोट बिछने छलि माय एकदिन।

क्यो टालि-गुल्ली हमरा खेला दे। कने कनसुपती हमरा गंथा दे। क्यो प्रेमरस मे गेनी भिजा दे। कने कनहा पर मेला घुमा दे। कने अपने सँ फुकना फुला दे। कोनो बाबा पकड़ि ले हमर प्रेम-हाथ, जेना गाँधी पकड़ने छला एकदिन।

•

1995 ई.

आत्म-वंचना

जोंक एखनहुँ सोनित चूसब त्यागलक अछि। बिसपिपड़ी आ लोहरचुट्टा एखनहुँ तुम्मा फुलायब, लोक केँ कनायब नहि त्यागलक अछि। एक लोके अछि जे जोंक लगलाहा जगह पर चून लग क'/ बिसपिपड़ी-लोहरचुट्टाक कटलाहा स्थान पर लोह रगड़ि क' आक्रोश केँ सेरा लैत अछि। यैह आत्म-वंचना लोक-चेतनाक संघर्षशीलता केँ घटा देलकै अछि।

•

1992 ई.

जहिया

जहिया अपने छाह अहाँ केँ बड़का-भूत बनि क' डेराब' लागय, अहाँ बूझब जे मार्को-पोलो सन महायात्री भेल जाइत छी।

सैह छाह जहिया अहाँक संग चलबा सँ नासकार चलि जाय, अहाँ बूझब जे सुरुज-चनरमाक माथ पर चलि रहल छी।

जहिया अहाँक आँखिक ज्योति सँ अपन रक्षा लेल, सूर्ज लगा लेथि करिया चश्मा, अहाँ बूझब जे संजय/सम्पाती भ' गेल छी।

जहिया अहाँक जेबी कबीर जकाँ फक्कड़ भ' जाय, अहाँ बूझब जे तीनू भुवनक-धनकुबेर भ' गेल छी।

जहिया अहाँ केँ आँचरक गर्मीक अर्थ लागि जाय, अहाँ बूझब जे सबसँ पैघ गुदरिया बबाजी भ' गेल छी।

जहिया अहाँक जीवन मे दुःखे-दुःख रहि जाय, अहाँ बूझब जे संसारक सबसँ सुखी प्राणी अहीं टा छी।

•

1995 ई.

सङोर
(काव्य-संकलन)

रमेश

काव्य-क्रम

133 : शून्यकाल सँ शून्यकाल धरि
136 : भगत सिंहक वसीयतनामा
138 : विद्रोह
139 : ई प्रेम-पत्र नहि थिक!
142 : लक्ष्मण रेखा, अपन-अपन
143 : दर्देक इतिहास
144 : जुनि चुचकार
145 : विद्रोह-चक्र
146 : चाहे किछु भ' जाय
145 : जन्महौस
149 : परिचिति बनयबाक क्रम मे
150 : एकटा उद्घोषणा
151 : एकबार सँ
156 : सर्चलाइट केँ हाथक इशारा करू दोस
158 : ऑक्टोपसक अंत
160 : सन्दर्भ : उबियाइत अफ्रीकी जंगलक मुक्ति
162 : सूर्योदयक मादे
165 : अफागुनी फगुआक प्रति
168 : एकटा कोनो भटसिम्मरिक कथा
172 : गूड़
175 : अहाँक फरमानक नियति
177 : कहिया धरि?
179 : एकटा दोसर दिशा मे बढ़बाक थिक
183 : यथास्थितिक बादक लेल

शून्यकाल सँ शून्यकाल धरि

हम शब्द गढ़ैत छी
ओ आगि गढ़ैत छथि
ओ हमरा शब्द केँ
आगि मानैत छथि
आ अपना आगि केँ
शब्द बनाक' बेचने फिरैत छथि
बेचब हुनक धर्म थिकनि
आर हमर त्याज्य
रचब हमर धर्म थिक
आर हुनक त्याज्य
हमर पीड़ादेह रचना-प्रक्रिया
हुनक अज्ञतापूर्ण मनोरंजन थिकनि
आ हुनकर जीवन केँ
हमर साहित्य बनवाक लेल
एकटा पीड़ादेह-प्रक्रिया सँ गुजरब
छैक बहुत-बहुत आवश्यक
ओ गढ़ैत रहथु अग्निधर्मी अस्त्र
कविता हमर थिक
सबसँ पैघ अस्त्र-शस्त्र
हुनका अपन शस्त्रक निरर्थकता
क' देने छनि विचलित
हकोप्रत्याश भेल पड़ल छथि ओ
चिन्ताक महासमुद्र मे
हमर कविताक कोनो
नहि अछि शास्त्र
तेँ ओकर निरर्थकताक

नहि छैक कोनो अर्थ
हुनक अगिनवाण जत’ खसिकऽ
बालु मे भेंसाकऽ
भ’ जाइत छनि जड़
हमर कविताक यात्रा
शुरु होइछ ओहि सँ आगू
बहुत-बहुत आगू
निस्सीम-निस्सीम धरि
हमर एकटा सहधर्मीक कविता
जे रहि गेल छलनि काँच
डमरस हेवाक प्रक्रिया मे
पहुँचि गेल छैक से आब
पाकि क’ महमहेवाक छैक तकरा
देवाक छैक
एकटा अपूर्व स्वाद ओकरा
ओहि लोक केँ, जे सरिपहुँ
बनल छैक चातक पक्षी
कविताधर्मी एकटा स्वाती नक्षत्रक लेल
तैँ कविता केँ
एकटा टूटैत समुदायक लेल
बनवाक छैक स्वाती-नक्षत्र
अपना अन्तरतम मे जोगौने
समुद्रमंथनक सुधारस चटाक’
ठाढ़ करबाक छैक
एकटा टूटैत समुदाय केँ
एकटा चूकैत भूखण्ड केँ
देबाक छैक एकटा भूगोल
बदलवाक छैक पाठ्यक्रमक इतिहास
सम्पातीक दिव्यचक्षु बनिक’

ढूढ़’ पड़ैतक/सोनक लंका मे
नुकायल राक्षसक जेड़
ई काज कविता करतैक
ई काज कविते करतैक
तैँ हमर शब्द गढ़वाक
अविराम प्रक्रिया
हुनक अगिनवाण गढ़वाक
बइमान प्रक्रिया सँ सर्वथा भिन्न
चलैत रहतैक अविराम
शून्यकाल सँ शून्यकाल धरि
शून्यकाल सँ शून्यकाल धरि।

•

भगतसिंहक वसीयतनामा

साम्राज्यवादक विरुद्ध
उच्चतम फारेनहाइटी पैमाना पर
खौलैत हमर धमनीक
अरुण शोणित
तों फँसरीक डोरी
देखि सेरइहें नहि।
अहर्निशि आर्त्तनाद करैत
सागर-सिपाही/ हमर मीत
अदौकाल सँ टाल ठोकैत
मशानी/हिमजीवी पर्वत-सम्राट/
शीतयुद्धी वनरभौकी
आ परमाणविक विभीषिका सँ
तों डेरइहें नहि!
चिनगोला उगलैत/
लाखक लाख
ज्वालामुखी सँ अच्छादित
हिन्दुस्तानक बीत-बीत माटि/
बारूदी अकाश/
कोटि-कोटि बुलेट-प्रूफ छाती
कोटि-कोटि बन्हैल मुक्का
तों कहियो गुलामीक कोल्हु मे
पेरइहें नहि।
हे हमर देसक
हमरे सन अदना लोक
टूटनक दंश आ
नागफेनी बिसबिस्सी सँ

गुलाबक एक-एक टुस्सी/
आ गहूमक एक-एक
पेंपी केँ
गहनमरु हेबा सँ बंचबैत/
सभ कियारीक
सभ पौधा केँ
एक्के रंग पटबिहें।
हे हमर आगत पीढ़ी
हमर थाती केँ बचबिहें!
ई पुरिबा बहैत रहय
ई धरती
अडैठी-मोड़ करैत रहय
आ हम लाख-लाख भगत सिंह
कहियो बेंजामिन मोलोइशे
कतौ नेल्सन मंडेला भ'-भ'
लाख-लाख बेर अबैत रही।

•

विद्रोह

हमरा, हमर टिकड़ीयो देब तँ—
अहाँक अमला
ओछ भ' जायत,
अहाँ खाइत रहू
अनकर हिस्साक पहथबा रोट
आ निजी-प्रजातंत्रक
पिटैत रहू डिगडिगिया
मुदा मोन राखब—
आनक बखरा खेने
जनमिते टा छै—
विद्रोह!

•

ई प्रेम-पत्र नहि थिक!

प्रिय!
ओहो एगो उन्मादे छल
जे तेसरा दिन पर क'
लिखल करी अहाँ केँ
एत्ते टट्टा ढ़ड्ढर

मुदा प्रिये
आब नहि मोन पड़ैए–
गुदगुदी आ गमगमी सँ मातल
चतुर्थीक राति
नहि मोन पड़ैए–
पारदर्शी नोरक सागर मे
दीयर जकाँ ऊब-डूब करैत
अहाँक डोका सन-सन
आँखिक डिम्हा आ पुतली।
सत्ते कहै छी प्रिये।
अविरल सुधा बरिसबैत
अहाँक कोइलिया बोल
आब सपनहुँ मे नै कहैए
हमरा कान मे
'पू...' आ.... 'झा...त'
नहि भ' जाइए
अहाँक प्रतीक्षा मे
कोरो गनैत-गनैत प्रात।
आ हे!
चान केँ लजबैत

अहाँक मुँह
सेब सन लाल-लाल ठोर
तूरक फाहा सनक
मोलैम गाल
नहिं दैए
हमरा घुनलग्गू जिनगी मे
स्मृतिक भूर सँ
हुलकी!
हमरा स्वार्थमय सपना मे आब
पाछाँ सँ अहाँ
आँखि नहि मूनै छी
ने तँ हमरा गारा मे
बाँहि लपेटि अहाँ
झूलै छी झूला
आ ने हमही अहाँ केँ
कोरा मे समेटि
क' दैत छी
चुम्बनक बरखा सँ
बोदरिं-बोदरि।
प्रिय,
अहाँक गुलाबी गाल पर द'
ससरैत नोरक टघार
हमरा छाती पर
टप्प-टप्प चुबैत
अहाँक गर्म नोरक बुन्न
साँसक गर्मी
आ तीव्र हार्दिक-धड़कनक
अनुभूतिक चेतना
हमरा नहि करैए बेबस—
अहाँ केँ अपना कोंढ़-करेज मे

साटबा ले'
किंवा अपना आँखिए मे नुका क'
पिपनी
बन्न क' लेबा ले'।
सरिपहुँ प्रिये!
हमरा-अहाँक प्रेमक
अनन्त-अथाह सागर मे
फुटि गेलए असंख्य ज्वालामुखी
खसि पड़ल अछि
य्यों-य्यों भुमगोला
जरि रहल छै
सागरक छाती—
धू-धू-धू-धू
काटि रहलैए
लहरि सब अहुछिया
समुच्चा सागर
बनि गेल छै
चकभाउर लैत लहरि सँ
परिपूर्ण भोम्हरा,
आ ताहि मे—
एक बेर डूबै छी
हम आ अहाँ
एक बेर उगै छी
हम आ अहाँ
तेँ आब नहि मोन पड़ैए प्रिये...
किच्छु टा नहि...

•

लक्ष्मण-रेखा, अपन-अपन

ओलतीएक चार सँ
ओलती मे खसल/
पीरा पिलुआ
अइंठार तक पहुँचि जाइछ
सात सेज नाँघि क'
ढील/अपन गन्तव्य धरि
पहुँचि जाइछ
मुदा एक्कहि
सेज पर पड़ल/
हम आ अहाँ
एक-दोसर सँ दूर
बहुत दूर
रहि जाइत छी
—एना किए होइत छै?

•

दर्देक इतिहास

गुरीचक घोंट
ल' क' ढ़ेकरनाइ
आ
चिरैताक
छाक भरि क'
मुसकिआयब
जकर इतिहासे रहल हो—
नीमक काढ़ा तकरा
कत्तेकाल
आतंकित करतैक?

•

जुनि चुचकार

चहकल एँड़ी मे–
बरकैत अलकतरा
चिक्कन तरबा मे–
भेंसायल मेनहर/गोखुला
–हमरा नीक लागि सकैछ
मुदा किन्नहुँ ने
नीक लागि सकैछ–
तोहर-'आ-हा-चुः-चुः'।

•

विद्रोह-चक्र

हम चाहैत छी
अपन बखराक
रोटी आ अकास
भेटैछ लोकतंत्रक
लहक-चहक गहना
हम चाहैत छी—
माँछ सँ भरल जलकर/भेटैछ
कंकोड़बा बियान बियाइत
जलकुंभी सँ भरल/डबरा
हमर आँखिंक सूत आ कोशा
ललाओन भ' जाइत अछि
हम सुरफुरा क'
ठाढ़ भ' जाइत छी
कि एकटा जीह लपलपबैत खाँड़ द्वारा
हमरा दकचि-दुकचि क'/सोनिते-सोनिताम
क' देल जाइत अछि
मुदा हमर बुँद सँ
रक्तबीजक सन्तान जकाँ/जनमल
हमर पीढ़ी-दर-पीढ़ी/हमर असंख्य 'हम'
अडैठी-मोड़ करैत
फेर ठाढ़ भ' जाइत अछि
अतीत सँ ल' क'
वर्तमान घरिक/इतिहास तँ
यैह बंचि जाइत अछि
आ विद्रोह-चक/हमर नियति
बनि जाइत अछि!

•

चाहे किच्छु भ' जाय

हमरा तों
कोंचिला खुआ दे
—मंजूर अछि।
मुदा तों
सेन्ह कटैत रहें
आ हम चुप रही
—नामंजूर अछि।

•

जन्महौस

नहिं जीबैत छी
हम 'हम' बनि क'
नहिं जीबैत छें
तों तों बनि क'
किऐक त'
हमरा मे सँ क्यो
बजार मे/
सट्टा पर बिकल अछि
क्यो बॉसक बदौलक
स्टेनोक कुर्सी पर
टिकल अछि
क्यो ककरो देहे पर
लट्टू अछि
क्यो बिना भाड़े के
टट्टू अछि।
हम सब अपन-अपन
स्वत्व हारि चुकल छी
परिस्थितिक मुक्काक लेल
अपन-अपन पीठ
अजबाड़ि चुकल छी।
हमर 'हम'
मरूभूमिक मरीचिका मे
हेरा चुकल अछि
तोहर 'तों'
बॉसक मशीन मे
पेरा चुकल छौ।

...और हम अपन
तथाकथित स्वतंत्र देस मे
अपन-अपन लक्ष्मण-रेखाक
घिनाउन परिवेश मे—
भ' चुकल छी—
ताजिनगीक लेल—
जन्महौसवला कोठली मे/बन्द!
मुदा किए...?...?...

•

परिचिति बनयबाक क्रम मे

अपने लोकक भीड़ मे
अपन परिचिति
बनयबाक हेतु
अपस्याँत लोक
केना बाछि देल जाइए—
अपने लोकक द्वारा?
जेना अपने लोकक परिचिति
बनि गेल हो अपने लोकक लेल
अवश्यंभावी खतरा?
?...?...?...

•

एकटा उद्घोषणा

हम...
अपन मलिछन अतीत
आ
कुहेसाच्छादित
वर्तमान केर बीचक
एक
जर्जर/आधारहीन
पुल
छी।
कल्पित भविष्यदिस
लोभाएल नजरि सँ
टक-टक तकैत।

•

एकबार सँ

ऐंठ कप मे
माँछी भिनकैत चाह सन
हमरा बेरोजगार टेबुल पर झमाइत
हे हमर सबदिना मित्र
कोनो बेरोजगार टीशनियाँ 'सर' जकाँ
भोरे-भोरे आबि क'
की-कहाँ कहि जाइत छ'
से हौंड़ दैए हमर मोन।
तों
लहलहाइत
अरिकोंछक पात नहि छ'
एसमार्ट गोबरछत्ता
किं फेंच काढ़ने नागफेनी
कि मीठ जहर उगिलैत बेला—
एहि सभ मे सँ
तों किछु नहि छ'
हे तथाकथित बुद्धिजीवीक घास
आ सर्वहाराक
जिनगीक दस्तावेज—
तों भरिए दिन मे
निर्माल बनि जाइत छ'
ढेंगक तर मे
पिचड़ा भेल
पिचायल दूभिक अँखुआ सन
मरियल भेल हे हमर मित्र
खिड़कीक एहि पार

भोपाली दमघोंटू कछमछी
खिड़कीक ओहि पार
मलरैत
ताड़ खजूर आ पितोहिया
जामुक अगुरबान पात—
दुनू मे कतेक रास
तरपट छै?
अरबलक अरुआयल खून सँ
गत्र-गत्र रंगल
चेरणोविलक विकीरण सँ
गत्र-गत्र करौआ लागल
छुतहरक घैल जकाँ
कठजीव मनुक्ख सभक
प्रतिपलक त्रासदीक साक्षी
हे हमर काल्हुक ईमानदार
आ आजुक बईमान मित्र
अदौकाल सँ
चलि आबि रहल
महंथी उत्पीड़न केँ
उत्पीड़ित करबा लेल
उताहुल
हाँसूयुक्त उठल
एक हजार हाथ पर
दुनलिया तनने दू टा हाथ
एक हजार इन्किलापी
चिचियाइत जीह केँ—
'नक्सलवादी' कहैत
एकटा विषधरी जीह
एक धूर जमीन
एक सय राउंड गोली

एक लाख चीत्कार
एक टा डायर
एक सय जालियाँवलाबाग
आ एहि सभ ईमानदार कथाक
बईमान बरनेका करैत
तोहर बेबस सन
लसियाइत जीह
हे हमर मित्र
करोट बदलैत/लहूलुहान भेल
जाफना प्रायद्वीप
अगबे सोनित
बोकरैत पंजाब
पोंगापंथक तासा गरगरबैत
अमिर्तसर
बीसम सदीक
द्रोपदी बनल चंडीगढ़
सत्तरि हजारक समीकरण
मिलबैत हरियाणा
राजनीतिक चाङुर सँ अवशोषित
कंकाल बनल मिथिला
अपन असालतन नोरक
नोनछड़ाइन स्वादक
सेप घोंटैत मिथिला
गिरगिटी रंग मे रंगल
झारखण्डी-राजनीतिक लोड़ही सँ
सरकारी सिलौट पर पिसाइत
आदिवासी मसल्ला
तकर स्वाद चखैत
अभिजात्यवर्गीय पातर जीह
आ तकर गवाह बनल,

हे हमर घबाह मित्र!
प्रिटोरियाक सेंसरी कैंची/
सँ कपचल
तोहर जीह सँ
टप-टप चुऐत खून
करोट फेरैत नामीबिया
विध्वंसकारी/महाकाशी—
कूटनीति सँ त्रस्त
समस्त मानवता
बलात्कारी टीस सँ ऐंचैत
लीबियाई/निकारागुआई देह
तानाशाही चाडुर सँ
सोनिते-सोनिताम—
दिग्भ्रमित एशिया
पेट मे पेटकटारी लागल इथोपिया
धरतीए पर पेंडुलम बनल मानवता
सूली लटकैत/
कारी-कारी अफ्रीकी मनुक्ख
नागफेनी चुभन केँ
दाँत कीचि क'
पचवैत लाखक-लाख
समानधर्मा/सहभोक्ताक—
व्यथा-कथा कहैत
हे हमर नीरस भ' गेल मित्र
तों अनजाने मे
धधकैत धरती
उसट्ठ अकास
भासैत गामक-गाम
बलानी बालु त'र मे छटपटाइत
अल्हुआ आ सुथनी

कंकाल बनल गाम
धोधि फुलबैत शहर
आ एहने
कतेक राश अतिखाइन कथा
अनेरे किए कहि जाइत छ'
हे हमर मित्र!

•

सर्चलाइट कें हाथक इशारा करू दोस

एहि जबकल निसाभाग राति मे
ककर बुलेट धंगैत अछि
धरतीक जुआन छाती?
ओकर कर्कश ध्वनि मे बिलाइत
धरतीक छातीक धड़धड़ी
किए बन्न भ' जाइए रहि-रहि क'
कोनो निष्क्रिय मिसिलक
बिझैल कल-पुर्जा जकाँ?
हे इजोरिया
अहाँ ककरो कहल जुनि मानू
अहाँ खाली ओसे कानू
केराक भालरि पर द' टघरैत
गोलबन्द होइत अहाँक सर्द नोर
डाहि देत लतरैत हाड़ा
आ चतरैत जोभ कें
आदमी नहि अछि
केराक वीर जकाँ मोलैम आइ
जे डेरायल बुलेटवलाक चक्कू सँ
आदमी भ' गेल अछि
करबीड़क कठोर पात
जे दू टा एकठाम मिलिते
कोनो बच्चोक हाथ मे
बाज' लगैए फटफट
बुलेटक फटफटिया/
कर्कश-ध्वनिक जबाव मे
रातुक एहि जुआँठ निस्तब्धता कें

आड़ा जकाँ चिरैत
टेनक धारदाड़ सिटी
हमरा अहाँक लेल
एकटा ध्वनि-संकेत अछि
एकटा जबदाह निस्तब्धता टूटबाक।
निस्तब्धताक टूटबाक
कोनो टा ध्वनि-संकेत पर
झुण्डक-झुण्ड कुकूर
'झाउँ-झाउँ' भुकबे करत दोस
तेँ अहाँ ध्वनि-संकेत केँ
कान मे आङुर द' क' मटिअयवाक
आ एकटा मध्यवर्ती यात्राकेँ
स्थगित करबाक प्रयास जुनि करी
कुकूर सभ तँ
दू बेर 'धात-धात'! कयला पर
अपने-आप भागि जायत
नाङरि हिला क'
ओकर केफा सँ डेराइ जुनि दोस
अकानू ध्वनि-संकेत केँ
आ सर्चलाइट केँ
हाथक इशारा करु दोस!

•

ऑक्टोपसक अन्त

हमरा रोज राति क' डेरबैत अछि
एकटा ऑक्टोपस
भयानक सपनाक छद्मकथा मे
शमशान-गाछीक वरक गाछक
अन्तहीन सीड़ सन-सन
ऑक्टोपस हाथ-पयर
लटकल/पछबा-पुरिबा मे झुलैत
हमरा जकड़बाक कोशिस मे लागल
जीवन-संग्रामक एहि महायुद्ध मे
हल्लुक सन हँसैत ऑक्टोपसक ठोर
हमरा जीवनक विद्रूपता जकाँ
बहुत वेशी विद्रूप लगैत अछि
मैयाँक दन्तकथाक कोनो काल्पनिक दैत्य
जे 'मनुख-गन्ध' 'मनुख-गन्ध' 'नकिया क'
चाभि दैत अछि दर्जनक-दर्जन मनुक्ख
एकटा कोनो रक्तबीजक मिथकीय फंतासी
हमर नरेटी चाभबाक
अदौकालीन ऑक्टोपसी प्रयास
ओझराइत वंशावलीक महावन मे
भोतिआइत मानवी-अस्तित्व
एकटा बारूदी सुरंगक
भविष्णु विस्फोटक प्रतीक्षाक आदंक
ई सभ की थिक?
ई सभ की थिक?
की हैत कच्चा मालक नियति?
बाइ-प्रोडक्ट?

कि मुक्ति-पथक कंटकशोधन?
हमरा ऑक्टोपस सँ नहिं डेरयबाक अछि
हमर रक्तबीजक पौराणिक आख्यान
ओकर मिथकीय अमरत्वक संग नामंजूर अछि
हमरा कोनो प्रथाक पंजी
लाख-लाख बेर नामंजूर अछि
हमरा न्यूट्रान-बम सँ प्राप्त निर्जीव मौन
शान्तिक लिफाफ मे बन्द भ' क' नहि चाही
हमरा ऑक्टोपसक अन्त चाही
ओकर भयानकताक संग
लोक कतेक दिन धरि आदंकक छाहक संग
भागैत फिरत!
लोक कतेक दिन धरि ओकरा भय सँ
दालि नहिं छौंकत?
हमरा एकटा असालतन शान्ति चाही
'शान्ति सँ जनमल शान्ति'
जे साबित भ' सकय
नव-प्रगतिक उर्वर बीया

•

संदर्भ : उबियाइत अफ्रिकी जंगलक मुक्ति

अहाँ जंगली रही
त' सुखी रही अपना मे
मुदा बाँचि नहि सकलहुँ अहूँ
सिक्कड़ ल' क' बौआइत
सभ्यताक ठिकेदारी लेने
शोषणधर्मी एकटा अ-जाति सँ
श्वेतवर्णी किछु बहेलिया सँ
जे आयल अहाँक जंगल
आ बनि गेल जंगली/नृशंस/अहाँक लेल
अहाँ सभ्य बनल तकैत रहलहुँ टुकुर-टुकुर
ओ सभ्यताक नाम पर
देखबैत रहल असभ्यताक करतूत
अहाँक कोनो सम्भावना बिलाइत गेल
अहाँक जंगल सँ ओकर महानगर धरि
नमरल अँतड़ी मे
अहाँक कए पुश्त ओकर महानगरक पेट पर
चर्बी बनि कए जमि गेल
जॉन्सबर्गक सोना आ हीराक
जोंकधर्मी एकटा महाबाजार सँ
नहि भ' सकलैक उग्रास
पसेनाक नोनछड़ाइन स्वाद
नहिं मेटा सकलैक
सोनाक टुकड़ी बीछ' वलाक प्यास
ई केहेन विरोधाभास?
सभ्यताक आवरण मे नुकायल बर्बरता
अहाँक भितघर केँ ढ़ाहि रहल अछि।

ओकरा गुमान छैक उजरा चाम पर
बन्धुवर
कारी हेबाक सजाय भोगलहुँ
बहुतो दिन धरि अहाँ
गोरका चामक करिछौन विभेदक
अन्त छैक समीपहिं
प्रेम सँ कि बैर सँ
ओकरा कहिऔक
केपटाउनक छाती धमधमाब' वला बूट
जाइवला छैक निखत्तर मे
कहि दियौक/ओकर हवाइ-फायरिंग
टेम्स-आमेजन मे हेलैत
जलचिड़ैक कोनो झुण्ड केँ उड़ा सकैछ
मुदा नहिं डेरा' सकैछ
अहाँक बारहसिंघा आ शेर केँ
बन्धुवर
हजारो किलोमीटर नाम ओकर अँतड़ी केँ
जाहि मे पचैत रहलछि
अहाँक इतिहास, वर्तमान आ भविष्य
आबि गेल छैक छपटबाक समय
कैंची केँ रेतू कने बन्धुवर
आ अँतड़ी छपटि क' चुआ लीय'
बुड़लाहा घाम आ बोनि अपना जमीन पर
सभ्यताक दंभ भरैत
महा-असभ्य एकटा समुदाय केँ
दीय' एकटा जंगली-जवाब
सभ्यताक कलश-स्थापनाक लेल
उबिआइत एकटा जंगलक मुक्ति लेल

●

सूर्योदयक मादे

अपरिचित परिचिति केँ भोगैत
परिचितिहीनताक खड़-खड़ कम्मल ओढ़ि क'
अपरिचित सुख-भ्रम केँ जीबैत
ई एकटा ओहेन भूखण्ड थिक
जत' कहियो सुरुज नहिं उगलाह-ए।
हँ
सुरुज उगबाक भ्रम भलेँ
बेर-बेर भेल हो एत'
प्रायः पोसिते रहल अछि एतुक्का लोक
ओहि चम-चम करैत भ्रम केँ
इजोरिया, चानी, सोना, पीरा रौद आ
चन्द्रमाक रूप मे
आ सुरूज वस्तुतः ऊगि कहाँ पबैत अछि?
वायुमण्डलक क्षितिज पर बौराइत
असंख्य मेघक टिक्कड़
सुरूज केँ पौरुषहीनताक बोध
दैत रहैत छनि
लोक लगले ई मानि लैत अछि
जे ओकर वास्तविकता
मेघक परत-दर-परत छैक
सुरुजक झाँपल प्रखरता नहिं
सुरुजक झाँपल प्रखरता केँ देखबाक
ने तँ लूड़ि छैक लोक केँ
आ ने कोनो गैलीलोयोबला दूरबीन
ई लूड़ि कोनो अकास सँ
नहिं टपकतैक

ई लूड़ि लोक पछबारि पार सँ पैंच लेअय
सेहो कोनो जरुरी नहिं छैक
जरूरी ईहो नहिं छैक जे
गैलीलीयोवला दूरबीन
तकर ऑपरेशन लेल कोनो रोबोट
कि स्वचालित सुपर-कम्प्यूटर
पछबारि पार सँ पैंच लेले जाय
जरूरी छैक मात्र कोनो न्युटनक आविर्भावक
जे बनाओत गतिक अविरामताक नियम
देखाओत जड़ता तोड़बाक बाट
एकटा भ्रमक तख्तापलट
आ एकटा विश्वासक सिंहासनारोहणक बेर
आबि तुलायल छैक आइ
मनुक्खक रोबोटीकरणक बजाय
अपना भूखण्ड केँ ई बोध देल जा सकैछ
जे शोधप्रज्ञता ककरहु
मोरौसी सम्पत्ति नहिं होइ छै
सवाल छैक सुरुज उगबाक भ्रम केँ
सुरुज उगबाक यथार्थ मे बदलवाक
सवाल छैक तूड़क फाहा सन-सन
उड़ियाइत मेघक क्षणभूंगरताक
यथार्थ केँ बुझबाक
भ्रमक यथार्थताक विश्वास देआयब
एकटा स्वार्थी षडयंत्र थिक
एकर अहसास आइ
समस्त भूखण्ड केँ हेबाक छैक
एक-एक व्यक्ति केँ जनवाक छैक जे
सुरुज उगवाक भ्रम
नदीक एक किन्हेर थिक
आ सुरुज उगबाक यथार्थ

ओही नदीक दोसर कछेर थिक
समस्त भूखण्ड केँ जनबाक छैक
जे कोनो अम्लवर्षा सँ बँचवाक हेतु
प्रदूषणक कारण केँ भंजन कर' पड़तैक
एक-एक टा व्यक्ति केँ सुरुज मानि क'
तकर उदयक रस्ता बनब' पड़तैक
जखन एक-एक टा लोक
सुरुज जकाँ ऊगत
तखनहि सुरुज उगबाक यथार्थ-बोध
यथार्थ-आनन्द द' सकत
एहि भूखण्ड केँ

•

अफागुनी फगुआक प्रति

गामक गुलाबी गमगमी बिला गेल
घोरा क' पनिछक्का पीरा रंग भ' गेल
गामक गुलाबी गमगमी
लोक आस सधने छल भोंटगर गुलाबी-रंग
आ अबरखी चमचमीवला अबीरक
से फीका उदासी मे घोरा गेल फगुआ
आ घोरा क' पनिछक्का पीरा रंग भ' गेल
गामक गुलाबी गमगमी चमकितय भोरे सँ
पीयर-पीयर रौद पर
गामक लजाइत आ उफनाइत
जुआनीक समुद्र मे
कएटा जुआरि दृष्टिगोचर होइत आइ
मुदा फागुन केँ झड़कबाहि लागि गेलैक
आ गामक लजाइत आ उफनाइत
जुआनीक समुद्र/अपना-आप केँ
अपन अतल गहिराइ मे नुका लेलक
कारण सवाल
उफनाइत जुआनीक समुद्रक स्वत्वक
एकटा सद्यः बढ़ैत हाथ सँ सुरक्षाक छलैक
कहियो याज्ञवल्क्यक यज्ञ-वन रहल ई स्थान
आइ उड़ाँत महिसाक अशान्त चराँत अछि
ओना महिसा असगरो बहुत अछि
गामक लतरैत इज्जति केँ निघेंस करवाक हेतु
मुदा विडंबना जे महिसा असगर नहिं अछि
ओकरा संग शहरी-साँढ़ सेहो छैक

ई संगबे गामक खाली फोंकायल साग टोनैत अछि
फेर लतखुर्दनि क' क' छोड़ि दैत अछि—
समस्त जजात केँ
गामक फेनायल घैल
शहरक रंग-विरंगक ब्रान्ड आ मार्काबला शीशी
साँढ़ आ महिसा केँ छैंक उठाना
खादी-सिल्कक कुर्ता, खाकी-वर्दी आ
ग्वालियरक सफारी सूट दिस सँ
पहिने गामक गुलाबी गमगमीक नीलामी मे
भाग लैत छलैक
मोंछ, रुल, लाठी आ चहरा मार'वाली बन्दूक
आइ बात बदलि गेल छैक
लोक आ जवाना बदलि गेल छैक कहाँदन आइ
तेँ आबक नीलामी मे भाग लैत छैक—
स्वयं खाकी-वर्दी, खादी-सिल्कक कुर्त्ता
आ ग्वालियरक सफारी-सूट
जकर मोंछ सफाचट्ट रहैत छैक
चहरा मार' वाली बन्दूकक जगह
पेस्तौल डाँड़ मे नुकायल रहैत छै

कोनो बरसाती-बेङक बैज
ओकरा सभक छाती पर
पिन-अप कयल रहैत छै
चेहरा पर समाज-सेवा
आ देशक चिन्ताक गाढ़-रंग
लेपल रहैत छै
गामक गमगमीक नीलामी
ई नवका पोशाक सभ
महिसा आ साँढ़क हाथें करैत अछि
बदला मे गामक महिसा आ शहरी साँढ़

एकटा गारंटी दैत छैक ओकरा सभ केँ
पाँच सालक निश्चिन्तताक गारंटी
ई समीकरण गामक लतरैत जजात केँ
चरबा दैछ/ लतखुर्दनि करबा दैत अछि
आ कि चैती पछबा बहा क'
झड़कबाहि लगबा दैत अछि
गामक मिड़मिड़ायल विरोध
मोहुक फूल बनि क' तूबि जाइत अछि
बेर-बेर नीलाम होइछ गुलाबी-गमगमी
पनिछक्का पीरा रंग सँ
फगुआ खेलाइछ बेर-बेर लोक
महिसा-साँढ़ आ नवका पोशाक सभ द्वारा
बट्टी लगाओल छागरक
बाट पर फेकल खलड़ीक टुकड़ी
मसुआइ सुआदि लैत अछि फगुआ मे लोक
आ एहिना फगुआक आबा-जाही
लागल रहैछ सभ-साल
फागुनक अयने बिना

•

एकटा कोनो भटसिम्मरिक कथा

ओइ टोलक कोनो परिचिति
नहिं रहि गेलैक
ओ एकटा त्यक्त कथा आ
अव्यक्त-व्यथा बनि क' रहि गेल
अन्हार राति मे सूतल रहय टोल
से भोर नहि देखलक
टोल केँ दस बोझ धानक सवाल रहैक
तकर जवाब घर लग ताकि क'
असहज निन्न मे जाइवला छल टोल
मुदा अन्हारो मे नुकायल नहिं रहि सकल
टोल केँ घृणा, अन्हेर
आ जातिवादी अतत्तह ताकि लेलकैक
राक्षस भक्ष्य पाबि प्रसन्न भेल
टोल घेरायल पाबि अवसन्न भेल
टोल केँ सम्हरबाक मौका नहि छलैक
मात्र जड़बाक आ भुजबी हेवाक मौका छलैक
... से सगर टोल
किछु लपलपाइत गोली आ धधराक
चकभाउर कटैत वासनाक किछु भेम्हक
भक्ष्य बनि क' सुड्डाह भ' गेल
चौकठि आ मानिक थम्ह
समस्त पीड़ितक आह भ' गेल
खसि पड़ल झड़कि क' एके संग
कोठी पर राखल
खुद्दीक रोटीक टुकड़ी
आ बासि खेनिहार भलसरियाक बाँहि

एक संग धधा-धधा जड़ल
एकहड्डा बाछीक मासु
आ एक पाँज बोनिवला धानक शीश
बरकैत मासुक गंध पसारैत
घिरनी जकाँ नचैत पिरथीया
आ ओकरा लहास सँ
निकलैत लहास आ धुआँ
लाल आ बैगनी बनैत रहल एके संग

*

विदागरी भोरे होइतैक
मुदा विदागरी ले' आयल पाहुन
केवाड़क पट्टाक संग
जरैत रहि गेलैक
धनियाँ माँझ आङन मे
चिचियाइत रहि गेलैक
आ अन्त मे अन्हरिया
ओकर अ-देह केँ
झाँपन द' गेलैक

*

बकरी मेमिआयल
छागर भेम्हिआयल
करिया कुत्ता बाध दिस भागल
सगर नग्र जागल
आ एक टोल सूति रहल
कीचकक जूति रहल

*

हँसी-खुशी पताल चलि गेल
बँचल-खुचल अस्पताल चलिं गेल
एक सेर मेरखीयो नहि बचल
एक टोल गामक पेट मे पचल
दू-चारि भास विलाप रहि गेल
अन्हरियाक अलाप रहि गेल
टोलक नाम पर उजाड़ रहि गेल
टूटल बितनाक भजार रहि गेल

*

डी.आइ.जी आयल
जेना राजधानी एक्सप्रेस आयल
गामक पटरी केँ दलमलित करैत
एकटा आदंक-भावक संचार करैत
किछु शिनाख्त भेलैक
गवाही मे अधजरु धरनि
चुप्पे रहलैक
फेर मुखियाजीक ओत'
तुलसी-फूल रन्हेलैक
अगिलग्गी मे भागल
एकटा खस्सी पकड़ेलैक
डिहवार केँ से कबुला चढ़ा
सौंसे गाम प्रसाद बँटेलै
डी.आइ.जी. मसुआइ सुआदल
एकटा टोलक/हड्डी कड़कड़ाओल मुखियाजी
मज्जा चूसि-चूसि क'
हड्डी फेकैत गेलाह
आ एकटा लहलहाइत टोल सँ
निचेन होइत गेलाह
फेर डी.आइ.जी.इन्जिनक संग

एस.पी.,डी.एस.पी., दरोगा
आ सिपाही पर्यंतक डिब्बा
पाछु लागल बिदा भ' गेल
आ एहि तरहें
एकटा दम तोड़ैत केसक संग
एकटा टोलक चेन्ह धरि मेटा गेल

*

कए पाटी, कए जीप, कए टोपी
आयल, गेल, बात बीति गेल
टोलक जगह पर बूथ बनि गेल
चुनाओ भेल, भाउ भेल
ब्रह्म बाबाक पीड़ी बनल
गिलैबा पर कोठली उठल
मुखिया-पूतक स्वनियोजन भेल
बैंक-लोन सँ चक्की बैसल
आ कए पीढ़ीक भोजन भेल

*

एकबारक समाचार बिसरा गेल
इलाका फेर अपना रस्ते चल' लागल
वौअनमा पंजाब सँ
हरियाणा धरि बौआइत रहल
टोलक प्रति बाँचल हिचकी
आ गामक प्रति बाँचल
आक्रोशे टा खाइत रहल
गाम अयबाक कोनो टा
बहाना समाप्त छलैक
आक्रोशे टा आप्त छलैक

●

गूड़

गोटी खा क' गूड़ केँ बैसाउ नहि
से कयने गूड़ छूटत नहि
शृङ्खलाबद्ध भ' क'
कहियो काँख मे, कहियो कुठाम मे
निकलिते जायत
फेर बाघी केँ जन्म देत
बोखारक कारण बनत
तेँ गूड़क इलाज कर' पड़त
बहुत तनतनाइत अछि?
भरिसक पीज खदकैत हैत
तेँ टहकैत अछि एना
कोठी कि चुल्हाक पाकल माटि किंवा गाइक घी
गूड़क चारु भागक थड़ि पर लगा दियौक
नीक जकाँ लेपू
एहि सँ गूड़क मुँह बनि जायत
गूड़ फुटबाक रस्ता बनि जायत

पीज केँ रत्ती-रत्ती क' निकाल' पड़त
आँखि मूनि लिय'
दाँत कटकटा क' बैसा लिय'
दर्दक परबाहि नहिं करू
मात्र थोड़बे कालक तँ बात छैक

जे कष्ट हैत-कनियेँ काल हैत
जे राम, से राम
फेर कष्ट सँ मुक्तिए भेटि जायत

गूड़ ओना अनकहु सँ
दबबा सकैत छी
मुदा से ओतेक नीक नहि
ई कमजोर लोक करैत अछि
अपने सँ अपन गूड़ बहयबाक
कष्टक अनुभूतिक आनन्द सँ
अपना-आप केँ वंचित जुनि करु

जे राम, से राम
एकबेर कसि क' दाबि दियौक
पहिने बलबला क' पीज निकलत
तखन खून मिझहर कठपीज निकलत
एहि कठपीज केँ बूझि क'
दयाभावक संचार नहि करब
से कयने एकबेर पुनः अहाँक क्रान्ति-दर्द
दर्द-क्रान्ति बनि क' रहि जायत
आ ई धोखा बहुत महग पड़त
बहुत-बहुत महग

तेँ कठपीज आ मरलाहा कारी खून
निकलब जरूरी छैक
मुदा कठपीज आ
मरलाहा कारी खूनो निकलि गेने
अहाँ शिथिल नहि हैब
थोड़ेक बाँकी रहत तखनो
असली शत्रु तँ खोह मे नुकायल रहल
चारु कात सँ चण्डाल भ' क'
गोज्ज' पड़त गूड़ केँ
करहड़ गोज्जैत देखने छिऐक ककरो?
डोका गोज्जैत
देखने छिऐक ककरो कचिया सँ?

अपना दूनू हाथक औंठा केँ
कचिया हाँसू बनब पड़त
तखनहि टा खीलक अन्दाज हैत
आ ओकर ब्यूह-रचना
भंग क' सकब अहाँ

चारू कात सँ घेरला/खेहारला पर
ओ खील पच् द' बहार निकलि जायत
लत्ता सँ पीज, कठपीज, मुइलहा कारी खून आ खील
सभटा पोछि क'
गुँहखत्ता मे फेकि देबैक
जाहि सँ फेर ककरो कोनो प्रकारक
संक्रमण नहि होइक
अहाँक आँखि सँ तत्काल नोरो खसि सकैए
मुदा अहाँकेँ थोड़ेक आफियत जरूर हैत
दर्द आ आफियत दुनू/थोड़ेक-थोड़ेक
तकरा बाद एक्केटा काज बाँकी रहत
भूतपूर्व गूड़क मूँह पर
तूर-तेल लगायब
दू-एक-बेर
भ' सकैए कनियें-कनियें कठखून
गूड़ सँ रिसैत रहय
गोटेक कपड़ो खराब करय
मुदा तहिया मधुरतम निन्नक
आनन्द भेटत अहाँकेँ
तेँ एकरा बैसाउ नहि
जे राम, से राम
अन्तिम रूपें खील निकालबाक इन्तजाम हेबाक चाही
तखनहि खिलतोड़ जमीनक रचना सम्भव हैत
जे राम, से राम...

•

अहाँक फरमानक नियति

अहाँ बेर-बेर जारी
करैत रहलहुँ अछि फरमान
हम उनटबैत रहलहुँ अछि
बेर-बेर आसमानक छत्ता
अहाँक बहसल-बहसल फरमान
हमरा सभक बीच
बझबैत रहल अछि लड़ाई
हम बाल्टीनक-बाल्टीन/शान्ति
झोंकैत रहलहुँ अछि
जखन-जखन बेगरता
भेल अछि अहाँकेँ
हमरा माय-बहिन केँ
मानि लेलहुँ अहाँ
अप्पन माय-बहिन
फेर पाँच बरख लेल
बनि गेल ओ सब चीज-वस्तु
अहाँक 'टच एण्ड गो'वला लुतुक
बनबैत रहल अछि
स्पन्दनशील केँ स्पन्दनहीन
आ जितैत रहलहुँ अहाँ
एक-एक टा रेप-केस
मुट्ठी मे बन्न अहाँक पावर
बनि जाइछ मुट्ठी खुजिते
ढूसि लैत एकटा अड़ना-पाड़ा
जे मचबैत रहल अछि हड़बिरड़ो
माल-जालक झुण्ड मे
ओकर खूरक छाप
अहाँक पावरक चाण्डालत्वक खिस्सा

कहैत रहल अछि—
अहाँक जेबीक शोभा बनल
हमरा सभक सरकार
हमरा सभकेँ सरकारहीनताक
बोध दैत रहल अछि
अहाँक तर्जनी पर नचैत
निजी-कानून-व्यवस्थाक/
सुदर्शन-चक्र
हमरा सभक व्यवस्था केँ
छकरैत रहल अछि टुकड़ी-टुकड़ी
आर अहाँक मत्स्य-न्याय
लगबैत रहल अछि फँसरी
बँचल-खुचल लोक केँ
लोक केँ आब मुदा सोचहि पड़तैक
अहाँक फरमानक मादे
अहाँक कारी खट-खट
रौदबला चश्मा केँ
जे अन्हरजाली लगा दैछ
अहाँक आँखि मे
करहि पड़तैक फोड़वाक लेल
एकटा अवश्यंभावी सङोर
अहाँक सतत सत्तासीनताक/
मोह-भंग करब
एकटा सहज/मानवीय
आकांक्षा थिक
जकर रुपरेखा
बनेबाक छैक आइ
तखन नहि रहतैक जरुरति
कोनो फरमानक
हमरा-अहाँक जाति केँ

●

कहिया धरि?

ठीक-ठीक चारि बजे भोरहरिया मे
प्रेत भ' गेल एकटा इच्छाक संग
बतियाइत रहब हम
अन्हरायल कुहेस टिपिर-टिपिर क'
नोर बहाओत हमरा टकटकी पर
एकटा अखण्ड भोगक हमर
        अतृप्त इच्छाक छाह
एकटा कल्पना-रातिक प्रेत-छाह
सिहाबैत रहत हमरा कल्पनाशीलता केँ
एकटा स्वर्णमृगक तृष्णा
फुदकि-फुदकि क' आओत हमरा सेज लग
एकटा कल्पना-रातिक प्रेत-छाह
बिदकि-बिदकि क' भगैत जायत
लग आओत आ भगैत जायत
ता लोहट-चीनी-मीलक भोंपू बजतैक
अविचंक ल' लेतैक हमर चौचक निन्न के
हमर लकवा मारल उद्दाम इच्छा
गर्म सीड़क केँ उधेसि फेकत
एकटा सेरायल हाथ
स्टोव मे हावा भर' लागत
एकटा सेरायल हाथ पेटक गुलाम होइत छै
प्रायः सभ बेर बन्न-मुट्ठीक गर्मी
खाली पेटक पलेती मे
        सेराइत रहलैए आइ धरि
हँ त' एकटा लोहट चीनी-मीलक भोंपू पर
निच्छोह भागब भोंपू दिस हम
मुदा हमर प्रेत भ' गेल इच्छाक अतृप्त छाह

हमरा सँ आगूए-आगू भागत
दस डेगक तरपटक त्रासद शून्य-क्षेत्र
हमरा आ/
हमर प्रेत भ' गेल इच्छाक अतृप्त छाहक बीच
सदति-काल धरि बनले रहतैक (?)
सेज सँ भोंपू आ
भोंपू सँ सेज धरिक दूरी मे
कए पुश्त नेङराइत रहत?
एकटा समधानल प्रश्नचिह्नक चोट
लोहट सँ हायाघाट धरि
दाँती-चनरा लगबैत रहत कए पुश्त केँ?
कोसिकन्हाक बालुक टाल पर द'
निच्छोह भगैत/
हमर प्रेतरूपी अतृप्त इच्छाक छाह
ओकर बड़का-बड़का गोराड़ मे हेराइत
माँड़क घोंट, रोटीक टुकड़ी
हकन्न कनैत रहत
कए-कए युग धरि?
कलकलि सँ सड़ल गफ्फी मे
पीज तनतनाइत रहत
माछी भिनभिनाइत रहत
बातरसक दर्द ठेहुन सँ डाँड़ आ
डाँड़ सँ ठेहुन धरि बिनबिनाइत रहत
हमर अखण्ड-भोगक अतृप्त इच्छाक छाह
एकटा असम्भव-मुसकीक
स्वर्णमृगी आखेट मे
कोसिकन्हा सँ लोहट आ
हायाघाट सँ पनिजाब धरि
ढ़हनाइत रहत कहिया धरि
क - हि - या... ध... रि...?

•

एकटा दोसर दिशा मे बढ़वाक थिक

हमरा ओइठामक राजपुरुष लोकनि
गद्दी बँचेवाक मोहग्रस्तता केँ
बुझैत रहलाह अछि सनातन-धर्म
ताहि लेल ओ
अनेकानेक अस्त्रक आविष्कार मे
खपबैत रहलाह अछि
बेशुमार निधि आ प्रतिभा
कएटा प्रगतिवादीक तपस्या भंग करवाक कुचकक
नेतृत्व देनिहार ओ राजपुरुष
शालीनताक संग करैत रहलाह अछि
गद्दीनशीनीक हेतु एक-सँ-एक कुकर्म
झाँपन दैत रहलाह अछि जकरा
भाड़ा पर कार्यरत वृहस्पति
रङ-विरङक धार्मिक मोलम्मा चढ़ा क'
हमरा ओइठाम कोनो छद्मवेशी द्वारा
कोनो अहिल्याक शीलभंगे भेला पर
गौतम द्वारा शापित भेला पर/कोनो देह
पाथर भ' क'/नियतिवादक आदर्श-कथा
कहैत रहल अछि
ओहि आदर्शवादी कथा कहवाक
व्यथित-परम्परा केँ तोड़वाक प्रयास
कएटा विप्लवी
करैत रहलाह अछि
विद्रोहक मूल्य बेरम-बेर
भरैत रहलाह अछि
हरक्यूलसक मिथक केँ मात देनिहार

असंख्य षड्यन्त्रक पाश सँ
राज-कामरु केँ
बेरम-बेर मुक्त कयनिहार
विजय-शब्द केँ
अपन अर्थवत्ता देनिहार
हमरा ओइ ठामक लोरिक
आइ लोरिकाइने कनैत अछि
घिसियाउर कटैत अछि,
बौअयनी-भोतिऐनी केँ नियति मानि क'
हमरा गामक चौबटिया पर
पानि डेङबैत अछि
चौबटिया पर ठाढ़ भैयो क'
एकोटा बाट नहि भेटबाक/किंकर्तव्यविमूढ़ता
हमरा गामक लोरिकक सेनाक
नहि छोड़ैत छैक पछोर
ई झाम गूड़ैत जेड़ निकालैत अछि
मशाल आ साइकिल जुलूस कखनो
फी-साइकिल एक बिसटकही पर
एहि ज्ञानपापी सेनाक
एक सेनमा, दोसर सेनमाक
दाढ़ी आ जनउक नाम पर
गीता आ कुरानक नाम पर
तौड़ैत अछि हड्डी, नोचैत अछि मासु
आ फेर कोनो
हाजी-मस्तानक भाखा मे
अपन महानताक पिंगल
        पढ़' लगैत अछि
ओकरा समर्थन मे
कएटा मस्जिद आ मन्दिर सँ
 बोखारी फतवा आ

अटल हिन्दूत्वक फरमान
होब' लगैत छैक जारी
फेर हम सब
इतिहासक कथा सँ ल' क'
वर्तमान धरिक व्यथा केँ
एक खुरचन जिहाद
आ एक चम्मच तथाकथित गर्वोक्ति
(गर्व सँ कहू हम हिन्दू छी)क संग घोटि क'
भ' जाइत छी निचेन
अगिला उकबा उठ' धरिक लेल
भ' जाइत छी प्रतीक्षारत
सम्भावित गुलंजर केँ
भविष्य मानि लेवाक प्रवृतिए
भ' जाइछ हमरा लोकनिक सनातन धर्म
फेर बजा लैत छी हमरा लोकनि
कतो सँ एकटा गिरगिट
अपना-अपना घर मे
आ ओकरा बोली केँ
चुप हेबाक बहाना बना
ठोकि लैत छी आङुर सँ
कोनो चौकी वा जमीन तीन बेर
मानि लैत छी/ओकर चुप हेबाक
तथाकथित निर्देश
भाङक चासनी मे बिला जाइछ
अनेकानेक विप्लवीक विद्रोह
अट्टहास करए लगैत छथि
पुनः पुनः ओ राजपुरुष
समाप्त भ' जाइत छैक
स्वर्गलोक सँ मृत्युलोक धरि
आबयबला रस्ता केँ

मोन रखबाक बेगरता
फल्लां बहिनोक
सामाक चङेरा-पौती मे
दू टा धानक शीश
एक मुट्ठी नवका चूड़ा
नहि भ' सकनि बरु
इन्दर भैया तँ सभबेर
बनबे करताह गाम केर अधिकारी
हुनका नाम पर ठप्पा लगेवाक
हमरा लोकनिक मजबूरी
आजुक व्यवस्थाक खासियत थिक
मुदा ई मजबूरी तोड़' पड़तैक
स्वर्गलोक केँ मृत्युलोक सँ
सम्बन्ध जोड़' पड़तैक
स्वर्ग खोज-खबरि लेल
कोनो मेघदूत केँ पठाब'
कि अपने निच्चाँ आब'
हम सभ स्वर्ग जेबाक मोह
छोड़ि चुकल छी
गोलोकक व्यञ्जनक बदला
खेसारीक बिड़िया बोरि चुकल छी
से प्रवृत करए पड़तैक
लोरिकक सेना केँ
लोरिकाइनि कनबा सँ
लोरिकाइनि गयबा मे
भाड़ा परहक मशाल आ साइकिल जुलूस छोड़ि
गिरगिटी-चुप्पीक निर्देश केँ छोड़ि
एकटा दोसर दिशा मे बढ़बाक थिक
एकटा दोसर दिशा मे चलबाक थिक।

•

यथास्थितिक बादक लेल

ध्रुवतारा आ सांध्य-तारा मे जत'
नहि बूझल जाइक कोनो अन्तर
निश्चय मानू,
गाम थिक ओ हमरे!
जिनगी गुदस्त क' देलनि
जत' पित्ती हमर
ध्रुवतारा हिया-हिया क'—
बटेदारीवला धानक खो पर,
दौन हँकैत-हँकैत,
नहि पड़लनि पुर्री कहियो
गोनू झाक पेनकट्टा छिट्टा जकाँ
नहि भरलनि कोठी
कहियो हमरा पित्तीक
आ हमर पितियाइनि
पाड़ैत रहलीह
चौकनी-कोठी
साले-साल!
जे ढनढनाइत रहलैक, साले-साल!
बाढ़ि आ सुखारक ढेकार मे—
बिलाइत गेलैक उपजा!
पसर सँ किरीन धरि
बड़दक संग
मेंहक तिरपेच्छन करैत
हमर पित्ती
बासि-भात गीड़िक'
अकलबेरा धरि

आड़ि बनबैत हमर पित्ती
साँझ क' सांध्य-तारा केँ
हियाबैत रहलाह
जीवन-भरि
उदासी-पर-उदासी
गाबैत रहलाह!
डूबबा ले'
सांध्य-तारा डूबैत रहल!
उगबा ले'
धुवतारा सेहो उगैत रहल!
आर हमर पित्ती
सुनगैत-मिझाइत घूर लग
राति-राति भरि जागि क'
रौदी आ दहाड़क सर्द केँ
सेदैत रहलाह!
हाफी-पर-हाफी लैत रहलाह!
सोझरबैत रहलाह
अपना जीवनक
ओझरैल सुतरीक लच्छा केँ!
आ लड़ैत रहला
हमरा पितिआइनि सँ
एकटा खौंझायल लड़ाइ
हमर पित्तिआइनि
जकर नहि छलीह कारण
ओ तँ शिकार छलीह स्वयं
हमरा पित्तीक
प्राचीन व्यवस्थाक
आ ओहि खौंझ-युद्धक!
गाम हमर से
गामे अछि एखनो

खौंझ एखनहुँ उतारैत
छथि पित्ती हमर
अपन भाग्यविधाता पर नहि,
भाग्य आ विधाता पर!
कमला आ मेघ पर!
हमरा पितिआइनि पर!
हुनक कपार पर पाड़ल
तीन-चारि टा सरल-रेखा,
हुनकर जीवनक वक्रता छनि!
हुनकर ब्राह्मण हेबाक ई चेन्हास
हुनक दरिद्राक पर्याय छियनि!
विधाताक लिखल
ई तथाकथित लेख?
हुनक जीवन आ दर्शनक
पहिल आ अन्तिम
अध्याय छियनि!
जाहि वर्ण-व्यवस्था पर
गौरव छनि हमर पित्ती केँ,
से हुनका दुइयो साँझक बुतात
जुटा नहि सकलनि कहियो!
तकर अबिनखेद
नहि छनि हुनका!
जनउ ओ तैओ
ओहिना माँजैत छथि
एकोदिष्ट ओ तैओ
ओहिना पूजैत छथि!
गौदान सँ ल' क'
पञ्चदान धरिक विधान मे
फट्टक तोड़ैत
एकचारी उजाड़ैत,

थाड़ी-लोटा लीलाम करैत,
तथाकथित शूद्रक पुरहित
उत्तम झाक तरहत्थी सँ
नोंसि उठा क' नाक मे
ठूसैत पित्ती हमर
गौरव करैत छथि
अपन प्राचीन व्यवस्था पर
किएक तँ हुनकर
वर्तमान व्यवस्था
भ' गेल छनि
एकटा डगमगाइत पुल
जकरा सहारें पार करैछ
एहि देसक
परजातंत्री टेन-गाड़ी
पँचबरखी परीक्षा
पास करैछ ओ
एही डगमगाइत पुलक सहारें
आ फेर यथास्थिति
डेङाब' लगैत छनि
हमरा पित्तीक
सोंठि सनक देह
आँखि सँ, एक बुन्न पानि
मुँह सँ, एकटा किकियाहटि
देह सँ एक बुन्न खून—
खसौने बिना!
हमरा गामक
यथास्थितिक शाइलॉक
पोर्शिया केँ
मात देब जनैत अछि
ओकरा बूझल छैक—

एक बुन्न खून खसौने बिना
कोना काटल जयतैक
एक पाउन्ड मासुक लोथड़ा
अन्टोनियो बनल
हमरा पित्तीक देह सँ!
...से शतरंजक मोहरा बनल,
हमरा पित्तीक ऐंठल देह
यथास्थितिक डाङ सँ
अदौकाल सँ थुड़ाइत-थुड़ाइत
वर्ण-व्यवस्थाक
मरीचिका मे भटकैत
कखनहुँ जमीन्दारी घोड़ा
कखनहुँ राजशाही प्यादा सँ
मात-पर-मात
खाइत हमर पित्ती
हुनक खुट्टा सँ
खुटेसलि हमर पितियाइनि
आ एहने लोक सँ भरल
तंत्रक निष्कियताक दंश भोगैत
पियाजु जकाँ
सोहल जाइत हमर गाम
तहिया एकटा उपक्रम
क' उठल रहय
जहिया एकटा पिल्ला
(राजकमल चौधरीक)
अन्न बेत्रेक/चौबटिया पर
अँतड़ी आ जीह ऐंठि क'
मरि गेल रहैक
गाम उनटि गेल रहैक
लोक यथास्थिति पर

बगदि गेल रहैक
बुझाय लागल रहैक जेना
यथास्थितिक भूत केँ
भुतही-गाछी भगाइये क'
शान्त हेतैक गाम!
मुदा, से भेलैक नहि!
गाम नारा मे बाझि गेल!
गाम पाइ पर बिका गेल!
गाम गोलैसी मे फँसि गेल!
गाम कियारी-कियारी
मे बँटि क'
फेर रसातल मे धँसि गेल!
गाम केँ कार-कौआ
उचङि लेलकैक!
अनकर बखराक
खोराक लुझबा मे
गाम केँ साझी क' क'
ओ कार-कौआ
बसात केँ सेरा देलक!
यथास्थिति द्वारा
पिल्लाक पञ्चदान श्राद्धक
ओरिआओन क' देल गेलैक!
गाम केँ एक साँझक
सुअन्नक लोभ द' क'
परताारि लेल गलैक!
ई मानि लेल गेलैक जे—
भूख सँ मरल ओ पिल्ला
सद्गति केँ प्राप्त क' गेल!
आ एहि तरहेँ
एकटा गरमाइत हवा केँ

सुसुम हेबा सँ पहिनहि
एकटा सर्द ओलावृष्टि द्वारा
चापि देल गेलैक
हमर पित्ती फेर एकबेर
एक मुट्ठी ऐंठ भात खा क'
मुँह सापुट क' लेलनि!
मुट्ठी खोलि लेलनि!
फेर बैस' लगलाह घूर लग—
अपन असालतन
बाबा सँ विरासत मे भेटल
तरहत्थीक सर्द सेदबाक लेल!
तखन गाम हमर सूति रहल!
आ यथास्थिति
देब' लागल पहरा
गामक चारू भागक सिमानक!
ओकरा हाथ मे
भाला आ टॉर्च छलैक!
ग्राम-सेवादल सँ ल' क'
एमेले-एमपी धरि,
नाका आ कचहरी सँ ल' क'
बलौक आ संसद धरि,
हमरा गामक यथास्थिति लग
होइत रहल नतमस्तक!
हमर गाम कागत पर
खल-खल हँसैत रहल!
कएटा सरसकविक लेखिनी सँ
रसकविता बनि-बनि
खसैत रहल
लोक एक-सँ-एक टाटक
एक-सँ-एक रमझौआ मे

राजनीतिक मकड़ी-जाल मे
पल-पल फँसैत रहल!
हड़हाड़ाक खलड़ी मे
नुकायल करेत आ अधसर
हमरा गाम केँ डँसैत रहल!
मुदा तैयो हड़हाड़ाक खालवला
ओहि विषधर सभ केँ
विषहीन आ सज्जन
मानल जाइत रहलैक
बिक्ख झाड़क लेल
यथास्थिति केँ
बजाओल जाइत रहलैक!
जे ओहि करेत-अधसरक
हबक्का सँ बनल दाढ़ पर
पर्दा-पर-पर्दा दैत रहलैक!
लोक यथास्थितिक
उपकारक तर मे दबल
ओकरे गण सभक जहर सँ
बैगनी भेल जाइत सोनित
आ ठाढ़ होइत
केसक दंश केँ
छटपटा-छटपटा क'
नोन सँ दम तोड़ैत
माङुर जकाँ
टूटैत रहल, टूटैत रहल!
गाम हमर,
सैह गाम थिक भाइ!
असल मे ई कथा
इतिहास भ' गेल
अतीतक थिक!

ई कथा हमरा गामक
वर्त्तमानक थिक!
ई कथा हमरा गामक
समस्त ऐन्द्रीय
चेतनाक थिक!
ई कथा हमर!
विपथगामी पित्तीक थिक!
ई कथा
हमर पितियाइनिक
कारुणिक जीवन-गाथा थिक!
ओहि कोठी आ
खेतक थिक ई कथा
जकर कोखि!
जुड़ा नहि सकलैक कहियो!
...से कह' जे लगलहुँ भाइ!
हमरा गामक यथास्थिति,
एकटा बुढ़बा बाघ थिक!
तकर खुरपा सन-सन
पुरान नह थिक!
जे अनगिनत खूनक अलता सँ
रंगायल अछि,
गुलाबी-गुलाबी!
एहि नहक आदंक सँ
हमरा गामक
एक-एक टा लोक
स्वयं बेरा-बेरी पहुँचैत छैक,
पुरने व्यवस्थाक अन्तर्गत
ओहि यथास्थितिक नह लग—
अपना अस्तित्व केँ
चङुरेबाक लेल,

ओहि नह सँ
अपन करेजक
लाल तारभुज केँ
चिरेवाक लेल
किएक तँ
हमरा गाम केँ
नहि छैक बूझल
जे यथास्थितिक बाघ
भ' गेल छैक बूढ़ आब!
जर्जर छैक
ओकर काया!
आदंक-मात्र शेष
रहि गेल छैक ओकर!
कोंढ़-करेज खखोरैत-खखोरैत
मुरछा गेल छैक
नहक धार आब!
ई खुरपा सन-सन नह आब
नहि बिगाड़ि सकय
किछु हमरा सभक
तेँ हमरा
चिकरि-चिकरि क'
कहबाक अछि
अपना गाम केँ भाइ—
जे ढोंगी यथास्थितिक हाथ सँ
छीनि क' भाला आ टॉर्च
निहत्थ क'
देबाक छैक ओकरा!
रोकबाक लेल
सनातनी खून-खतरा,
पसारबाक लेल

अनवरत ज्योतिपुञ्ज!
तेँ हमरा पित्ती केँ
चिकरू कने भाइ!
जे घूर सेदब छोड़ि क'
ओ आबथि कने आगू!
आ लागि जाथि जल्दी सँ
यथास्थितिक टाटी-फरकी
बन्हबाक सङोर मे,
हमर पितिआइनि
इन्तजाम करथि—
आगि-पानि-लोह-पाथरक!
जे मुर्दघट्टी सँ
घुरलाक बाद हम सभ
आगि-पानि-लोह-पाथर छूबि
यथास्थिति सँ
भ' जाइ निचेन!
आ पुनः लागि जाइ
एकटा नव स्थितिक
ओरिआओन मे,
एकटा नीक व्यवस्थाक
निर्माण मे!

•

नागफेनी

मैथिली गजल संकलन

रमेश

1

जखन-जखन साओनक ओहास पड़ैए
हमर छाती मे गजलक लहास बरैए

नव अँखुआ केर की ल' क' स्वागत करू
एत' अगबे मधुमास मे हतास फड़ैए

कतौ आसिन अन्हरायल, कतौ फागुन बौआयल
एत' अगहन के मुँहक- हुलास जरैए

कतौ ललका-पलाश मोह-पाश बनल अछि
कतौ मेहनति-मजूरीक सुवास मरैए

धन्य काठक ई हर, धन्य लोहक ई फाड़
जै पर दिल्ली आ बम्बइ विलास करैए

•

2

एकटा दीप बरै अछि घरक कोन मे
कएटा दीप जरै अछि हमरा मोन मे

टीसक टकुआ भेंसा रहल अछि छाती मे
रस्ता ताकी इच्छाक अकाबोन मे

देख शिकारी, राख गुलेती, झोड़ी मे
फुदक' दे फुद्दी केँ बिजूबोन मे

मासु सेरायल, प्राण हेरायल नाइटी मे
हम बाझल छी, टी.वी. टेलीफोन मे

महफा उठल, कहार गेल अधरतिये मे
गाउ उदासी, कोनो परातीक टोन मे

•

3

एकछाहा इजोड़िया परसि ता-जनम
अमावस्याक कारी पकड़ि लैल छी

हमर बखरा, कटोरा भरि कारी जहर
सोनजिनगी केँ सिक्कड़ जकड़ि ऐल छी

एत' अगबे शिवत्व, नीलकंठो उड़ल
काग-जिनगी कतहु सँ, पकड़ि लैल छी

सुधा-लक्ष्मी गमौल, विष्णु नहियें भेलहुँ
सोनजूहीक आकांक्षा, छकड़ि ऐल छी

एक सागर अन्हारक, मथल जन्म भरि
अन्धसागर बुढ़ारीक पकड़ि लैल छी

•

4

छिन्न-भिन्न आदर्श, डकैए 'उजरा कौआ'
ओजन टेकने खाट, घुनायल चारू पौआ

जर्रा-जर्रा तंत्र बिझायल, चरमर-चरमर
एक्कहि धक्का मात्र जरूरी, तोड़ू हौआ

लाख निकम्मा, घूस कमाक' पूत कमौआ
निर्माता जे देसक, यौवन थौआ-थौआ

लोकक सौदा, देसक सौदा, कुर्त्ते-कुर्त्ता
यैह अछि खौआ, यैह पकौआ, चीन्हि ली बौआ

बैंक एकर छै, टैंक एकर छै, सबकिछु एकरे
एकरे सोना, चानी एकरे, एकरे ढ़ौआ

नैतिकता केर बाँस नदारद, एकरे डाके
करचीक खरड़ा कत' सँ पाबी? काटू झौआ

•

5

सब लोक अछि घबाह, तखन की करत कियो?
सब हाथ अछि अबाह, तखन की करत कियो?

नाताक मृगमरीचिका मे, उजबुजैल लोक
स्वजने सँ सब तबाह, तखन की करत कियो?

एक्के बताह मे कते फिरीशान लोक?
सब आदमी बताह, तखन की करत कियो?

मानव-हुराड़ केस मे हुराड़ दिस सँ—
सब मानवे गबाह, तखन की करत कियो?

बस एकटा रोगी के तँ, फेदरति ने कहल जाय
सब लोके अछि रोगाह, तखन की करत कियो?

•

6

राज अराजकता केर भ' गेल
सम्बन्धक अनुबन्ध नथैल

लोके लोकक मथदुःखी अछि
नाताक लत्ती, लोक गंथैल

चारा क्यो फेकि आयल घाट पर
वंशी ककरो मुदा पथैल

बइमानीक विरोध नदारद
मथनी सँ ईमान मथैल

दुनियाँ, ईश्वर, धर्म, अमीरक
निर्धन, रौदी-बाढ़ि बथैल

•

7

ई दुनियाँ, ई जिनगी, ई नोर
कियो वेसी फिरीसान, कियो थोड़

रोज टूटय जुआनी अरड़ा क'
लागि घून बीते-बीत, पोरे-पोर

पाप मे लिप्त दिन आर राति
दुन्नूक पाप सँ रोगैल भोर

नोरे पाथेय ककरो जन्म भरि
जिनगी केर हारल घोड़दौड़

अमावसी तिमिर मे उजबुजाइत
पूर्णिमाक दुधिया इजोड़

•

8

सौंस-अन्हरिया नङटे नाचय
खण्ड-पखण्ड इजोरिया भेलछि

जिनगी-महफा, जिनगी उघइत
अपने लोक, कहरिया भेलछि

गहवर, पीड़ी, मुँह घुमाबय
भगते आइ बहरिया भेलछि

जीवन-मूल्य पतित भेल कतबा?
राहड़ि आइ रहड़िया भेलछि

के देत बोतल भाइ फिनाइलक?
सौंसे घर नङरिया भेलछि

छत्तीस केर सम्बन्ध बनल अछि
गामोक लोक शहरिया भेलछि

एखनहि एकटा मैक्सी फाटि गेल
सुन्न मशान बजरिया भेलछि

•

9

देख चिनगी बोकर, ने तँ पेन टूटि जो
देख जिनगी पकड़, ने तँ टेन छूटि जो

बाट थाकै ने दोस, सोच-सोच मोने-मोन
देख ठोकर पर उड़, ने तँ गेन फुटि जो

एत' औंघयने दाना ने भेटतौ एको
देख भूखे सँ मर, ने तँ धान लूटि खो

एक टुकड़ो संघर्षक, सुआदि क' रमेश
देख स्वर्गों सँ नीक, ने तँ बाङ कूटि जो

लाख-लाख कोस सागर के अगम-अगम जल
देख हेलवाक छौ दोस, तँ तुरंत जुटि जो

•

10

चर-चाँचड़ मे जिनगी बौआइत अछि कतौ
उजरा-आँचर मे चिनगी औनाइत अछि कतौ

जे किसलय-कनोजरि के कामना केलक
से कोरो-बड़ी भेल घुनाइत अछि कतौ

जे जिनगी भरि धूआ के धूनैत रहल
से अन्तिम-घड़ी मे गन्हाइत अछि कतौ

जे चन्ना-तरेगन कें तोड़य चलल
से आइ-शमशान मे धुंआइत अछि कतौ

जे झंडा उठौलक समाजवाद केर
से खरतर-केथरी पर घिनाइत अछि कतौ

•

11

ई जिनगी अपना मे एक अलबम छी
जे अपन-अपन खेरहा कहैत अछि

ककरो तील-चाउर खाइये क' की हेतै?
सभ अपन-अपन बखरा बहैत अछि

अहाँक असगर उतफाल भेने की होयत?
सभ अपन-अपन ताक मे रहैत अछि

कियो ककरो पुछारि क' क' की करतै?
सभ अपन-अपन दर्द के पिबैत अछि

ककरो गूड़ो-खुद्दी बरू नै भेटओ
सभ अपन-अपन छाल्ही महैत अछि

कियो टाले ठोकैए त' की करबै?
सभ अपन-अपन फड़की बन्हैत अछि

•

12

सौंथ जए टा चाही, तए टा छूबि लिय'
टीस मुदा ताजिन्दगी रहैत छै

घाव छूटि जैत, मलहम ई लेपि लिय'
चेन्ह मुदा ताजिन्दगी रहैत छै

लाख-लाख बेर गंगा मे डूब लिय'
दाग मुदा ताजिन्दगी रहैत छै

अहाँ कतबो अपना केँ गछारि लिय'
आगि मुदा ताजिन्दगी रहैत छै

ओना क्षण भरि मे प्रीति अहाँ तोड़ लिय'
दर्द मुदा ताजिन्दगी रहैत छै

•

13

गरम हवा केँ कटैए पंखा
हवा मुदा गरमाएल जाइत अछि

कहिया चकला केँ उनटयबै?
मौसम तँ लरमाएल जाइत अछि

रंग-विरंगक हो सङोर, सभ
समाङ केँ भरमाएल जाइत अछि

केहेन प्रजा केर केहन तंत्र?
रंगदारी-टैक्स फरमाएल जाइत अछि

●

14

हम तोहर आराध्य देव बनले रहबौ
तोँ हम्मर आराधना करैत रह

हम लाठी के जोर सँ जितबे करबौ
तोँ अपने मे कटि क' मरैत रह

हमर अस्सी हाथक अँतड़ी बढ़िते रहत
तोँ दैब-दैब क' क' कनैत रह

हम संसद मे चिकरि-2 भाषण करब
तोँ सड़ल खराँत ले' सड़ैत रह

हमर टाका आ गुण्डा उड़ाँते रहत
तोँ जनतंत्रक माला जपैत रह

हमर धोधि एहिना चतरिते जेतौ
तोँ मार्क्स आर लेनिन पढ़ैत रह

•

15

फेर लालकिला, ताजमहल बनबैत रहब
पहिने टटघरे-भितघर केँ टीपि-टापि ली

जखन दर्देक कनतोरा वसीयतनामा
तखन गुदरीयो जिनगी केँ सीबि-साबि ली

ओना बुझिते छी, जिन्दगी नोरेक इतिहास
तैओ दुइयो-चारियो क्षण केँ जीबि-जाबि ली

फेर फगुआ आ चैतावर, गाबैत रहब
पहिने रोटी आ भासा केँ गीत गाबि ली

तखन सुस्तायब, बतियायब पोख भरि मीत
पहिने लगिचायल यात्रा केँ थाह पाबि ली

•

16

जामु आ गम्हारि केर छाह तर मे
बाँस केर कोपर सुखैल जा रहल

देह केर भूखल दुनियाँ बजार मे
पेट केर भूखल बिकैल जा रहल

स्वार्थ केर पोखरि मे स्वर्ण घाट लेल
पोखरि-पर-पोखरि बिखैल जा रहल

स्वर्ण दीप केर दीर्घ आयु लेल आइ
माँटिक दिवारी मिझैल जा रहल

चानी सन जिनगी ले' जिनगी भरि लोक
जिनगी के जाँत मे पिसैल जा रहल

भादव के कजरायल रजनी मे आइ
आसिन के चन्द्रमा बिलैल जा रहल

•

17

हरेक युवा-तुर्क फनफनैल अछि किए?
हरेक गली-कुच्ची सनसनैल अछि किए?

संसद सँ ल' क' पंचायत धरि मीत
जनतंत्रक रीढ़ चरमरैल अछि किए?

इन्द्रधुनष पहिनहि अलोपित भ' गेल
पूर्णिमाक चान आइ खड़ैल अछि किए?

आरि-आरि अडैठी-मोड़ क' उठल
कमला आ कोसी सोनितैल अछि किए?

'बमकि'-उठल' पैर आर 'सनकि'-'उठल' हाथ
नग्रक हर चौक गनगनैल अछि किए?

•

18

आइ फेर सुरुज ओला उगल' लागल अछि
आइ फेर चान चिनगी उझल' लागल अछि

चोला बदलने हुराड़ केँ परेखि
आइ फेर लास लोकक टहल' लागल अछि

सुगबुगा रहल अछि निमुआन भेल सड़क
आइ फेर गाम देखू खौल' लागल अछि

रक्त चूसि-चूसि क' बनौल गेल सोन
आइ फेर राङ भ' क' गल' लागल अछि

छेकने अकास केँ जे मेघ अछि, हटत
आइ फेर मीत मोसिम, बदल' लागल अछि

•

19

तोँ जरैत रह, जरबे ले' जन्म लेने छेँ
तोँ बरैत रह, बरबे ले, जन्म लेने छेँ

विरासत मे भेटल बपौती कर्जा
तोँ भरैत रह, भरबे ले' जन्म लेने छेँ

अपन अस्मिता ले' हरान जन्म भरि
तोँ सड़ैत रह, सड़बे ले' जन्म लेने छेँ

अपने कमायल सुपत बोनि लेल
तोँ लड़ैत रह, लड़बे ले' जन्म लेने छेँ

लहक-चहक नारा पर बेर-बेर स्वत्व
तोँ ओड़ैत रह, ओड़बे ले, जन्म लेने छेँ

•

20

रक्षक बइमान अछि खबरदार
फाटल इमान अछि, खबरदार!

कर्फ्यू अछि, पट जल्दी बन्न करू
राइफल समधान अछि, खबरदार

मुर्दा शहर के नहि हाल पुछू
बातल शैतान अछि, खबरदार!

केहनो दर्जी आबय मोंछ टेरि
फाटल असमान अछि, खबरदार!

गिद्ध चील, कौआ नेहाल भेल
पाटल शमशान अछि, खबरदार!

•

21

घर-घर के हाल अछि बेहाल भेल
लोके केँ लोक अछि जपाल भेल

अन्न, वस्त्र लोक सँ रूसल जाय
देसक जनसंख्या गदाल भेल

सालो भरि कातिक पहुनाइ करय
क्षण-क्षण के काल आइ काल भेल

अपने बखारी मे सिंघ काटि
लोक आइ देखू नेहाल भेल

लोके कुकूर पर भूकि रहल
वाह-वाह! ई तँ कमाल भेल

घूस-पेंच-पैरवी युगधर्म बनल
हर महाल 'हँड़िया-महाल' भेल

'उजरे रंग' देस केँ उजाड़ि रहल
'उजरे रंग' सबठाँ रछपाल भेल

जनता निरीह इचना-कोतरी
शासन-चंडाल महाजाल भेल

भूख-भूख सगरो अनघोल मचल
शहरक-शहर कंकाल भेल

चारू भर मूसक साम्राज्य अछि
गाम-गाम चालनि जंजाल भेल

सय-सय टा खून केने बाघ पर
बाघे निसपीट्टर बहाल भेल

मरियो क' लोक सब कत' जायत?
यमराजोक घर मे हड़ताल भेल

•

22

इतिहासक गली मे भविष्य चँछा गेल
जिनगीक दस्तावेज नोरे सँ लिखा गेल

लाह बनल जिनगी बरकैते रहल
कैक्टस-दर-कैक्टस केँ सेज ओछा गेल

धूरा मे, गरदा मे फदकैत छलौं
अनबधाने जिनगीक लीलाम गछा गेल

गोधियाँक विश्वास आँखि दबने रहल
गोट-गोट गोटरस आगू सँ बिछा गेल

एकरत्ती आँखि ओना लागल कि नहि
ताजिनगीक अरजल पलभरि मे पोछा गेल

आरिक सिरखार टाल ठोकैत रहल
छ' छ' क' सगरो जिरात कछा गेल

•

23

बाँतर सोराज भेल, लोक कत' जायत?
पुलिस दगाबाज भेल, लोक कत' जायत?

जनतन्त्रक भोज मे, आँजुर भरि भात लेल
जनते मुँहताज भेल, लोक कत' जायत?

गमगमही नारा आ चमचमही झंडा मे
गुण्डा केर राज भेल, लोक कत' जायत?

हत्या, बलात्कार, बेकारी बढ़लै तँ
शासन केँ नाज भेल, लोक कत' जायत?

उजरा पोशाक केर करिया सियाही
लोके केँ लाज भेल, लोक कत' जायत?

•

24

आउ, चली गाबी हम क्रान्तिक संगीत
गर्म-गर्म सोनित उतफाल भेल मीत

धाप भरि धरती लीलाम करी कहुना
अपना-अपना ले, अकास भरि बीत

धमनी-सँ-शीरा धरि कारी सोनित बहय
राजनीति-राबड़ी गुरीच सनक तीत

कोतवाली नाका सँ सफदरजंग रोड धरि
पोर-पोर घूनल अछि, चहकल अछि भीत

ठोस सन व्यवस्था बहाल करी अपना ले'
तोड़ी ओ फोंकिला अजायब सन रीत

•

25

हवन कुण्ड सोनित सँ कुण्डाबोर करू
जनता केँ समिधा बनबा क' थोड़ करू

अपने क्रान्तिक अग्रदूत, नेता भेलिऐ
भगजोगनी चमका क' नवका भोर करू

जनता केँ सेवक अपने हे महासन्त
जन सेविका के सोना पोरे-पोर करू

गेल अकाल, गरीबी, बेकारी भागल
किनुआ कोइलीक मुँहे कू-कू शोर करू

डारि-डारि पर शुक-सारिका बखान करत
अपन कोसलिया राजकोष नहि खोर करू

राजनीति-कठपुतरी प्रभुजी, दासी बनल
सुरा-सुन्दरीक पूजन तारम-तोड़ करू

•

26

लाख-लाख आँखि केर लाख-लाख सपना
एक्कहि धक्का मे सब टूटि जाइत छै

मुट्ठी भरि खुशी लोक जुटबैए कहुना क'
एक्कहि टा बिरड़ो से लूटि जाइत छै

कामनाक कोहा केँ भावनाक आबा मे
पकबय, तैओ कोहा फूटि जाइत छै

जिनगी भरि लोक केना नाता भनाबैए
गरु पड़ला पर सब छूटि जाइत छै

धान बनल जिनगी केँ समय चण्डाल
दुनियाँ के ढ़ेकी मे कूटि जाइत छै

•

27

अपन-अपन बखरा केँ बालु आउ फाँकी
अपन-अपन गदहिया जिनगी केँ हाँकी

खन्धक नहि, खदुका नहि, मरुभूमिक यात्रा
छाह एक संगी, सेहो दैए नाँकी

तोहर बसन्त? फूल मुसुका क' पुछलक
बाँझीक कपार कत' गुलमोहरक झाँकी?

क' क' अडेठी-मोड़ ठाढ़ भेल जिनगी
कि अचके मे फूटि गेल गत्र-गत्र टाँकी

भूआ आ ठेडी सँ पाला छोड़ौलहुँ कि
पोर-पोर चिहुँटि गेल, अगबे चौरकाँटी

नागिन के डंसलाहा, केस काँट-काँट भेल
गूनी के डाकनि तँ एखनहुँ अछि बाँकी

•

28

गुड़चल्ला एहि जनतन्त्रक इतिहास घिना गेल, माँ गंगे
शीशो-खैरक साड़िल बड़ी-धरनि घुना गेल, माँ गंगे

सत्तरि कोटिक आँखि टकाटक पाथर भेल
आशा आ आस्था केर पाया-पुल दहा गेल, माँ गंगे

राजनीति अपना मग मे रेड़ियाइत रहल
जन-शासन मे जनते ले' महजाल बुना गेल, माँ गंगे

सय-सय वर्षक बलिदानक परिणाम केहेन?
किछु-धारा अनुसूची मे, तकदीर लिखा गेल, माँ गंगे

उपलब्धिक नाँ पर खाली, गुण्डागर्दी कठिया-लारनि
नेत-इमान-विवेक देस सँ कत' बिला गेल, माँ गंगे?

डिग्री केर पर्याय बनल छूराबाजी आ बेकारी
चौक-चौक पर, टका-टका मे, देह बिका गेल, माँ गंगे

हत्या, चोरि, अकाल, गरीबी, यैह व्यवस्थाक अंग बनल
राम-राज केर सपना सड़िक' आइ गन्हा गेल, माँ गंगे

•

29

किए दुश्मनी गजल सँ श्रीमान्?
गजल तँ अपने 'वीर-इन्द्र' अछि

एकर ने क्यो 'मल्लिक' छै भ्राते
ई 'मोहन' तँ रस-समुन्द्र अछि

आब ने ई 'माशूकाक आँचर'
आब ने ई महफिल-भोगीन्द्र अछि

नहि 'शाकी' नहि 'जाम' 'बन्ध' नहि
ई तँ अगबे अग्नि-पिंड अछि

हमर अहँक दुःख-दर्दक वाहक
काव्य गगन मे एक शशीन्द्र अछि

सहज-प्रवाह, भाव गंभीरे
दुष्यंतक काव्येक-इन्द्र अछि

•

30

हेहरि-तन्त्रक राज, देस केँ शान भेल अछि
हाथ-पयर सब लुल्ह, बहिर सब कान भेल अछि

राजनीति केर पोसा जेना अछाहे भूकय
हिजरा सबहक नकली मोंछ-उठान भेल अछि

'आम-लोक' अस्तित्वहीन गुलभंटा खेलय
'खास-लोक' केर गिरगिटपन बलमान भेल अछि

माथ-माथ पर भाइ केना टिकटिकिया नाचय
साग-पात सँ सस्ता लोकक जान भेल अछि

आतंकित सब आँचर, थर-थर दीप कँपैए
अपने अङनाक तुलसी-चौड़ा आन भेल अछि

•

31

लोक-लोक ले' मुट्ठी भरि आकास बनाब' पड़तै
अगिला-पीढ़ी लेल, नव इतिहास बनाब' पड़तै

फटतै तखने मोसिम केँ घेरने कुहेस ई
चौक-चौक पर राति-दिन अगियास जराब' पड़तै

देखल सपना सत्त हेतै, माहौल बदलतै
कादो मे फाँसल जन-जन केँ आस लगाब' पड़तै

हाथ-हाथ के काज, पेट केँ दाना भेटतै
गाम-गाम मे मुदा ताहि ले, अलख जगाब' पड़तै

आबह सूर्य! किरीन अपन भकरार पसारह
अत्याचार, अनीतिक करिया-राज भगाब' पड़तै

•

32

आँखि टहकय, नोर उमकय, की करू?
साँस सुनगय, आँत उनटय, की करू?

ले उठा, सुलफा कियो, दे भोंकि हमरा
आइ हमर अस्तित्व बरकय, की करू?

कामना खकस्याह भ' गेल, तकर गम नहि
पीज पोरे-पोर टहकय, की करू?

के लेतै ई दर्द, पैंच-उधार मीता?
गत्र-गत्र असाइ खदकय, की करू?

लेप ने मलहम आ नै परतार हमरा
देह नस-नस आइ टनकय, की करू?

•

33

हमर 'हम' अहँक 'अहाँ' कत' हेरायल?
दुनूक पिठबा काया किए सेरायल?

ओ सब कौरवी-महारथी थहाथहि
हम सब अभिमन्यु-सन किए घेरायल?

लाख-लाख टा दुःशसना तैयार किए
लाख-लाख द्रोपदी किए डेरायल?

हजार सीता चानन-चरित्र मल्लिका
किऐक सगरो समाज सँ बेरायल?

एक रावण-दुर्योधन के कोल्हु मे
किऐक सौंसे मानवता पेरायल?

•

34

अदौ काल केर थाती अछि
हम्मर अष्पन ई लालकिला

बलिदानी केर प्रेरणापुञ्ज
रक्ते सँ रंगल लालकिला

साम्राज्यबाद जे चतरल छल
तक्कर विध्वंसक लालकिला

ईंटा-ईंटा बजबय ईंटा
सपना सुभाष केर लालकिला

देसक खातिर जे मेटि गेल
तक्कर स्मारक लालकिला

एक्कर न्यों क्यो नहि हिला सकल
पर्याय भारतक लालकिला

•

35

तहिया देस बहुत जागल छल
आइयो देस कहाँ सूतल अछि?

तहिया नस मे सोनित बमकय
आइयो धमनी दड़कि रहल अछि

तहिया गोंहि बहुत उमतल छल
आइयो सुलफा तड़पि रहल अछि

तहिया देस गुलामी भोगलक
आइयो करओट बदलि रहल अछि

खबरदार रे देसक दुश्मन!
आइयो भृकुटी फड़कि रहल अछि

•

36

जामा-मस्जिद दिए अजान
जागह हौ मजदूर-किसान!

आतंकवादक भूत भगाबह
बहसि गेल' अपने सन्तान

घाम-खून सँ पोसलह जकरा
से सन्तति भ' गेल' अकान

न्यों रखलनि सरदार भगत सिंह
से कोना ढ़हि गेल' मकान?

बम फाड़ि क' नानक कानथि
आइ किए बगिया शमशान?

•

37

की चाहय अइ देसक माटि?
युग-युग जिअय तिरंगा झंडा

की मांगय अइ देसक लोक?
भरत-खण्ड नहि खण्ड-पखण्डा

की देखय अइ देसक धर्म?
कोनो भेद नहि मुल्ला-पण्डा

की खोजय अइ देसक जीवन?
राजनीति नहि करय वितंडा

की सोचय अइ देसक जनता?
एक्कहि खिच्चड़ि, एक्कहि हंडा

•

38

लिखि लिखिक' अम्बार लगयलहुँ
रजनी-सजनी? काज ने आओत

पढ़ि-पढ़ि क' विद्वान कहयलहुँ
की पढ़लहुँ? किछु काज ने आओत

गढ़ि-गढ़ि अलंकार, खपि गेलहुँ
की परिचिति? किछु काज ने आओत

मान्यताक अखड़ाहा पर मे–
टलठोकी? किछु काज ने आओत

छोड़ि सरसता, छन्द, गोलैसी
नहि लीखब? किछु काज ने आओत

सुख-सुविधा ले' फिरीसान छी?
लेखन छोड़ि, किछु काज ने आओत

थपड़ी, मंच आ भांगक संगी?
एत्तहि धरि, किछु काज ने आओत

टोन मारिक' हंसू भभा क', मुदा–
फुलझड़ी काज ने आओत

दुहू खूब मैथिली-गाय केँ, मुदा–
दूध ई काज ने आओत

मरब घिना क' जरत पोसल देह
साहित्ये पुनि नाम जियाओत

•

39

हिमगिरि सँ अछि उठल निनाद
हे स्वतंत्रते! जिन्दाबाद!

फन-फन जरय गुलामीक डोरी
बंधुआ-भंगी हो आबाद

दूध बिना नहि बच्चा हिचुकय
कानय नहि पौधा, बिनु खाद

युग-युग जरय दीप अहिबातीक
सिनूर-लहठी नहि बेरबाद

भरि पेट अन्न, देह पर लत्ता-ले'—
ककरो नहि हो अवसाद

सबहक शिक्षा एक जकाँ हो
मठोमाठ सभ मुर्दावाद!

•

40

पोर-पोर पयर मे बेमाय फाटि गेल
एक सेर अन्न नहि, जमाय आबि गेल

छ' छ' बेर धनरोपनी, कटनी नहि भेल
कमला-बलान आबि, मुँह जाबि गेल

बुढ़बा सभ ब्लौक लग नुरियाइते रहि गेल
विरधा-पिलसिम सभ जुआन पाबि गेल

पहिने बइमनमा भुवकंफ आबि गेल
घरखस्सी पाइ मे हड़कंफ आबि गेल

कपरेटी खाद-बीया भेटबे ने कयल
मुखिया-मनेजर कमीशन पाबि गेल

कत' जैत लोक आब? की केना करत?
लोके केर तंत्र आब मुँह बाबि गेल

•

41

बइमान सब इमान केँ लिबबैत जा रहल
आदमी केँ आदमी चिबबैत जा रहल

दुनियाँक नव व्यवस्था ले' अपसियाँत हम
हमरे सँ हमर लास केँ भजबैत जा रहल

रामक रामत्व कत' आइ हेरा गेल?
दसरथ सभ राम केँ कनबैत जा रहल

अज्ञताक धोन्हि केना फाटत? चण्डलबा सभ—
ज्ञानक प्रकाश केँ मिझबैत जा रहल

•

42

ज्ञानक नहि छूति, से विधान बना गेल
जर्जर व्यवस्था, कमान तना गेल

पुलिसबा मोचण्ड, के इज्जति बचौत?
रामनमी-मोहर्रम मे लास गना गेल

अफसर की, बनियाँ की, नेतबा नेहाल
ब्लौकक विकास केँ पलान घिना गेल

न्यायक तराजू मे पासंग भ' गेल
लत-झूस, दोषी-निर्दोष सना गेल

घुसहा-ओकील-जज, न्याय के करत?
मानवता टीसय, तेँ आइ कना गेल

•

43

उसरागा-जिनगी सँ काज की चलत?
छाउर भेल चिनगी सँ आगि की बरत?

गली-गली बास जखन काली-हनुमान
लोक पलेटफारम पर, लोक की करत?

धर्म नहि धारण के योग्य रहल आब
गुण्डा पुजेगरी, अधर्म की जरत?

पाप-पाप सभतरि, पंडीजी घिना गेल
पपियाहा सभ सँ मनुक्ख की फड़त?

अनकर इज्जति के क्यो ख्याल नहि करत
सड़ि-सड़ि क' लोक मरत, लोक की तड़त?

•

44

हुनका ले' राजा, भगवान छनि
हमरा ले' सगरो असमान छै

हुनका ले' धनिकाहा भाय छनि
हमरा ले' दुनियाँ सन्तान छै

हुनक लाख बइमनी तरेगन छनि
हम्मर एक्कहि इमान केहेन चान छै

ओ लक्ष्मीपति भ' क' कंगाल छथि
हमर बोनियों टा छुच्छे महान छै

ओ सुख-शान्ति मङने फिरैत छथि
हमर तेसरे रंग तान आ बितान छै

•

45

पारा-साँढ ढ़हनैल फिरैए
—गाछी-पुर मे खेत चरैए

चुनि क' लाठी-पाइ पठौलक—
पटना, दुनू सिंघ तोड़ैए

जनता मूर्ख तमस्सा देखय
फेर जिताबय, फेर मरैए

मिश्र-फुचुक्का, झाक-फुचुक्का
डाक्टर-फुचुक्का खूब जमैए

पाँचो-साल फगुआ-जुड़ि-शीतल
खेलू, ता मिथिलाम चलैए

भुवकंफ मे बघ-आँत हिलैए
बाढ़ि मे झंझार-पुर्र करैए

मिथिला धह-धह खूब जरैए
खेत जरैए, लोक मरैए

•

46

एक लबनी ताड़ी जँ पीबि लिय' मीत
वोकरि देब जिनगी जे नीमे सन तीत

पीने बिना तँ बइमाने भ' जीब
असली, सूरति तँ लबनी सँ प्रतीत

झाँपन-पर-झाँपन आ चेफड़ी सटैत गेलौं
सत्य केँ सकारी, से कल्पनातीत

साहस नहि भेल बन्धु, त्यागी गुलामी से
मास्टरनीक छौंकी पर लिखलहुँ सब गीत

स्वार्थ केर गुलामी क' जीबि लिय' ओना
मुदा, भेटत ने अन्तोधरि, हिरदे के प्रीत

•

47

शीत चाटू गंगामाइ, भादव मे राति भरि
परुकाँ परजेक्ट बनत, तखन भेटत पानि

छहर बनि जैत तखन, नहरि कटैत
छहर-महर हैत, कते-की-की नहि जानि?

जेबी भरित-क्रान्ति, चेहरा हरित-क्रान्ति
घूस-क्रान्ति, नोट-क्रान्ति, तखन कोन हानि?

गन्हरा-बाहा हो, कि कोसी-परजेक्ट हो
पेट काटू, खेत काटू, छ' छ' समधानि

फेर हेतै भोट, अहाँ औंठा रंगायब ग'
भाषण-आश्वासन केँ खैब सानि-सानि

घरखस्सी टाका आ साइकिल-करखाना हैत
पैंच लेब मुखिया सँ कान आर कानि

कहियनु पिरथी माँ केँ, देह कुरिऔती ग'
दर्शन हैत राजाक, त' दैबो केँ आइनि

•

48

की स्वतन्त्रता ओकरा लेल?
नोन, ने रोटी जकरा लेल?

गणतन्त्रक रखवार हो भूखल—
तोपक सौदा ककरा लेल?

देस बेचि झंडा फहराबय—
से बुधियार आ हम बकलेल?

चमचा, घुसहा, भ्रष्टाचारी—
मठोमाठ कहिया धरि लेल?

गाँधी-टोपी नोर बहाबय
खद्दर-कुर्त्ता भेल ढ़हलेल

चेथड़ा पहिरन, अँतड़ी अईंठल
ई गजल अछि तकरा लेल

•

49

लाली ले' प्यासल सभ दिन हम
कारी पीबैत आबि रहल छी

टुक्का एक ललितगर जिनगीक?
मृत्यु के जीबैत आबि रहल छी

टिमटिमाइत डिबिया पहाड़ पर?
अपसियाँत, नहि पाबि रहल छी

मृत्युविजय केर लाल पतक्खा?
जीवन लग मुँह बाबि रहल छी

फगुनी पछबा? केराक भालरि?
ठोर/पात सीबि-साबि रहल छी

मुँह जाबल बड़द अपने हम?
अनका जाबि ने पाबि रहल छी

•

50

के ककरा सोनितौलक, से के जानत?
के कनखा छिड़ियौलक, से ओ जानत

स्वार्थ कोना क' जीतल से के जानत?
खून कोना क' हारल, से ओ जानत

तरबा भुजबी ककर कोना, से के जानत?
टीस आँखि मे के पीलक, से ओ जानत

रक्त-बन्ध मे गेंठ कोना, से के जानत?
फोंकिला-इज्जति झंपल कोना, से ओ जानत

ककर चरित्रक गंगा मलिछन, के जानत?
ककर चरित्रक गंगा चमचम, ओ जानत

के कटि सभ सँ, असगर रहि गेल, के जानत?
के ककरा ले' बिका गेल, से ओ जानत

•

51

ध' अयलहुँ अछि बन्हकी एखने
सुख केर सूति, शान्ति केर बाली

शान्तिक उजरा पड़बा छटपट
जखने मासु ले' भेल हलाली

आँखि मे पट्टी, हाथ तराजू
न्याय ले' कानथि लाखो काली

गणतन्त्रक इतिहास नछोरल
गुण्डा-राज मे, हाय वैशाली

हारल बोल आ लटकल चेहरा
कत' पड़ायल ठोरक लाली?

भाषण फायँ-फायँ, बन्दूक धायँ-धायँ
हाथ मे थड़-थड़ चाहक प्याली

•

52

गोली-भूजल मासु खेलनि अछि? कोनो बात नहि
संसद तैओ जाय दियनु, ई अपन लोक छथि

बम-भटक्का छोड़ि डेरौलनि, कोनो बात नहि,
भभड़ी छोड़ैत जाठि पकड़लनि, अपन लोक छथि

बूथ उड़ाओल? गाम जड़ाओल? कोनो बात नहि
खूनक छिटका पोछि दियनु क्यो, अपन लोक छथि

धोती धोअह, कलप चढ़ाबह, कोनो बात नहि
आलक रंग ने कनियों बाँचय, अपन लोक छथि

अप्पन धरती बेचि एलाह-ए? कोनो बात नहि
ओही नोट सँ गुण्डा पोसने? अपन लोक छथि

भोट-सुकन्याक शील-हरण? ओ, कोनो बात नहि
डाक्टर अपने! पुलिसो अपने! अपन लोक छथि

•

53

अपने नोर पर हम हँसैत रहल छी
बेर-बेर ठेसि क' खसैत रहल छी

हमरा बेरवादीक अछि थाह नै कतौ
अपने नोछार केँ टीसैत रहल छी

उजड़ि गेलौं, जानि से, दुनियाँ हँसय
दुनियाँ के जाल मे फँसैत रहल छी

सौंसे परिवार, अपन लोक केर मध्य
अपने-मे-अपने बीतैत रहल छी

जीह कूचि-कूचि आर दाँत कटकटा
दर्दे केर घोंट हम घोंटैत रहल छी

सूनत के! ककरा सुनाउ ग' व्यथा?
नोरे केर चीछ हम चीछैत रहल छी।

•

54

अपना समाज-कोल्हु मे तबाह भ' गेलौं
ने मरि सकी, ने जी सकी, घबाह भ' गेलौं

ककरा अपन विपत्ति कही, कतौ ने क्यो भेटय
चेफड़ी सिबैत-सिबैत हम अबाह भ' गेलौं

जकरा अपन बुझै छलौं, सब क्यो नुका रहल
नोरे पिबैत-पिबैत हम बताह भ' गेलौं

जीवन के कामना हमर, रहि गेल छटपटाइत
रोटीक आस मे, टीसैत आह भ' गेलौं

बापक सराध मे, कि बहिन के विआह मे
घर आ घराड़ी बेचि, 'वाह-वाह' भ' गेलौं

•

55

ककरो जिन्दगी-महफा सजाओल जाइत रहलैए
ककरो जिन्दगी-टाटी उठाओल जाइत रहलैए

ककरो स्वप्न भेल साकार, तेँ क्यो टाल ठोकैए
ककरो स्वप्न भुस्सा भ' गेलै, तेँ आँखि पोछैए

ककरो जिन्दगी मे सूर्य स्वर्णिम ऊगि एलैए
ककरो जिन्दगी मे राति काजर पोति गेलैए

ककरो आँखि दुनू, जिन्दगी भरि, आँखि मिलबैए
ककरो आँखि, आँखिक लेल, नित्तः आँखि ओछबैए

ककरो जिन्दगी भरि भोर, धरि नहि राति भेलैए
ककरो जिन्दगी भरि राति, धरि नहि भोर एलैए

ककरो स्वर्णमय जिनगीक, सभदिन आश रहलैए
ककरो नोर केर नहि ओर, से इतिहास रहलैए

•

56

लोके के भीड़ मे हेरैल सन लोक
अपने-सँ-अपने डेरैल सन लोक

घुनलग्गू-जिनगी केँ टाटी बन्हैत
जिनगी सँ टूटल, सेरैल सन लोक

भूखे-पियासे लहालोट भेल
लोकेक थाड़ी मे, नेरैल सन लोक

अपन-अपन दर्द केँ आँखिए मे पीबि
जिनगी के कोल्हु मे पेरैल सन लोक

टीस-वेदनाक सेप घोंटवाक लेल
अपने बन्हेज मे बन्हैल सन लोक

•

57

नित्तः मरैत छी, नित्तः जीबैत छी
माहुर कें अमिय बूझि, नित्तः पीबैत छी।

अस्तित्वक झगड़ा मे कहियो नहिं जितलौं हम
नेहक अनुबरखा मे कहियो नहिं तितलौं हम

केरा केर भालरि हम नित्तः सिबैत छी।
जीवन कें बुझलहुँ हम कठपुतरीक नाच

जीवन केर डोर रहल जीवन भरि काँच
क्षण-क्षण केर आशा मे, छन-छन बितैत छी।

भसिआयल जाइत अपन भावना मे हम
भोतिआयल जाइत अपन अनमना मे हम

हमहीं नहिं 'हम' मुदा, बनिक' जीबैत छी।

•

58

नोर केर एहि बाढ़ि मे हम भास बनि भसियाइत रहलौं
बिना ठर-ठेकार केर हम जाइत रहलौं, जाइत रहलौं

घाव पहिने देल, नीमक फेर छीटल गेल ओइ पर
आर टीसक लेल, बेरम-बेर हम पिजुआइत रहलौं

कोनो गाछक छाह नहिं छल, वेदना केर थाह नहिं छल
आर प्यासल हम, रेगिस्तान मे भोतियाइत रहलौं।

हम टाटी पर पड़ल आ प्रेत बुझि सभ क्यो पड़ायल
आर यमदूते सँ कफ्फन लेल हम बतियाइत रहलौं

जरि-पजरि कऽ राख जिनगी, चिता पर्यंतो सेराएल
आर नव जिनगी ले' हम, शमशान मे चिचिआइत रहलौं।

•

परिशिष्ट

पाथर पर दूभि
कविता-संग्रह : रमेश
(1997-2004 ई.)

स्वत्वाधिकार : श्रीमती माला झा

प्रथम संस्करण : 21 फरवरी, 2004 ई.
लोकार्पण : पचासम कथागोष्ठी, दरभंगा
डॉ. शिवशंकर श्रीनिवास द्वारा
आवरण : सुस्मिता पाठक
प्रकाशक : किसुन संकल्प लोक, सुपौल

दोसर संस्करण : 2019 ई.
प्रकाशक
नवारम्भ
मधुबनी : वार्ड न.-2,
निकट राम-जानकी मन्दिर, पिन-847211
Email : navarambhprakashan@gmail.com
पटना : 63, एम.आई.जी.
हनुमान नगर, पिन-800020

मो.- 9304349384

मुद्रक
आर.के. ऑफसेट प्रोसेस
नवीन शाहदरा, दिल्ली-32

समर्पण
(पाथर पर दूभि)

मिथिलाक संघर्षरत
जनसमुदाय कें

रमेश

आजुक कविताक वर्णमाला

एक

आजुक मैथिली कबिताक मूल स्वर प्रतिरोध, संघर्ष आ जीवनक प्रति बदलैत मूल्य आ दृष्टिकोण अछि। जीवन के ओकर सम्पूर्णता आ सोद्देश्यतामे उचित सौन्दर्यबोधक संग देखब, आजुक कविताक प्रवृति थिक। जीवनक उत्ताप आ सकारात्मक दृष्टिकोण, समाजिक संवेदना आ सरीकार, कविताक सामाजिक जिम्मेवारीक अभिव्यक्ति, संघर्षशीताक जय आ तकर संग जीवनक जटिलता आ सौन्दर्यबोध दुनूक अन्योन्याश्रितता आदि आजुक कविताक विविध अवश्यंभावी स्वर, प्रवृत्ति स्वरूप आ आवश्यक शर्त्त थिक।

आजुक मैथिली कविताक 'टर्निंग प्वाइंट' हम यात्री, राजकमल, किरणक कविता स' एक्कहि संग मानै छी। जीवन आ जगतक प्रति एहि तीनू महाकविक आधुनिक अवधारणा मैथिली काव्य-संसारमे नव रूपमे, नव कथ्यक संग अत्यंत प्रभावशाली ढंग स' आयल, तेँ ई 'मोड़-बिन्दु' प्रमाणित भेल। राजकमलक व्यक्तिबादी चेतना आ यात्रीजीक समष्टिगत चेतना-दुनू मिलिक' मैथिली कविता के धनिक आ मजगूत आधार देलक। एहि सँ पूर्वहु अनेकानेक 'मोड़-बिन्दु' आयल छल—जेना महाकवि फतूर, चन्दा झा, भुवनजी, किसुनजी आदिक काव्य स'। मुदा यात्री-राजकमलक 'मोड़-बिन्दु' अधिक चमत्कारपूर्ण छल, ताहिमे कोन सन्देह? तकर बादो सोमदेवक सहजतावादी मोड़, मायानन्द मिश्रक अभिव्यंजनावादी मोड़, जीवकान्तक प्रकृतिवादी मोड़, कुलानन्द मिश्र आ सुकान्त सोमक वैचारिकी मोड़ आ कीर्त्तिनारायण मिश्रक तदर्थवादी आ प्रतिबद्धतावादी मोड़ आयल छल। अग्निजीवी मोड़ आयल छल। तखन फेर आइ एकाध अत्याधुनिक कवि अपना ढंगें मोड़ देबाक लेल सेहो सक्रिय छथि, जे कि हमरे लोकनिक पीढ़ीक छथि। एहि कविता के 'आधुनिक कविता' वा 'नव-कविता' कोनो नाम देल जा सकैए। शिल्प (रूप-विधान), भाव (दृश्य संसार) स्वरूप, त्वरा आ आवेग, प्रभावान्विति, सम्प्रेषणक डिग्री, सहजता आदि सभ स्तर पर ई पूर्वक पारंपरिक 'जीर्ण-काव्य' स' एकदम्मे अलग छल। तेँ 'नव-कविता'क नाम पर नकघोंकचीक बेमारी स' ग्रस्त प्राचीनतावादी मानसिकताक व्यक्तिक परवाहि करबाक कोनो टा बेगरता नै अछि।

आजुक मैथिली कविता अपन समृद्ध काव्य-परंपराक अनेक वस्तु आ

तत्वक नव रूपमे विकास क' नव-नव संस्करण प्रस्तुत केलक अछि। विद्यापतिक काव्यमे जे जीवनक प्रति दृष्टिकोण अछि, जीवनक विद्रूपताक सजीव चित्रण अछि, तकर ऋण स' आजुक मैथिली काव्य कोना उऋण भ' सकैछ? एकरा एकटा उदाहरण स' स्पष्ट करए चाहब। विद्यापतिक पाँती अछि 'जनम होअओ जनु जौं पुनि होय, जुवती भए जनमओं जनु कोय।' आब देखू जे आजुक समाज आ कवितामे नारी शोषणक चित्रण अइ पांतीक कतेक ऋणी अछि? तेँ पारंपरिक कवितामे नुकायल समृद्ध वस्तु ल' क' ओकर विकास करबाक आ नव तत्व आ अन्तर्कथ्यक संधान करबाक—दुनूक जरूरति छैक। निस्संदेह दुनू स्तरक काज करैत, आँखि हमर अपनहि रहत आ संगहि 'गन्हायल जीर्ण-काव्य' आ पारंपरिक काव्यमे नुकायल समृद्ध वस्तुक अन्तर के बुझबाक अवगति अवश्य चाही। आजुक काव्यमे लोक कल्याण प्रमुख तत्व होइए, जखनकि पूर्व-रागबला काव्यक मुख्य प्रयोजने लोक-रंजन होइ छल।

प्रेम-श्रृंगारक सपाट वर्णनक उद्देश्य साबिक-युगमे की होइ छल? नायिका-वर्णनामे रस-निष्पत्ति, लोक-रंजन वा स्वान्तः सुख। आ ओही वस्तुक जखन आजुक प्रेमकवि आधुनिक ढंग स' उपयोग करैए त' जीवनक स्पन्दन स' भरल-पुरल उपमा-उपमान वा आधुनिक बिम्ब-विधान ताहि युगक कविता स' फराक स्वरूप आजुक कविता उपस्थापित करैत अछि, जाहिमे जीवनक सौन्दर्य-बोध, संघर्ष आ स्पंदन उपस्थित रहैछ। विद्यापति आ ज्योतिरीश्वरक नायिका-वर्णना हमरा लोकनिक थाती थिक, जकर न्यों पर कतओक उपलब्धि आ विकास हम सभ कैल अछि। एक सय पारंपरिक बसन्त-वर्णन के मोन पाडू आ किरणजीक— 'के बताह कवि भाङ पीबि स्वागत वसन्त अछि गाबि रहल?' कें मोन पाडू।

विद्यापतिक 'कण्टक मांझ कुसुम परगास, भंवर विकल नहि पाबय पास' के मोन पाडू आ दीर्घ प्रेम-कविता 'नहि, आब नहि' (रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर') वा आने आधुनिक प्रेम-काव्यके मोन पाडू। विद्यापति आ मधुपजीक 'राधा-विरह' आ आजुक कविताक विरह-काव्य के एक्के ठाम राखि ई अन्तर सहजहिं स्पष्ट कैल जा सकैछ, जे पारंपरिक काव्यक कोन न्यों पर आजुक अंखिगर कवि केहेन 'भवन' ठाढ़ केलनि अछि। वस्तुतः एहि ढंगक मानक शोध आ आलोचना एखन भेवे कहाँ कैल अछि?

आजुक कवितामे (अपितु एना कही जे किछु गनल-चुनल नवमदशकीय नवकविक दशमदशकीय कवितामे) जीवन, समय आ साहित्यक प्रति आस्था आ विश्वासक स्वर एतेक देखार आ गहींर अछि जे एकैसम शताब्दीक समय आ समाजमे अपन हस्तक्षेप प्रासंगिक बना क' अबस्से राखि सकत। हमरा लोकनिक कविता टन-टन बजैए आ ओकर प्रतिध्वनि पाठकक कानमे गूंज उत्पन्न करैए, जखनकि पूर्व-पीढ़ीक कविता गोङ आ एकरस होइए, संकेतक मात्र। ओइमे कए तरहक 'बोल्डनेस' क अभाव अछि।

मानवीय मूल्यक प्रति प्रत्तिबद्धता, समष्टिगत दृष्टिकोण, इतिहास आ परंपराक मूल्यांकन-क्षमता, जनवादी नजरिया, बहुजन समाजक जीवनक विविध आयामक कवितामे समावेश, माटि पर छिड़िआयल जनवादी संस्कृतिक तत्व सबहक समावेश, कथ्यक पिजाओल धार आ काव्यक उपरी स्वरूपमे उभरैत परिवर्त्तन आदि एहेन तत्व थिक, जे सदीक अन्तमे हमरा स्पष्ट देखा पड़ि रहल अदि। आजुक कविक काव्य के गोलबन्द होइत समवेत स्वरक आगू-आगू चलबाक साधंस छैक, आँखि आ अन्तर्दृष्टियो छैक। अगिला शताब्दीमे आजुक कविताक प्रासंगिकता बनल रहबाक ई प्रबल कारण थिक जे नव-नव जटिल समस्याक आक्रमणक सामना ई सफलतापूर्वक क' सकत। समस्या सभ थिक— नव आर्थिक उपनिवेशवाद, उत्तर-आधुनिकता सम्बन्धी समस्या, एलेक्ट्रोनिक आ सूचना-तंत्रक आक्रमण, भूमंडलीकरण, हथियार-संस्कृति, सामन्ती अवशेष आ पूंजीवाद द्वारा बूनल जा रहल नवीन प्रकारक गुलामीक जाल आदि। हमरे सबहक पीढ़ी लग ई आँखि छै, जे अइ सभ चुनौती सँ परिचित अछि। अपन पूर्वक पीढ़ीक अधिकतर कविगण स' हमरा आब कोनो नव आ बेशी आशा नहि अछि, अर्थात हुनका लोकनिक काव्यमे ओइ तत्व सबहक नितान्त अभाव अछि जे एकैसम शताब्दीक चुनौती सबहक सामना सक्षमतापूर्वक क' सकत। आब ओ सभ अपन नव छवि स्थापित नै क' सकता, अपना परंपराक अनुरूप काज करैत रहता।

आजुक समयमे अनेक पीढ़ीक कवि एक संग सृजनरत छथि। हमरा लोकनिक पीढीक सीमाक संख्या आन पीढ़ीक कविगणक अपेक्षा न्यूनतम अछि। तथापि मोटा-मोटी एकटा पैघ सीमा (अथवा अभाव) ई अछि, जे दलित-जीवन प्रमुखता स' नहि आबि रहल अछि कवितामे। आजुक कवितामे नारी-जीवनक दंश त' आबि रहल अछि, मुदा विभिन्न प्रकारक दलितक जीवनक विभिन्न प्रकारक दर्दक अनुपस्थित रहब समाज, समय, साहित्य आ कविता लेल दुःखद आ

चिन्ताजनक थिक। अगिला शताब्दी नारी आ 'वास्तविक दलितक' थिकनि, से हम निस्संदेह कहि सकै छी। तेँ एहना स्थितिमे तकर चिन्ता आजुक मैथिली कविता के करबाक छैक।

फेर काव्यमे ऐतिहासिक-चेतना आनब समयक मांग थिक। आइ हम सभ छटपटा रहल छी जे काव्यक लेल नव विम्ब-बिधानक कोना रचना हो। काव्य-तत्व के सुरक्षित रखैत, कोना सहजताक प्रतिशत बढ़ाओल जाय, तकर चिन्ता करब आवश्यक अछि। ई सभ चिन्ता आङुर पर गनल कविक कविता मे आयल अछि। गाम आ शहरक दर्दक संतुलित चित्रण नव-संस्कृति-बाधक संग हो, से आवश्यक अछि। जीवन कें 'लीड' करयबला विधा साहित्ये थिक। समुचित बैज्ञानिक दृष्टिकोणक काव्यमे समावेश हैब एखन शेष अछि, जे कि अपरिहार्य अछि। समाजशास्त्रीय आ मनोवैज्ञानिक तत्वक आधुनिक काव्यमे प्रदर्शन आवश्यक अछि, जे जमि क' हेबाक चाही। कविताक नेपथ्यमे अन्तर्निहित यथार्थ संसार पर गप्प हेबाक बेगरता छै।

अनुपस्थित रहयबला अगिला कारक थिक, मुक्त-छंदक स्वरूपमे क्रमिक परिवर्त्तन क' गद्यात्मक शिल्पक विकास जे कि पाठकीयताक आकर्षण आ प्रगति लेल हम आवश्यक मानैत छी। काव्यक वर्तमान शिल्प आब 'पारंपरिक' भेल जा रहल अछि। हमरा लोकनिक पूर्व-पीढ़ीक एहि शिल्पक लेल धन्यबाद दैत आब अइ शिल्प के 'बाइ-बाइ' करबाक समय आबि तुलायल अछि, मुदा काव्यक आत्मा सुरक्षित रखबाक शर्त्त पर। कविताक सुदीर्घ जीवन आ सु-स्वास्थ्य हेतु ई 'रिमोडलिंग' करबाक बात समय आ जीवनक जटिलता आ पाठकीयताक ह्रासमान परिस्थिति देखैत, हम क' रहल छी।

कविताक निष्पक्ष आ इमानदार समीक्षा/आलोचना त' एखनो पूर्णरूपेण अनुपस्थिते अछि, जकरा अभावमे नियंत्रित आगिक बिना सोना चमकि नहि पाबि रहल अछि। रमणजी ब्रान्ड 'एकेडमिक निबन्ध', राजमोहनजी-ब्रान्ड अनावश्यक बिशेषणी चकाचौंधबला पक्षपाती सम्पादकीय, स' से तत्काल संभव नै बुझाइए। राजमोहनजी एकबेर कहलनि जे साहित्यक बदौलत कोनो क्रान्ति वा सामाजिक आन्दोलन नै कैल जा सकैछ। ओ नवकविता नै बुझै छथि, तेँ नवकविता पर समीक्षा नै लिखै छथि। मुदा 'आरंभ'मे छापै छथि। एकठाम से गछै छथि आ दोसर ठाम विवेकानन्द ठाकुरक प्रसंगमे हुनकर संपादकीय टिप्पणी मोन पाड़ल जाय। नवकविता नै बुझैत ओ 'आरंभ'मे छापै छथि,

प्रशंसाक पुल संपादकीयमे बान्है छथि। केहन विरोधाभास अछि? तेँ उचित समीक्षा ने भीमनाथजीक सुच्चा पारंपरिक दृष्टिकोण स' संभव अछि, ने त' जीवकान्तजीक सूत्र आ विरोधाभासी शैली स' आ ने नवागंतुक पीढ़ीक हमरा लोकनिक अग्रज पीढ़ीक संग कैल जाइत 'अनलकांती गुटबन्दी आ तिकड़म-कूटनीति' स' आ ने संजय कुन्दनक गौरीनाथ-प्रेरित अर्थात कूटनीति-प्रेरित समीक्षा स' संभव अछि। तखन माटि त' बांझ नहिएँ भेल अछि।

हम जीवकान्तजीक सूत्र-समीक्षा-शैली वा अग्निपुष्पजीक नाम गनेबाक शैलीक आग्रही नहि छी। अन्तिम दशकमे सक्रिय अपन पीढ़ीक कविगण आ अग्रज पीढ़ीक कविगणक काव्य-प्रवृत्ति आ क्रियाकलापक आधार पर ई सभ बात कहल। आ ताहूमे बेशी बात त' हम अपनहि काव्य-दृष्टि, जीवन-दृष्टि, समकालीन समय, समाज, जीवन आ काव्यक समक्ष उपस्थित चुनौती कें ध्यान रखैत कहल अछि। आजुक प्रतिनिधि कवि के छथि, तकर खुलासा काल्हिए जा क' समय करत।

किछु नवागन्तुक कवि अपन हिन्दी कविता स' आ किछु गोटे अपन हिन्दी पाठकीयता स' प्रभावित करै छथि। किछु गोटे अपन मैथिली कविता स' सेहो संतुष्ट करै छथि। मुदा नवागन्तुकमे कएटा कविगण सबेरे-सकाल अहं केर शिकार भ' गेलाह अछि। कएटा अनुज के मैथिली साहित्य, मिथिलाक परंपरा, संस्कृति आ इतिहासक अल्पज्ञान छनि, ग्रामीण जीवन के चिन्हवाक धैर्यक अभाव छनि। मुदा अनेरोक आक्रोशक प्राचुर्य, गुटबन्दीक आकर्षण आ स्थापनाक हड़बड़ी छनि। क्षणिक प्रतिक्रिया, आवेश, हिन्दी-साहित्यक अध्ययन-अतिरेक आ बहुत पढ़ल हेबाक हिन्दीदाँ दंभ किछु नवोदित कविक सृजन-क्षमता के घून जकाँ तरे-तर खा रहल छनि। विश्वास करी (तत्काल) जे ओ लोकनि साकांक्ष हेताह। हिन्दी स' पैंच लेल मानदण्ड पर मैथिली साहित्यके मौखिकरूपेण तौलबा पर अधिकतर नवागंतुक लेखकगण विर्त्त छथि, जखनकि आलोचना-शास्त्रक नव प्रतिमान के मैथिलीमे स्थापित करबाक लेल कलम उठेबा स' ओ परहेजो करै छथि। आ क्यो लिखितो छथि त' कूटनीति-ग्रस्त भ' क'। मैथिली काव्यालोचनाक अपन नव निकष केर विकास अत्यावश्यक अछि। एहि सभ बात पर ठंढ़ा आ शालीन भ' क' विचार केनिहार नवोदित कवि नीक काजक परंपरा के आगू ल' जा सकताह, जँ ओ लोकनि अपना पीढीक अन्य नवोदितक संग आ हमरा लोकनिक वा हमरा लोकनिक पूर्व पीढ़ीक महान् मठाधीश

लोकनिक संग निम्नस्तरीय गुटबन्दी स' बाँचि सकताह। हुनका लोकनिक सृजन-सामर्थ्यमे हमरा कोनो सन्देह नहि। जेनाकि हम सभ गोटे परिचित छी, 20म सदीक अंतिम दशक आ बादक उभरल नव प्रतिभा सभ छथि— विद्यानन्द झा, धीरज जी, कृष्ण मोहन झा, अजित आजाद, विनय भूषण, निर्भय, रमण कुमार सिंह, मैथिल प्रशान्त, गोपाल झा 'अभिषेक', दिलीप कुमार झा, मनोज शाण्डिल्य, प्रणव नार्मदेय, अंशुमान सत्यकेतु, विनीत उत्पल, निशाकर आदि... आदि। तहिना नवमदशकीय पीढ़ीक सुस्मिता पाठक, ज्योत्स्ना चन्द्रम्, कामिनीक उपरान्त हेबनिमे रोमिशा डॉ. विभा कुमारी, शारदा झा, निक्की प्रियदर्शिनी, स्वाती शाकम्भरी, गुफरान जिलानी, रघुनाथ मुखिया, गुंजनश्री, विकास वत्सनाभ, बाल मुकुन्द पाठक, सुमित गुंजन आदि पैघ पतियानी हस्तक्षेप केलक अछि।

दू

कविता संपूर्ण रूपें समाज आ जीवन-सापेक्ष, आजुक कविता कें जनोन्मुखी हैब बाध्यता छैक। आ स्वान्तःसुखाय, तुकबन्दी, मनोरंजन, गेयध र्मिता आदि अवधारणा पर शब्दक अपव्यय बुड़िबकपना थिक। कविता साध ान आ साध्य (लक्ष्य) दुनू थिक। जीवन केहनो परिस्थितिमे, सभ दिन कवितामय रहत। जहिया वर्गविहीन समाजक सपना रूपायित हैत, तहियो काव्यक अस्तित्व सुरक्षित रहत—हर्ष, शोक, भावना, संवेदना, तत्कालीन जरूरतिक अनुरूप जीवनक संघर्षशीलता आ काव्यमय जीवन-शैलीमे।

जँ विचारधारा परिपक्व, विकसित आ प्रगतिशील हो, विरोधाभास वा अन्तर्विरोध स' मुक्त हो, त' काव्यक्षेत्रक अन्तर्लोक आ बाह्यरूपक गुम्फनमे निर्भय प्रयोग कयल जा सकैछ। कयले जयबाक चाही। शिल्पक स्तर पर 'तिल-तिल नूतन होय'वाली कविता सामाजिक विकृतिक जटिल संरचना पर बेशी धरगर प्रहार करैछ आ ध्यानाकर्षणोमे सफल होइछ।

समय आ समाजमे बहुत परिवर्तन भेल आ भ' रहल अछि। बदलैत समय, जीवन-दर्शन जीवन-शैली, एलेक्ट्रॉनिक माध्यमक विस्फोट, जीवनक बुनियादी समस्याक जटिलता, विदेशी बाजारू उपभोक्ता संस्कृतिक वीभत्स आक्रमण आदिक कारणें जनजीवनमे संघर्ष लेल ई आवश्यक भ' गेल अछि जे कविता

एकबेर फेर अपन, बाह्य स्वरूपमे नवीनता आनय आ आन्तरिक संरचना वा अन्नतर्वस्तुमे आर अर्थपूर्ण, संघर्षशील, धरगर, मारुख आ जीवन-रसक परिपाक स' ओत-प्रोत हो। तेँ कवितामे पारंपरिक स्वरूपक त' छूति धरि हैब अनुपयोगी, अनावश्यक, त्याज्य आ बेजाय अछिये, अपितु मुक्तछन्द आ अतुकान्तहु स' आगू बढि क' ओकरा गद्यात्मक या गद्यमय हेवाक चाही। ई परिवर्तन काव्य के लोकोन्मुखी आ संघर्षशील बनेवाक औजार हैत, रूपवादी आ कलावादी प्रयोग नहि। आइ गद्यक पाठक कविता स' कतओक बेशी अछि आ कविता के पाठकीयताक संकट आन कोनो विधा स' कतओक बेशी छैक। काव्य जतेक गद्यात्मक हैत, एहू संकट स' लड़बामे ततेक सक्षम आ सफल हैत। मुदा कविताक शिल्पमे गद्यात्मकता आनबाक ई अर्थ नहि अछि जे काव्यात्मकता वा काव्य-तत्वक ह्रास हो। अन्तर्वस्तु काव्यमय, वैज्ञानिक, जनवादी आ प्रगतिवादी भेले पर ओकर स्वरूप के अधिकतम गद्यात्मक बनेवाक ओकालति कयल जा सकैछ। तखन फेर कविताक विम्ब-योजना, रचनाशास्त्र, व्याकरण आ शब्दशास्त्रहुमे आइ युगानुकूल परिवर्त्तन आनब आवश्यक बुझा रहल अछि। तखनहि कविता अपन नव प्रतिमान स्थापित क' सकत—जे कविता कें नव समाजक संरचना हेतु करबाके टा छैक। ई सभ कलाकारी समाजक हितमे हैत, कलावादी रसोद्रेक लेल नहि। काव्य कें परिपुष्ट बनेबाक लेल सभ विषयक समावेश काव्य-कथ्यमे हमरा करबाक अछि। हम कोनो शास्त्र कें अपैत नहि मानैत छी। विज्ञानक सभ शाखाक सम्बन्ध जीवन सँ अन्योन्याश्रित अछि आ जीवनमे जाहि कोनो विषयक प्रासंगिकता अछि, तकर प्रासंगिकता साहित्योमे निर्विवाद अछि। कोनो विषयक दोहन-शोषण साहित्य लेल करबाक क्षमता त' कोनो कवि लेल व्यक्तिगत बात थिक। तेँ काव्य-क्षेत्र कें व्यापक बनायब, जीवनक सभ आसंग स' जोड़ब आ तकर संतुलन राखब आ तखन फेर जीवन के काव्यमय आ काव्य के जीवनमय बनायब हमर आकांक्षा अछि। आइ जाहि साहित्यक वा विधाक वैज्ञानिक आ तार्किक आधार पुष्ट नहि रहत, तकरा एहि घोड़दौड़मे ठठब कठिन अछि। हँ, ई वैज्ञानिकता संरचनात्मक हैत, ध्वंसात्मक नहि।

कवितामे समकालीनता आ स्थानीयता स' ल' क' विश्वस्तर ध ारिक दर्द-संवेदना, अनुराग-विराग, हर्ष-शोक, जय-पराजय, इतिहास आ वर्त्तमान अनबाक छैक। जे क्यो समसामयिक जीवनक यथार्थ दंश आ जीवनक

बँचल-खुचल सौन्दर्य-बोधक चिन्ता स' बेशी मत्वपूर्ण जीर्ण, पारंपरिक आ तथाकथित शाश्वत कविता कें मानैत छथि—तिनका स' पक्कड़ करबाक लोभ-संवरण असंभव अछि। जिनका 'नव्य-प्रवाहक घोषणापत्र' स' बेशी एखनहुँ छन्दमय आ गेयधर्मितायुक्त तथाकथिक तुकांत कविता महत्वपूर्ण बुझाइ छनि, तिनका पर हँसीयो खर्च करब व्यर्थे थिक। ओ माटि स्वीकार क' काव्य प्रतियोगिताक आयोजन करथि।

हम ईहो मानैत छी जे-जे कवि अनपच आ उकड़ू परभाषिक शब्दक प्रभाव स' जतेक बाँचल रहताह, जनभाषा आ माटिपानि स' जतेक नजदीक आ जोड़ल रहताह—तिनकर कविता अपन अभीष्टमे ततबे प्रभावशाली आ सफल हैत। कविता आ साहित्ये मानव-मुक्तिक रस्ता खोलत, बन्धनक जकड़-जाला आ मोहक मकड़-जाला के काटत। जे कविता जीवन-सापेक्ष समकालीन, सामयिक आ संघर्षशील रहत, सैह कालजयी आ शाश्वत प्रमाणित हैत।

एखनधरि शब्दक मितव्ययिताक ओकालति करैत अनघोल मचाओल गेल अछि अथवा एना कही जे प्रकारान्तर स' कए कवि अपन शब्द-दारिद्र्य के झँपैत वा प्रदर्शन करैत रहलाह अछि। काव्यक गतान (कम्पैक्टनेस) पर अनावश्यक अतिरिक्त ऊर्जा खर्चैत ओ अपन काव्य के अति-यांत्रिकता आ एकरसताक शिकारे टा बनबैत छथि। एहेन कविक कविताक प्रति शब्द-खेल मात्रक धारणा बनैए। ई लोकनि वैविध्य स' दूर आ अपन एक बेर स्थापित छवि के तोड़बामे असमर्थ होइ छथि। 'शब्द-अपव्ययक' अनघोलमे 'शब्द-दारिद्र्य' के आवरण देवाक निष्फल प्रयास करैत, ई लोकनि अन्ततः अपना-आप के 'आउटडेटेड' (कालातीत) बना लैत छथि।

कवितामे अंकुरैत आ प्रतिष्ठित होइत वैचारिकता। भावक धनिकपना, संवेदनाक प्रति संलग्नता। मानवीय मूल्यक प्रति कटिबद्धता। रूपायित होइत सपना। कल्पनाक उड़ान-सामर्थ्य। यथार्थक दिग्दर्शन आ 'जमीनी-पकड़'। जीवन आ रचनाक प्रति आस्था। सकारात्मक जीवन-दर्शन। ऋषितुल्य आकुलता। समाज लेल व्याकुलता। संस्कृतिक स्वीकार। विकृतिक अस्वीकार। आत्मालोचन आ आत्मविलोकन। समाजक आलोचना आ स्वीकार, भ्रमहीन भ' क'। दुष्टभावक प्रतिरोध लेल विद्रोह-ताप के बँचा क' राखब। हृदय आ मस्तिष्कक संतुलन। कथ्य आ शिल्प दुनू स्तर पर नव्यताक आग्रही हैब आ काव्यक सभ पक्षक बीच संतुलनक सौन्दर्य-बोध। एहि सभ स्थापित तथ्य के स्वीकार करब आजुक कवि

लेल अत्यावश्यक अछि। लोक जीवनमे पैसब आवश्यक। काव्योद्देश्यक मोताबिक शब्द-चयन आवश्यक। अति-शुद्धतावादी प्रवृत्ति स' बाँचब आ शब्दक मैथिलीकरण करब—दुनूक बीचक संतुलन आवश्यक। लोक-जीवनक कहबी, फकड़ा पदबन्ध, मोहवरा आ सन्दर्भक खोज, हेरायल शब्दक खोज, लोकोक्तिक उपयोग—कविता के लोकमानसमे पैसेबाक लेल आ संप्रेषणक सहजता आ लोक-स्वीकार लेल आवश्यक अछि।

कथ्य-वैविध्य आ तकर क्षितिज विस्तार, रूप-वैविध्य, ध्वन्यात्मकता, सांगीतिकता (अन्तर्वस्तुक स्तर पर), अर्थक लयात्मकता, नव बिम्ब-विधानक रचना, ऐतिहासिक दृष्टिबोध आ ऐतिहासिक-चेतनाक समावेश, समाजिक चेतनाक विविध आयामक उद्घाटन— (काव्य के परिपुष्ट आ सक्षम बनेबाक लेल) समयक मांग थिक।

अन्ततः कविक जीवनमे विद्यमान पीड़ाक प्रतिशत, संघर्ष-सामर्थ्य आ आलोचनाक आँखि, ओइ कविक कविताक स्वरूप, सामर्थ्य आ उपलब्धिक निर्धारण कइये दैत अछि। तें वैचारिक स्तर पर अंततः द्वैध-मुक्ति सेहो ततबे आवश्यक। जहिना काव्यक प्रत्येक ग्राम्य-तत्व कें 'नॉस्टेल्जिया' कहि क' खारिज करबाक प्रवृति घातक अछि, तहिना कस्बा-शहरक (मिथिलान्तर्गत) उपेक्षा करैत आजुक परिवर्त्तनशील गाम के दू दशक प्राचीन आँखि स' देखब आ मैथिली कविता के मधुपजी (घसल अठन्नी) वा तंत्रनाथ झा (मुसरी झा) बला युगमे ल' जैब घातक अछि। जहिना समकालीन काव्य पर टिप्पणी करबाक दंभ पोसब अनर्गल थिक, तहिना आलोचकीय स्वीकृतिक प्रमाण-पत्र (फरमान-शैलीमे) जारी करब अधलाह थिक। जहिना ग्रामीण-कविताक नाम पर 'ग्राम्यदोषक' ओट ल' क' काव्य कें 'कवित्तविहीन एकरस कथाकाव्यक असंख्य गछाड़' मे जकड़ि देब अनुचित थिक, तहिना गामक संक्रमणकालीन परिवर्त्तन सबहक संज्ञान लेबा स' सायास भागवाक प्रवृत्ति कोनो कवि आ आलोचक लेल अनुचित थिक। इतिहासक धारा कें उनटा बहेबाक आ साहित्यक सहज आ प्रवहमान विकास के अवरुद्ध करबाक प्रवृत्ति ककरो लेल कल्याणकारी नहि थिक। मात्र मनोरम शब्दचित्र घिचवाक कलाबाजी कोनो कविक सीमा कें देखार क' क' राखि दैत अछि। अनुभवक विविधता वा विस्तृत कैनवासक अभाव ओइ कविक जीवन कें क्षणभंगुर बना क' राखि दैत अछि। एहेन कवि आवृत्ति-दोषक शिकार सबेर-सकाल भ' जाइत छथि। संगहि हुनकर जीवन आ

साहित्य दुनूमे स्वाभाविक संघर्षविहीनता, दृष्टिहीनता, काव्य-फलकक सीमितता विचारधाराविहीनता, कथात्मकतामे हेराइत काव्य-भाव आदिक कारणे कोनो आलोचकीय सोङर हुनका ठाढ़ नहिं राखि पबैछ।

सृजन मानवक नैसर्गिक स्वभाव आ विशेषता थिक। जीवन आ मूल्यक विध्वंसक प्रतिरोध आवश्यक, मुदा उकड़ू आ अ-जनवादी तंत्रक विध्वंसक समर्थनो आवश्यक। समाज-सापेक्ष हैब कतहु स' जाति आ विकृति-सापेक्ष हैब नहि थिक। जीवनक सभ प्रकारक सकारात्मक सृष्टिक प्रति आस्था रखैत कहल जा सकैछ, जे साहित्य आ काव्य-सृष्टि कनेक बेशीए महत्वपूर्ण अछि। हम अइ कल्पनो स' सिहरि उठै छी जे, जँ हम काव्य-क्षेत्रहुमे सृष्टिरत नहि रहितहुँ त' हमर जीवन कतेक नारकीय आ व्यर्थ होइत? हम काव्य-सम्बन्धी उपर्युक्त कक्तव्यक अनुकूलहिं, मात्र मातृभाषा मैथिलीमे लिखबाक वचन दैत छी आ अपन सृजन के आत्मस्वीकृति प्रदान करैत छी, जनवादी-समाज-स्वीकृतिक आकांक्षाक संग। तथाकथित साहित्यिक आचार्य लोकनिक स्वीकृतिक कोनोटा आकांक्षा नहि। व्यक्तिगत उपलब्धिक अनुचित-कामनामे अपन माटि-पानिक प्रति कोनो टा बइमानी नही। ग्रामीण पीड़ाक हो वा शहरी पीड़ाक सौन्दर्य-बोध, एकांगी नहि सम्पूर्ण आ सम्पूर्णरूपेण जनोन्मुखी कविता कें स्वीकार करैत, सूत्रवादी-लेखन के अस्वीकार करैत—अपन आगरिमो काव्य-यात्रमे प्रवृत्त होअय चाहव। तकर नकारात्मक आ निन्दारूपी आलोचनक कोनो टा चिन्ता आ परवाहि नहि करब।

रमेश

0 : रमेशक कविता : डॉ. सुभाषचन्द्र यादव
0 : एहि संग्रहक प्रसंग : डॉ. शिवेन्द्र दास

समवेत स्वरक आगू
मैथिली गद्य कविता-संग्रह
रमेश
प्रथम संस्करण : 1996 ई.
(किसुन संकल्प लोक, सुपौल)
आवरण : मोनू
मूल्य : 15/=00 टाका
स्वत्वाधिकार : माला झा

दोसर संस्करण : 2019 ई.
प्रकाशक
नवारम्भ
मधुबनी : वार्ड न.-2,
निकट राम-जानकी मन्दिर, पिन-847211
Email : navarambhprakashan@gmail.com
पटना : 63, एम.आई.जी.
हनुमान नगर, पिन-800020
मो.- 9304349384

मुद्रक
आर.के. ऑफसेट प्रोसेस
नवीन शाहदरा, दिल्ली-32

जीवन भरि (मे)
खलनायक-खलनायिकाक
भूमिका मे सक्रिय
सम्बन्धीगण
कें
समर्पित

—रमेश

भूमिका : समवेत स्वरक आगू

रमेशक कविता

रमेश मैथिलीक सर्वाधिक प्रयोगशील रचनाकार छथि। कथा आ कविता दुनू विधा मे ओ निरन्तर नव-नव प्रयोग करैत रहैत छथि। नितान्त नव प्रयोग मे दुर्बोधता आ सम्प्रेषणहीनताक जे जोखिम रहैत छैक, रमेश तकर परवाहि नहि करैत छथि आ भविष्यक प्रति पूर्ण आस्थाक संग प्रयोग मे रत रहैत छथि।

प्रस्तुत संग्रहक समस्त कविताक ढांचा गद्यात्मक अछि। मैथिली कविताक स्वरूप गद्यात्मक भेल चल जा रहल अछि आ ई प्रवृत्ति रमेश मे शिखर पर अछि। पारम्परिक काव्य-शिल्प केँ रमेश ततेक तोड़ि-फोड़ि देने छथि, जे ओकर ध्वंसकारी रूप सँ पाठक स्तब्ध रहि जाइत अछि।

मैथिलीक नव कविता प्राचीन काव्यानुशासनक बन्धन केँ तोड़लक, व्यक्ति आ समाजक पारम्परिक द्वन्द्व केँ स्वर देलक। नवकविता मे उपलब्ध वैयक्तिक रागात्मकता रमेश मे आबि केँ लुप्त भ' गेल अछि, मुदा सामाजिक विडम्बना अत्यन्त मुखर अछि।

रूढ़ काव्यात्मक प्रतीक सँ अलग हटि क' रमेश नवीन सामाजिक आ ऐतिहासिक प्रतीकक सृजन करैत छथि। रमेशक अनेक कविता मे प्रभूत ऐतिहासिक सन्दर्भत्व अछि। हुनक कैकटा कविता सामाजिक परिवर्त्तनक ऐतिहासिक ग्राफ उपस्थित करैत अछि। वर्त्तमान सँ इतिहास आ इतिहास सँ वर्तमानक द्विविध यात्रा करैत, रमेशक कविता एकटा एहेन स्पेक्ट्रम बनि जाइत अछि, जाहि सँ जीवनक विविध आ बहुरंगी चित्र केँ बनैत-बिगड़ैत देखल जा सकैत अछि। प्राक् औद्योगिक सरल आ आदर्श मानव जीवनक वर्त्तमान उपभोक्तावादी समाजक विकृति आ कुरूपता मे रूपान्तरण रमेश केँ चिन्तित आ व्यथित करैत अछि। एहि रूपान्तरणक भयावहता केँ रमेश एकाधिक कविता मे व्यक्त कयने छथि, जेना 'एहन दिन कहियो नहि आबय', 'जहिया' आदि। एहि सँ घबरा क' रमेश अतीत मे चल जाय चाहैत छथि, (आदिम राग) आ एकटा एहन मनोलोकक रचना करय चाहैत छथि, जतय भविष्य हुनका आश्वस्त करैत बुझाइत हो (अनन्त अछि मनुक्खक परम्परा, न्यूट्रॉन बम निर्जीव नहि बना सकत हमर लेखिनी केँ आदि)।

रमेश मे आक्रोश एवं आक्रामकता अछि; विरोध आ व्यंग्य अछि;

उपहास आ विडम्बना अछि; विवेकशीलता आ मनुष्यता कें बचयबाक प्रयत्न अछि आ मानवक लेल उज्जवल भविष्यक एकटा सपना अछि।

नितान्त ठेंठ आ ग्रामीण शब्दावली संगे रमेशक कविता मे मिथिलाक गाम-घर लपटायल चल अबैत अछि। काव्यात्मक बिम्ब गढ़बाक प्रक्रिया मे, रमेश मैथिली कें अनेक नव मुहावरा प्रदान करैत छथि आ ओकर व्यंजनात्मक सामर्थ्य मे वृद्धि करैत छथि।

डॉ. सुभाष चन्द्र यादव

13 नवम्बर 1996 ई.

एहि संग्रहक प्रसंग

रमेशक कविता मनुष्यताक लेल लालायित आर्त्तनाद थिक। ई कविता सभ अहाँ केँ पढ़य लेल बाध्य करत। ई कविता सभ कहैत अछि जे हमरा पढ़ू। शिल्प, प्रयोग आ काव्य-तत्वक स्तर पर, रमेश मैथिली कविताक परम्परा मे एकदम फराक पहचान बनबैत छथि। गद्य कविताक परम्परा मैथिली मे क्षीण रहल अछि। कविता गद्यात्मक होइत रहल अछि, मुदा गद्य कविता अत्यल्प अछि। ई संग्रह गद्य कविताक कारीगरीक सुन्दर उदाहरण थिक। बिम्ब विधानक द्वन्द्वात्मक जटिलताक आधिक्य, यदा-कदा सम्प्रेषणीयता केँ बाधित करैत अछि। मुदा रमेशक कवि एहि सभ खतरा सँ जूझैत, अपन प्रयोग केँ गतिशील रखैत अछि। इतिहास सँ सीखैत, वर्त्तमान मे जगैत, भोगैत आ भविष्यक सुन्दरता केँ प्रार्थित आ आश्वस्त रमेशक कवि अपन सभ द्वन्द्व-द्वैधक बावजूद मनुखक अजेय चेतनाक ओकालति करैत अछि। कामू कहलनि अछि जे रचनाकार राजा योद्धाक विजयक यशोगान नहि करैत अछि, अपितु युद्धाक्रान्तक पीड़ाक भागीदार होइत अछि, ओकरा स्वर दैत अछि। एहि दृष्टियेँ रमेशक रचनाकार, अपन शिल्पगत जटिलताक अछैतो, आन्दोलित करैत अछि।

इतिहास सँ वर्त्तमान आ वर्त्तमान सँ भविष्यक द्विविध यात्रा आ एहि यात्राक मध्यक परिवेशगत सांस्कृतिक, राजनीतिक आ आर्थिक समीकरण सँ, ओकर जटिलता सँ, ओकर द्वन्द्व-द्वैध सँ, जूझैत रमेशक कविता अपन समयक विडम्बनाक विरुद्ध सक्रिय, सार्थक, प्रतिहिंसक आ करुण हस्तक्षेप थिक। पौराणिक, ऐतिहासिक, भौगोलिक ज्ञान-मंथन सँ प्रस्फुटित विचार-विवेक, रमेशक कविता मे अनुभवक इन्टरएक्शनक संग, मैथिलीक अन्य कविता सँ कतहु अधिक पुष्ट अछि।

रमेश एकटा रोमांटिक परम्पराभंजक रचनाकारक चित्र नहि बनवैत छथि। रोमांस जँ अछियो, तँ शिल्प, प्रयोग आ भाषाक संग अछि, कथ्यक संग नहि। धरोहरि मे भेटल सुन्दरता, वर्त्तमान मे अहि पर आसन्न संकट—एहि सभक प्रति रमेश सतत सजग छथि।

हिनक कविता काव्यानुभव मे एकटा नव अध्याय जोड़ैत अछि।

प्रयोगक स्तर पर रमेशक कवि धृष्ट (बेबाकीक आवेग मे) मुदा इमानदार अछि। विरोध आ आक्रोशक स्वर असंतुलित अछि। मुदा ई हुनक भोगल पीड़ा, गहींर-सीझल अनुभव आ छटपटाहटि सँ उपजल अछि। रमेशक कवि कोनो ऋषि जकाँ तपस्वी अछि, आ क्रोधाकुल सेहो।

स्थानीयता सँ विश्व-व्यापकताक यात्राक परिणाम थिक, रमेशक ई कविता। ठेंठ मैथिल परिदृश्य सँ सम्पूर्ण ग्लोबक भ्रमण करैत ई कविता सभ बिम्ब-विधान, उपमा-उपमेयक काव्यात्मक बुनावटक सधल प्रयोग थिक। ठेंठ शब्दावलीक अतिरेकक खतरा, रमेशक कविता केँ थोड़ेक जटिल अवश्य बनबैत अछि, मुदा कमजोर नहि। भूलल-बिसरल शब्द केँ, लोकभाषा आ लोकसंकेत केँ, रमेश पुनर्संस्कारित कयलनि अछि। मैथिली मे प्रचुर स्थानीय मोहावरा अछि। व्यापक भौगोलिक क्षेत्रक कारण मैथिली भाषा-भाषी अलग-अलग क्षेत्रक स्थानीय शब्दावली सँ थोड़ेक अपरिचित जकाँ रहैत अछि। मुदा साहित्यक समृद्धि लेल ई आवश्यक थिक, जे भाषाक छूटल, बिसरल मोहावरा केँ पुनर्जीवित कयल जाय, मैथिलीक अनेकानेक लोक-संवाद केँ 'अमल्गमेट' कयल जाय। एहि दृष्टि सँ, ई खतरा सेहो एकटा 'पॉजिटिव आस्पेक्ट' थिक—आलोचनीय बहसक विषय सेहो।

रमेशक कविता पहिने चमत्कृत करैत अछि, तखन प्रभावित। चमत्कारी प्रयोग पढ़बाक लेल आकृष्ट करैत अछि आ फेर धीरे-धीरे काव्य-कथ्य अपन अर्थ बुझबैत अछि। रमेश एकटा 'सूक्ष्म-आब्जर्वर' छथि। मुदा ओ ओहि 'आब्जर्वेशन्स' केँ तत्काल 'रिप्रोड्यूस' नहि करैत छथि।

कविता अनुभूति आ सम्वेदनाक वैज्ञानिक बुनावट थिक। इतिहास, भूगोल, राजनीति, समाज मे नारीक स्थिति, पूँजीवादी साम्रज्यवादक पड़ताल—ई सभ अत्यन्त गंभीरता सँ उभरैत अछि हिनक कविता मे।

अपन समाज, अपन संस्कृति बचा ल' सकबाक बेचैनी, रमेशक कविता केँ रचनात्मक गति दैत अछि। रमेशक ई संकलन समकालीन मैथिली साहित्यक एकटा विचारणीय प्रयास थिक।

डॉ. शिवेन्द्र दास

16 नवम्बर, 1996 ई.

सङोर (काव्य-संकलन) : रमेश
प्रकाशन वर्ष—1990 ई.
काव्य-सृजन (1980 ई. - 1990 ई.)
प्रथम संस्करण— 1990 ई. (कार्तिक धवल त्रयोदशी)
द्वितीय संस्करण : 2019 ई.
नवारंभ प्रकाशन : मधुबनी
(अजित आजाद)

© माला झा

ई कृति समर्पित

ओहि माय केँ
(स्व. जयकला देवी)
जे परिवार एवं समाजक
प्रत्येक स्तर पर
मानवताक प्रति
भ' रहल अन्यायक
विरुद्ध
विद्रोह करब सिखौलनि

ओहि बाबूजी केँ
(स्व. राज नारायण झा)
जे साकिन भ' गेलाह

हमरा दू आखरक
बोध देवाक लेल,
मुदा हमरा 'पढ़ेवाक'
जिद्द नहि छोड़लनि

— **रमेश**

चेतना केँ छुबैत गजल

आइ गजलक लोकप्रियता तँ कमल नहि, अपतु बढ़िये गेल अछि। कारण भेलैक जे ओ युगक अनुसार स्वर देबा मे आगाँ आयल। जहिना ओ कहियो राजदरबार मे, आकि कोनो कोठा मे रसियाक मोन के उकसेवा मे, रभसेबा मे जोरगर भेल रहल, तहिना बादो मे तप्त बाटक बटोहीक साहस केँ बुलन्द करबा मे, प्रेरित करबा मे सक्षम भेल।

युग केँ मुखरित करैत जे विधा जतेक आगाँ आयल, ओतेक लोकप्रियता पौलक अछि। एहि मे जे विधा जतेक लसकल, ओ ओतेक पछड़ल। जेना महाकाव्य शास्त्रीय बन्धनक कारण युग केँ मुखरित करबा मे पछुआयल वा पछुआ रहल अछि, जाहि कारणें ओकर लोकप्रियता घटलैक अछि। ओकर आरो कारण छैक, जाहि मे उक्त कारण सभ सँ पैघ अछि। अन्य दोसर विधा युगक अनुसार अपन शिल्प कथ्य मे परिवर्तन अनलक अछि।

मैथिली मे कहबाक लेल तँ महाकवि नाटककार जीवन झा सँ गजल प्रारम्भ भेल। महाकवि जीवन झा राजदरबार मे लगैत महफिल मे गजलक लोकप्रियता देखि अपन नाटक मे गजल लिखबाक मानोरथ कैने हेता। 'मनोरथ' एहि कारणे जे ओ गजल नहि भ' सकल अछि, परन्तु प्रारम्भ ओहि सँ मानल जा सकैत अछि। ओकर बादो गजल मैथिली साहित्य मे जमल नहि, तकर कारण कोनो प्रतिभाशाली रचनाकार द्वारा रचले नहि गेल। किएक ने रचल गेल एकर कारण मे जायब विशद मे जायब होयत। एहिठाम जे कि अभीष्ट नहि अछि। परन्तु एतेक बात कहब आवश्यक बुझैत छी जे मैथिली मे रचना जाहि रचनाकार द्वारा रचल गेल, ओ मुख्यतया संस्कृत ओ अंग्रेजीक विद्वान छलाह। ओ लोकनि मैथिलीओ मे संस्कृत वा अंग्रेजी विद्या केँ भूमि देलनि, जाहि क्रम मे दोहा, चौपाइ वा अन्य छन्द मे कविता आयल, सौनेट लिखायल। ओ लोकनि फारसी आकि भारतीय भाषा उर्दू साहित्यक लोकप्रिय विधा केँ अपन भावभूमि नहि देलनि। ओहि विधाक प्रयोग अपन भाषामे नहि कयलनि।

उर्दू भारतीय भाषा थिक, परन्तु एहि भाषाक संगे एकटा विडम्बना रहलैक जे ओ सम्पूर्ण रूपसँ भारतक सभ लोकक भाषा नहि भ' सकल। मुसलमान लोकनिक भाषा भ' क' रहि गेल, जखनकि उर्दू साहित्य केँ

समृद्धि करबामे कतेको हिन्दू साहित्यकार लोकनिक अमूल्य योगदान अछि। उर्दू साहित्य हुनका लोकनि केँ पाबि गौरवान्वित भेल अछि।

मिथिलाक सामाजिक जीवनक स्थिति दिस जखन ध्यान दैत छी तँ देखैत छी जे एत' हिन्दू-मुसलमानक सामाजिक जीवन बड़ मधुर रहलैक अछि। एखनो दुनूक पर्वक अवसर पर दुनूक मिलब आह्लादित करैत अछि। तजिया मे मुसलमानक संग ओ हिन्दूक सहभागिता, मैथिली मे झड़नी गीत, मुसलमान-ओ-हिन्दू द्वारा गायब मिथिलाक भूमि पर दुनूक अमन-चैनक जिनगीक उदाहरण प्रस्तुत करैत अछि। ई सभ अछैतो, दुःखक संग कह' पड़ैत अछि जे स्वतन्त्रताकपूर्वक सम्पूर्ण मैथिली साहित्य मे कठिन सँ मुसलमानक जिनगी केँ कहैत साहित्य भेटत। स्वतन्त्रताक बादक साहित्य मे आयल अछि जेना कथा मे ललित, राजकमल कि आनो कथाकार द्वारा कहल गेल। नाटक मे सेहो आयल अछि। परन्तु सभ छिट-फुट ढंग सँ आयल। जे बात हिन्दू-मुसलमानक बीच घनिष्टता इंगित करबैतो ई स्पष्ट करैत अछि जे कत्तहु-ने-कत्तहु दुनूक बीच दूरी अछि। यैह कारण भेल जे एखन तक मुसलमानक जिनगीक बात कहैत ओना साहित्य नहि आबि सकल, जेना आबक चाही। मुसलमान लेखक द्वारा सेहो जे साहित्य रचल गेल, ओहो मुसलमानक जिनगी केँ ओना नहि कहि सकला जेना कहैक चाही। आब किछु स्थिति आशाजनक भेल अछि। स्वतन्त्रताक पूर्व एहिठाम जे गजल कहल जाइत छल, ओ उर्दू मे जकर प्रचलन खूब नहि कहक चाही। कखनो काल जमीन्दार लोकनिक ओहिठाम एहि तरहक महफिल लगैत छल। गजल एहिठाम अधिकतर मुसलमान द्वारा उर्दू मे कहल जाइत छल जे महफिलक रौनक तँ बढ़बैत छल परन्तु ओ लोकमुख पर नहि उतरि सकल। जकर कारण छल उर्दू भाषा सँ दूरी। मैथिली रचनाकारक द्वारा उर्दू लोकप्रिय विधा केँ भाषाक भूमि देवा मे ध्यान नहि गेल।

स्वतन्त्रताक बादक रचनाकारक आँखि सम्पूर्ण भारतीय साहित्यक गतिविधि दिस घुमल। बंगला, उड़िया, हिन्दी वा कहीं सम्पूर्ण भारतीय साहित्यक ओ युग कथाक युग छल। तेँ ओहि कालक रचनाकार अपन भाषा केँ अखिल भारतीय स्तर पर ठाढ़ करबा मे कथा-रचना मे लागि गेलाह। कथा लिखल गेल। छठ्म दशक कथाक स्वर्णयुग थिक जे निश्चित रूप सँ साहित्य के आगू अनलक। मैथिली साहित्य केँ अखिल भारतीय स्तर पर ठाढ़ केलक। कविता तँ सभ दिन सँ प्रकृतिये प्रगतिगामी रहल अछि। प्रगतिक स्वर देबा मे अगुआ

रहल अछि, परिवर्तनक आन्दोलन मे संग रहल अछि। मैथिली मे सेहो कविता अपन अभिव्यक्ति सक्षमता सँ मैथिली साहित्य केँ आगू अनबा मे सफल भेल। परन्तु गजल एका-दुक्का सैह लिखाइत रहल। एहि बीच मे एकटा बात भेलै। ओ ई जे कविता जनसाधारणक पहिने सँ अधिक बात करितो ओ जनसाधाण सँ कट' लागल। ई भेल कविताक शिल्पगत परिवर्तनक कारण। एहना स्थिति मे रचनाकार जेहन दमगर बात कहबाक हेतु काव्यक विधा ताक' लगलाह। जाहि मे कविते सन असर होइक आ एहि खोजक क्रम मे गजल दिस रचनाकारक ध्यान गेल। ई बात मैथिली मे मात्र भेलैक से नहि, सम्पूर्ण भारतीय भाषा मे भेलैक। ओकर लोकप्रियताक मादे यैह कहब जे कोनो तरहक पत्रिका हो ओहिमे गजल केँ देब निश्चितप्राय भ' गेलैक। चाहे ओ पत्रिका गद्यक हो वा पद्यक। एमहर देखल गेल जे पाठक गजल केँ हपसि केँ लेलक। गजल केँ सम्पूर्ण समाजक स्वीकृति भेटलैक। जे हिन्दू-मुसलमानक सहजीवनक सेहो सुखद स्थितिक संकेत अछि। मैथिली मे गजल लिखाय लागल। मैथिली साहित्य मे गजल अपन फुट विधा के रूप मे परिचय देब' लागल। आगू एकर विकास मे आरो गति आयल।

एहिठाम एकटा बात कहब आवश्यक जे किछु आलोचक लोकनि एखनहु गजल केँ जमबा मे सन्देह करैत छथि। हुनक सन्देह मे हमरा बल नहि बुझाइत अछि। कारण कोनो विधा कोन भाषाक उपज थिक ई बात एहि पर नहि निर्भर करैत अछि। ओ निर्भर करैत अछि जे ओ रचनाकार उक्त विधा केँ कोना आत्मसात् क' ओहि मे रचना करैत छथि। ई बात कएटा भाषा मे भेलैक अछि जे ओ ओहि भाषाक उपज नहि थिकैक तथापि ओ रचनाकारक सक्षमता पर उतरि सहज भ' स्तरीय भेलैक अछि आ आगूक पीढ़ी केँ प्रेरित केलकैक अछि। ओकर बाद ओ विधा ओहि भाषाक रंग मे रंगल बढ़ैत रहलैक अछि।

मैथिली मे ओहेन गजल कहनिहार भेलाह अछि कि नहि, ई विशद विवेचनक विषय थिक। परन्तु एतेक अवश्य कहल जा सकैत अछि जे ओहि क्षमताक गजल मैथिलीयो मे देखल जा सकैत अछि। जत' लोकप्रियताक सवाल छैक ओत' पाठक लोकनिक बात जँ छोड़ि दो, मात्र रचनाकारक बात करी तँ देखल जायत जे सभ पीढ़ीक रचनाकार मे सँ गजल लिखबाक प्रयास कयल गेल अछि। एकरा दोसर भाषाक देखाँउस सेहो कहल जा सकैत अछि। परन्तु एतेक बात अवश्य कहल जायत जे जावत कोनो रचनाकार अपन रचनाक आनन्द

कोनो विधाक रचना मे जँ नहि पाओत तँ ओ किएक लिखत? खास क' आठम दशक सँ गजलक प्रति किछु गजलकारक साधना देखैत छी। ओ निश्चित रूप सँ मैथिली गजलक उज्जवल भविष्यक प्रति आश्वस्त करैत अछि। सभ सँ सुखद बात जे मैथिली मे गजल आब एकटा विकासशील विधाक रूप मे उपस्थितिक बोध करा रहल अछि। गजलक चर्चा भेल अछि, भ' रहल अछि। आरो जे चर्चा आवश्यक अछि ओ गजलक अधिक-सँ-अधिक पोथीक प्रकाशन नहि होयबाक कारणे नहि भेल अछि। परन्तु ओहू दिशा मे स्थिति नीक अछि। एहि बीच गजलक पोथी सभ आबि रहल अछि, जे सुखद बात थिक।

मैथिली गजल के खास क' क' नवम् दशकक यात्रा पर जखन ध्यान दैत छी, तँ रमेशजी गजलक एकटा तेज-तर्रार नामक रूप मे देखाइत छथि। एहि बीच ई विभिन्न पत्र-पत्रिका मे गजल ल' अबैत रहलाहे। हमरा हिनक गजल नीक लागि रहल अछि। रमेशजी केँ समाज मे परिवर्तन अनबाक इच्छा छनि। ओ समाज मे पसरल विसंगति केँ दूर करबाक हेतु अपन रचना सँ दृष्टि देबाक लेल सजग बुझाइत छथि। कोनो रचनाकार जखन समाजक दुख सँ दुख अछि आ ओ दुखी जखन रचनाकारक संवेदना पर उतरि अबैत अछि तखन ओ रचनाकारक दुख भ' जाइत अछि। कोनो वेदना केँ रचनाकार अपन वेदना बूझ' लगैत अछि। तकर बाद ओ जे रचना अछि, ओ रचना वेदना सँ सद्यः आत्मीयता जोड़ने बुझाइत अछि। रमेशजी आजुक स्थितिक ताप सँ स्वयं अपना केँ जरैत अनुभव करैत कोनो रस्ता तकबाक अनुसंधान मे तत्पर बुझाइत छथि—

एकटा दीप जरै अछि घरक कोन मे
कएटा दीप जरै अछि हमरा मोन मे
टीसक टकुआ भेंसा रहल अछि छाती मे
रस्ता ताकी इच्छाक अकाबोन मे

रमेशजी गजल केँ ओ अभिव्यक्ति देबामे प्रयत्नशील बुझाइत छथि जे आइ आजुक परिस्थिति केँ परिचय देबा मे सक्षम हो। समाजक अन्धविश्वास ओ अन्य विद्रूपता पर ई बहुत तीक्ष्णता ओ आक्रामक ढंग सँ प्रहार कयलनि अछि, एहन ठाम कएक बेर एहन भ' जाइत अछि जे गजल, गजल नहि रहि नारा भ' जाइत अछि। रमेशजी मे ई खूबी रहल अछि जे ओ एहि सँ बचलाह अछि। गजलक काव्यगत गुण केँ रखबा मे सफल रहला-हे आ यैह कारण अछि

जे रमेशजीक गजल मर्म केँ छुबैत आगू बढ़ैत अछि।

यथार्थ के सामने अनबा मे गजलकार मुँह नहि मोड़लनि अछि। ओ ओकरा प्रस्तुत करैत समाज केँ सचेत करैत छथि—

'स्वार्थ केर पोखरि मे स्वर्ण घाट लेल
पोखरि-पर-पोखरि बिखैल जा रहल
स्वर्णदीप केर दीर्घ आयु लेल आइ
माटिक दिवारी मिझैल जा रहल

मैथिली मे गजल लिखा रहल अछि। ओकरा मैथिलीक शब्द सँ ओङारब आवश्यक। तखनहि ओ मैथिलीक सशक्त विधा भ' सकत। एहि दिस रमेशजी ध्यान देलनि अछि जे मैथिली गजलक विकासक हेतु शुभ अछि। हुनक शब्द-चयन अह्लादित करैत अछि।

गजलक अपन अनुशासन छैक, बंदिश आ सीमा छैक। ओकरा रखैत रमेशजी गजल कहबा मे सफल भेला-हे, जे हिनक विशेषता आ सफलता दुनू थिक।

कतौ-कतौ बिल्कुल सोझ ढंगे कहि देबाक कारणे गजल कमजोर सेहो भेल अछि, जकरा सपाट नहि त' गजलक विलक्षणता मे बाधक अवश्य कहल जायत। परन्तु जाहि तरहें ओ गजल कहबा मे लागल छथि, ओ निश्चित रूप सँ हुनक ओ गजलक भविष्यक हेतु सुखद अछि।

—शिवशंकर श्रीनिवास

लोहना, सरिसबपाही
मधुबनी

नागफेनी
मैथिली गजल-संकलन
रमेश
प्रथम संस्करण :

स्वत्वाधिकार : माला झा

दोसर संस्करण : 2019 ई.
प्रकाशक
नवारम्भ
मधुबनी : वार्ड न.-2,
निकट राम-जानकी मन्दिर, पिन-847211
Email : navarambhprakashan@gmail.com
पटना : 63, एम.आई.जी.
हनुमान नगर, पिन-800020
मो.- 9304349384

मुद्रक
आर.के. ऑफसेट प्रोसेस
नवीन शाहदरा, दिल्ली-32

समर्पण

गजल विरोधी आलोचकगण
आ गजलक जड़ शास्त्रीयताक
समर्थकगण कें,
शैल्पिक प्रगतिशीलताक
अपेक्षाक संग

—रमेश

प्रकाशकीय

श्री रमेश मैथिलीक प्रखर रचनाकार छथि।

कविता, गजल आ कथाक संग एक नव तेवर मे उपस्थित भेल एहि रचनाकारक दू टा कृति एक संग प्रकाशित करब हमरा लेल परम हर्षक-विषय थिक।

हिनकर गजल-कृति (नागफेनी) आ काव्य-कृति (सङोर)क मैथिली साहित्य-जगत मे व्यापक स्वागत हैत, से विश्वास अछि।

दुनू पोथी मे रहि गेल कोनो त्रुटिक हेतु क्षमाप्रार्थी छी। त्रुटिक निराकरण आब श्री रमेशक अग्रिम पोथी (कथा-संग्रह) टा मे संभव।

शुभाशंसा

श्री रमेश मैथिलीक नव हस्ताक्षर सभ मे बहुत आश्वस्त करैत छथि। समाजमे भेद-भाव, शोषण आ अन्याय केँ चिन्हबाक, ओकर जड़ि तकबाक आ ओहि समस्त बातकेँ अपन कथा, कविता आ गजलमे कहबाक सामर्थ्य ओ विकसित कयलनि अछि। ओ एक संभावना-पूर्ण हस्ताक्षर छथि, जाहिसँ साहित्यकेँ पैघ आशा अछि।

—जीवकांत
ड्यौढ़, घोघरडीहा
(मधुबनी)

पूर्व-कथ्य

गजलक ई कृति ओहि समालोचक लोकनिकेँ समर्पित छनि, जनिका लोकनिक घोंकचि जाइत छनि नाक, गजलक नामे सुनि।

गजलक स्थापना हेतु ओकरा पक्ष मे तर्क केँ ओतबे मथल गेल जतबा ओकरा विपक्ष मे कुतर्क केँ। तेँ आब हम कए टा तथ्य केँ नहि दोहराबय-तेहराबय चाहैत छी जे गजल आब ओ नहि अछि जे अपन शास्त्रीय रूप मे छल, एकरा मे नवकवितावला क्लिष्टता, दुरुहता आ अ-संप्रेषणीयता आदि नकारात्मकता नहि छैक, एकरा मे भाव आ अभिव्यक्ति दुनू आसान आ सकारात्मक छैक, आधुनिकताक कोनो कमी नहि छैक, ई आब माशूकाक आँचर नहि अछि, आ ने शाकी, शराब, जाम आदिक बन्धन मे जकड़ल अछि। ई नवकविता आ पुरान कविताक बीचक रस्ता थीक। एकरा गेयधर्मिताक पैमाना पर नापब पुरान कट्टरता थीक। एकर शास्त्रीय चरित्र केँ दतिया क' एकर आलोचना करब मात्र 'गेंग रोपब' थीक। दुष्यंत कुमार, फैज सँ ल' क' अदम गोंडवी धरि जे एकर नव कलेवर तरासलनि, तकरा नहि स्वीकार करबाक आब कोनो टा आधारे नहि छैक, आदि आदि...

आइ मोन पड़ैत छथि मैथिलीक गजलकार लोकनि जे कतबा विरोध सहियो क' कलम नहि रखलनि। कविवर जीवन झा, प्रवासीजी, बुद्धिनाथ मिश्र, सरसजी, कलानन्द भट्ट, डॉ. महेन्द्र, तारानन्द वियोगी, विभूति आनन्द, नरेन्द्र, रवीन्द्र नाथ ठाकुर, सोमदेव, देव शंकर नीन आ अन्य अनेकानेक सहकर्मी जे गजलकेँ अपन प्रतिभा द' रहल छथि, साधुवादक पात्र छथि।

मुदा शास्त्रीयता सँ दूर भैयो क' आन्तरिक गजलत्व सामान्यतः गजल मे कायम रहय, से प्रायः जरूरी छैक। फैशन पर 'उकडू गजल' लीखि गजलक इतिहास मे नाम घोंसियायब, किछु तुकबन्दी मिला क' लीखि लेब, गजलक संग अ-चेतन मे कयल गेल बलात्कार थीक। एहेन लोक ओना सभ विधा मे थोड़ेक दिन कुथैत छथि आ पुनः अपने-आप साहित्य सँ पोछा जाइत छथि। तेँ तेहेन गजलकारक कोनो तेहेन चिन्ता आलोचक नहि करथि।

गजल मे निहित ओकर सामाजिक आ राजनैतिक सौन्दर्य-बोध केँ चीन्हब आवश्यक छैक।

एखन धरि आलोचकगण गजल दिस उपेक्षित नजरि फेकैत रहलाह अछि। एहनासन स्थिति मे भाइ शिवशंकर श्रीनिवास द्वारा हमर गजल-संकलनक आमुख लिखब हुनक साहस, संघर्षपूर्ण तेवर आ हमरा प्रति असीम मैत्री-स्नेहक अभिव्यक्ति थीक, जाहि लेल धन्यवादक औपचारिकता बहुत थोड़ होयत।

श्री विलमेश कुमार झाक सहयोगक बिना ई पोथी जन्म नहि लितय। हुनका संगहि बिहार प्रशासनिक सेवाक अन्य उप-समाहर्त्तागण यथा श्री मनोज कुमार झा, श्री रंगनाथ दिवाकर आदिक अभिप्रेरणाक बिना ई पोथी प्रकाश मे नहि अबितय। तेँ उप-समाहर्त्ता श्री बिमलेश कुमार झा केँ मात्र धन्यवाद द' औपचारिकता पूर करब हुनक स्नेहपूर्ण सहयोगक अपमान होयत।

हम अपन गजल-लेखनक प्रेरणा-स्रोत अपना समयक गजलमय परिवेश केँ मानैत छी।

आइ भाइ शिवशंकर श्रीनिवासक, गजल-संकलन प्रकाशन हेतु खोंचारनि-पर-खोंचारनि मोन पड़ैत अछि। गजलक स्रोतागण खास क' माला (पत्नी) मोन पड़ैत छथि, आ कवि-सम्मेलनक गजलक स्रोतागण मोन-पड़ैत छथि।

ई पोथी काल्पनिक गर्भपात बनि क' रहि जाइत, जँ अग्रज-तुल्य डॉ. उमाकान्त झा (मैथिली विभाग, म.ल.सि. महा. दरभंगा) आ सहधर्मी श्री चन्द्रेशजीक प्रेस सम्बन्धी अथक परिश्रमक आधार एकरा नहि भेटैत। उमा बाबूक सहयोग, आ सुझाव चिरस्मरणीय रहत।

कुमार प्रिंटिंग प्रेस, दरभंगाक प्रोपरइटर आ अन्य प्रेसकर्मी लोकनिकेँ धन्यवाद देबाक लेल शब्द नहि अछि। मात्र भावनाकेँ बूझल जा सकैछ।

शेष जे कहबाक, गजल मे कहि चुकल छी। आब पाठके कहथि।

अन्ततः मुद्रणजन्य त्रुटिक लेल क्षमायाचने टा भ' सकैछ।

—रमेश